आनन्द-जीवन

प्रकाशक व लेखक

कुछ संग्रहकर्त्ता

श्री स्वामी जगदीशानन्द सरस्वती

गंगामहल मठ, मुंशी घाट,

काशी।

प्रथमवार १०००] दीपावली ३० [सं० २००७ वि०

दोहा---श्री गणेश जी---और वेद व्यास जी--

मिले अन्त में तो वही-लम्बोदर-गुण-खान-

उनकी मति लेखनी, दोनों एक समान।

व्यास ने कहा है वाणी पति, यह भार, तुम्हीं स्वीकार करो।

गणपति बोले तत्पर हूं पर, कुछ कहना अंगीकार करो।

जिस समय लेखनी लिखने को मेरे कर द्वारा उठ जावेगी।

फिर कहीं बीच में क्षण भर भी नहीं ठहरने पावेगी।

अथ प्रथम भाग

आनन्द जीवन

प्रथम भाग
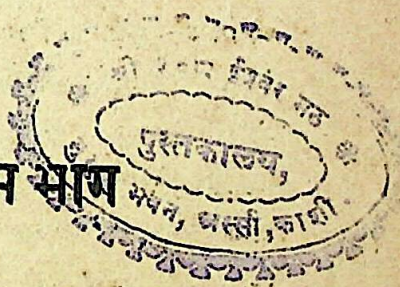
संग्रहित

श्री विशुद्धानन्द जी का ध्यान रख ब्रह्माण्ड में।
सब देव काहूँ कर रहा यशगान प्रस्तुत खण्ड में॥

श्री जगदीशानन्द

श्री भूमिका।

श्री गणाधि पतिं नत्वा देवीं गिरमतःपरम्।
श्री पति सृष्टि कर्तार माशु तोषन्तथैव च॥
विशुद्धानन्द लाभाय विशुद्धानन्द कीर्तनम्।
शुभं सुखकरं नृणां व्यवहार प्रदायकम्।
द्वारञ्च मुक्ति गेहस्य शोक सन्दोह वारकम्॥
धाम चास्तिक भावस्य विदधामि यथा मति।
नंद जात शिवादीनां देवानां स्तुतयः पुरा॥
दोहा भजन रूपेण भाषायाञ्च ततः परम्।
विशेषेणोपदेशानां कूटानि लिखितान्यथ॥
जगद्धिताय सस्नेहं मयाऽस्मिन् लघुपुस्तके।
यद्यनेन भविष्यन्ति सन्तुष्टाः कृतिनो जनाः॥
तेन मे सफलो यत्नः सिद्ध एव न संशयः।

१—श्री ११०८ स्वामी विशुद्धानन्दजी सरस्वती
२—श्री १०८ स्वामी गोपालानन्दजी सरस्वती
३—श्री १०८ स्वामी शिवरामानंदजी सरस्वती
४—श्री परम गुरु १०८ स्वामी महादेवानन्दजी सरस्वती
५—श्री गुरु १०८ स्वामी गोकुलानन्दजी सरस्वती

प्रकाशक :—

समर्पणम्

श्री १०८ स्वामी जगदीशानन्दजी सरस्वती

मेरा मुझको कुछ नहि, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लगता है मोर॥

समर्पण

जगदीशानन्द सरस्वती

सानन्दमानन्दवनेवसन्तं, आनन्दकन्दहतपापवृन्दम्।
बाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथशरणं प्रपद्ये॥
यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे।

श्री १०८ स्वामी जगदीशानन्द सरस्वती

जन्मस्थान—बुधौली, परगना व तहसील भोगनीपुर

कानपुर

॥ॐ॥

श्रीगणेशाय नमः

॥ श्री परमात्मने नमः ॥
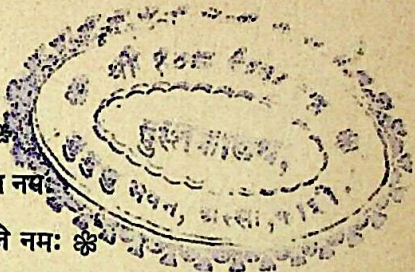
[ग]जाननं भूत गणाधिसेवितं कपित्थजम्बू फलचारु भक्षणम् ।
[उ]मासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजम् ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवेनमः ॥
अज्ञान मूल हरणं जन्मकर्मनिवारणम् ।
ज्ञान वैराग्यसिद्ध्यर्थं गुरुपादोदकं पिबेत् ॥
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम् ।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपाः ॥
वंदौ गुरु गोविंद पद, अरविन्द आनन्दमय ।
जहाँ नाद औ बिन्द, रुपरसिक गुञ्जत अभय ॥
जो सद् गुरु बानी बिना वक्ता चारो बेद ।
शिष्य सुनत जो श्रवणबिन, बन्दौ उभय अभेद
नित्यं शुद्धं निराभासं, निराकारं निरञ्जनम् ।
नित्यबोधं चिदानन्दम् गुरुब्रह्म नमाम्यहम् ॥
ॐ कार है, बेद का मूला ।
जिसके अन्दर सब जग भूला ।

ज्ञान भंडार

प्रभु की आज्ञा का फल

ब्यापक एक ब्रह्म अविनासी। सत चेतन घन आनँदरासी ॥
अगुण अदंभ गिरा गोतीता। समदरशी अनवद्य अजीता ॥
निर्मम निराकार निर्मोहा। नित्य निरँजन सुख सन्दोहा ॥
प्रभु सर्वज्ञ ब्रह्म अविनासी। सदा एक रस सहज उदासी ॥
बिनुपद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बाणी बक्ता बड़ योगी ॥
तनु बिनु परस नयन बिनु देखा। गहै घ्राण बिनु बास अशेषा ॥
देश काल दिशि बिदिश हुँमाहीं। कह हुसो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥
जाना चहहि गूढ़ गति जेऊँ। नाम जीह जपि जान हितेऊँ ॥
सब कर फल हरि भक्त सुहाई। सो बिनु सन्तन काहू पाई ॥
अस बिचार जो करु सत्संगा। राम भक्ति तेहि सुलभ बिहंगा ॥

ब्रह्म पयोनिधि मंदर, ज्ञान संत सुर आहि।
कथा सुधा मथि काढ़ही, भक्ति मधुरता जाहि ॥
बिरति चर्म असि ज्ञान मद, लोभ माहि रिपुमारि।
जय पाई सो हरि भगति, देख खगेश बिचारि ॥

जाते बेगि द्रवौं मैं भाई। सो मम भक्ति भक्त सुखदाई ॥
जिमिथल बिनुजल रहिन सकाई। कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई। रहिन सकै हरि भक्ति बिहाई ॥
गरल सुधा सम अरि हित होई। तेहि मणि बिनु सुख पावन कोई ॥
व्यापहि मान सरोगन भारी। जेहि के वश सब जीव दुखारी ॥
राम भक्ति मणि उर बस जाके। दुख लव लेश न स्वप्नेहु ताके ॥
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं। जे मणि लागि सुयत्न कराहीं ॥
परम प्रकाश रूप दिन राती। नहिं कछु चाहय दिया घृत बाती ॥
मोह दरिद्र निकट नहि आवा। लोभ बात नहि ताही बुझावा ॥
फूलहि नभ बरु बहु बिधि फूला। जीवन लह सुख हरि प्रतिकूला ॥

तृषा जाइ बरु मृग जल पाना। बरू जामहि शश शीश वृषाना॥
अन्धकार बरु रविहिं न शावै। राम बिमुख सुख जीव न पावै॥
हिमते अनल प्रगट बरु होई। विमुख राम सुख पावन कोई॥
नाम जेहि जपि जागहि योगी। बिरति बिरंचि प्रपंच वियोगी॥
ब्रह्म सुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम निरूपा॥
साधक नाम जपहि लय लाये। होंहि सिद्धि अणि मादिक पाये॥
जपहि नाम जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होंहिं सुखारी॥
राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा॥
आदि अन्त कोउ जा सुन पावा। मति अनुमान निगम अस गावा॥

बारि मथे बरु होई घृत, सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धांत अपेल॥

सोई सर्वज्ञ गुणी सोई ज्ञाता। सोई महि मंडन पंडित दाता॥
धर्म परायण सोई कुल त्राता। राम चरण जाकर मन राता॥

दोहा

हरि दाया से गुरु मिलत, गुरु दाया से ज्ञान,
ज्ञान ध्यान के योग से, देखि परत भगवान।

श्लोक

यस्य स्मरणमात्रेण, मूर्खो भवति पण्डितः।
तं वन्दे परमात्मानं, बालधी वृद्धि सिद्धये॥
गुरु प्रज्ञाप्रसादेन, मूर्खो वा यदि पण्डितः।
यस्तु संबुध्यते तत्त्वं, विरक्तो भवसागरात्॥

चौपाई

गुरु बिनु चहु बिरंचि हरिहर,

विद्यातीर्थो, विबुध मनुजाः साधवः सत्य तीर्थे
गंगातीर्थे मलितमनसो ज्ञानिनो ज्ञान तीर्थे।

लज्जातीर्थेकुल युवतयो, दान तीर्थं धनाढ्याः
धरा तीर्थं धर्मिश्च मतयः पातकं चालयंति ॥

श्री १०८ गुरु महाराज ने मुझको भली भाँति समझा कर निश्चय कराया कि यह संसार माया-नाटक स्वप्नके समान मन की भावना-मात्र है। श्री गुरु महाराज के बचन सत्य हैं, मान कर अपने तन, मन और वचन के किये कर्मों को मन की खिलवाड़ मानता है

सवैया

ध्यान भलो गुरु देवकि मूरति, पूजन पूंज गुरुजीके चरणा
मंत्र मनोहर बोल गुरुजीके मोक्ष को देत गुरु तुम हरणा।
त्यागि सबै हठ बाद बिबाद को, आई बसो तुम श्री गुरु चरणा
है यह एक उपाय भलो, मन चाहत जो भवसागर तरणा ॥
गुरुदत्तकि मूरति दृष्टि परी तब सों मन बीच बसी यह है
प्रभु एक अनेकन नाम खरे धरणीधर केशौं हरिहर है।
चहु मूँढ़ गँवार हजार कहैं, गुण आगर नागर क्या डर है
बृजराज किशोर की श्यामल मूरति, व्यापक एक बसी उर है।
धर्म भये धरणी धर के हरि शेष खगेश महेश कहावत
गावत हैं गुणवेद पुरान कुरान इजुलहि पार न पावत।
नाम अनन्त अरूप हैं मूरति व्यापक ब्रह्म सबै समुझावत
श्री गुरुदेव दया करि कै तेहि की छबि को मन में दरसावत ॥

दोहा

दोहा उलटे सोरठा, सोरठ दोहा होय।
हंसः सोऽहं शब्द को, समुझे बिरला कोय ॥
अजब अगोचर अगम अज, अलख निरंजन नाम।
अन्तर्यामी एक हैं, हंसः सोऽहं श्याम ॥
मन महेश मन में बसे, मन की यह खेलवार।
सत्य सनातन ब्रह्म है, माया मय संसार ॥

अपने अपने इष्ट के गुण गाओ सब लोग।
इष्ट बिना नरपशु सरिसु वृथा ज्ञान जप योग॥
वृथा ज्ञान जप योग, रोग सम धन सुखदाई।
यम के दूत कराल सुता, सुत बधू लुगाई॥
उपमा यह संसार में खोजे नहीं लखाने।
तन धन कुल परिवार, साथ नहि जैहैं अपने॥

कवित्त

चाहो मति जग में सुख दीजै दान दीनन को
स्वर्ग मोच्छ चाहो पूजा कीजिये महेश की,
साधू बना चाहो तुम सद्‌गुरु की सेवा करो
दास बना चाहो करो चाकरी धनेश की।
सन्त बना चाहो धुनि सुनि के विचार करो
सिद्ध बना चाहो भय त्यागिये कलेश की,
नीति धर्म जानो अरु कुरान इंजिल पढ़ो
ईस गुण गाओ जो भलाई चाहो देश की॥

श्लोकौ

शोकारातिभयत्राणं प्रीति विश्वास भाजनम्।
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्र मित्यक्षरद्वयम्॥
मित्रद्रोही कृतघ्नश्च ये च विश्वासघातकाः।
त्रयस्ते नरकं यान्ति यावच्चंद्र दिवाकरौ॥

वार्ता–शोक से, दुःख से और शत्रु आदि के भय से बचाने वाला प्रेम तथा विश्वास का पात्र, ऐसे गुणों के भंडार, मित्र इस दो अक्षर के रत्न को किसने बनाया है। जो मित्रों से बैर करता और जो उपकारी के उपकार को नहीं मानता और जो विश्वासघाती है, ये तीनों मरने के बाद नरक को अवश्य जाते हैं और जब तक चन्द्रमा और सूर्य रहेंगे तब तक ये तीनों नरक में रहेंगे।

दोहा

चाहत धन ते अधम है, मध्यम धन अरु मान।
उत्तम कछु चाहत नहीं, करत ईस गुणगान॥
हरि दाया ते गुरु मिलत, गुरु दाया ते ज्ञान।
ज्ञान ध्यान के योग से, जान परै भगवान॥
कहि कहि कहि लिखि धरि गये, जे समुझै कछु सार।
लेखक बनि हमहूँ लिखत, झूठा जग व्यवहार॥
शुचि श्रोता दुर्लभ भये, बक्ता बने अनेक।
घर घर यो घूमत भये, ज्यों वर्षा ऋतु भेक॥
बक्ता वाणी सुरसरी, श्रोता सुमति समुद्र।
वंचक बक समुझत नहीं, भाग्यहीन मति क्षुद्र॥
सत्य बचन सो कटुक अति, झूठ पापकर मूल।
विद्या की विनती सुनो, क्षमा करो सब भूल॥

धनी पुरुषों के नाम

दाता, दानी, दयावान, अन्नदाता, धर्मावतार, महाराज, राज बाबू आदि।

धनहीन के नाम

नंगा, लुच्चा, बेईमान, चोर, बदमाश, धूर्त, जुआरी, शराब वंचक आदि।

श्लोक—भवंति नरकाः पापात् पापं दारिद्रय संभवम्।
दारिद्र्यं प्रदानेन, तस्माद्दान परोभव॥

वार्ता—पाप से नरक होता है और दरिद्रता से पाप होते हैं दरिद्रता दान के न देने से होती है। इसीलिये दान देने में तत्पर रहो

श्लोक

वैराग्यं बहु सौख्यकारिपुरुषाः त्रासो न पृथ्वीपतेः
निःशंकं शयनं निशासुगमनं कान्तार दुर्गेषु च ॥
चौरेभ्यो न भयं न दंडति नो दोषद्वयं वर्तते
आयातः सुजनः स याति विमुखः सर्वत्र मन्दादरः ॥

वार्ता—मनुष्यों के लिये वैराग्य बहुत सुखदायक है। जिससे राजा का भी भय नहीं है। भय रहित सोना, रात्रि को वन पहाड़ों के कठिन रास्ता में चोरों से भय रहित विचरना। यति आदि धर्म-प्रचारक भी त्यागी को नहीं सताते। परन्तु वैराग्य म दो दोष है एक तो जो सज्जन किसी प्रयोजन के लिये आता वह विमुख जाता है और दूसरे भिक्षुक का यथायोग्य आदर नहीं होता। इस वास्ते मैं कहता हूँ कि खेती आदि किसी रोजगार से पेट भरना परन्तु भिक्षा और दान को महा पाप मान कर दान नहीं लेना यह बात बाबा वन के बेटा से कहता हूँ।

विष्णुस्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ॥
लक्ष्मीकान्त कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् ॥१॥
आदौ राम तपोवनादिगमनं हत्वामृगङ्काचनं
वैदेहाहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ॥
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननंमेतद्धिरामायणम् ॥२॥
आदौदेवकी देव गर्भजनन गोपी गृहेवर्द्धनं
मायापूतनजीव तापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् ॥

कंसच्छेदन कौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनं
एतच्छ्रीमद्भागवतंपुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥३॥
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्तिदिव्यैस्तवै
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसाः पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुराः सुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥४॥
आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनं।
द्यूतस्त्रीहरणं वने विचरणं मत्स्याक्षिकंवेधनम् ॥
लीला गोहरणं रणे विचरणं सन्ध्याक्रियावर्धनम् ।
पश्चाद्भीष्मसुयोधनादिहननं मेतन्महाभारतम् ॥५॥

श्रियः पतिर्यज्ञपतिः प्रजापति--
धियां पतिर्लोकपति धरापतिः ।
पतिर्गतिश्चान्धक वृष्णिसात्वतां
प्रसीदतां मे भगवान् सतां पतिः ॥६॥

मत्स्याश्वकच्छप नृसिंहवराह हंस--
राजन्यविप्रबुद्धबुकृतावतारः ॥
त्वं पासि नस्त्रि भुवनश्च यथाधुनेष !
भारंभुवोहर यदूत्तम वन्दनं ते ॥७॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितञ्च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यामृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नः ॥८॥
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषायशाश्वते सहस्रकोटियुगधारणेनमः ॥ ९ ॥
नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥१०॥

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ॥११॥

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप सम्भवः ।
त्राहि मां ! पुण्डरीकाक्ष सर्वपाप हरो भव ॥१२॥

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च ।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमोनमः ॥१३॥

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिव विरंचिनु तं शरण्यम् ॥
भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१४॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज सुरेप्सित राज्यलक्ष्मी
धर्मिष्ठ आर्यवचसा पदगादरण्यम् ॥
मायामृग दयितयेप्सितमन्वधावन्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१६॥

अपराध सहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरेकृपयाकेवलमात्मसात्कुरु ॥१७॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं जेन चराचरम् ।
तत्पदम् दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

॥ श्री गणेश वन्दना ॥

लम्बोदरं परम सुन्दरमेक दन्तं,
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ।
उद्यद्दिवाकर निभोज्ज्वल कान्तिकान्तं,
विघ्नेश्वरं सकल विघ्न हरं नमामि ॥

॥ मंगला चरण ॥

श्री गणेश इह विश्रुत नामा । राम नाम महिमाञ्चित धामा ॥
भक्तचित्त वांछित कृत पूर्तिः । मंगलाय तव मंगल मूर्तिः ॥१॥
सजयति सिन्दुर बदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम् ।
वासरमणिरिवतमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥२॥
सर्वं स्थूल तनुं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्पन्दन्मद गन्ध लुब्ध मधुप व्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघात विदारितारि रुचिरैः सिन्दूर शोभाकरम् ।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदम् कर्मसु ।३॥
विघ्नध्वान्त निवारणैकतरणि विघ्नाटवीहव्यवाट्
विघ्न व्याल कुलाभिमान गरुड़ो विघ्नेभ पञ्चाननः ।
विघ्नो त्तुङ्ग गिरि प्रभेद नवनिर्विघ्नाम्बुधेवाड़वः
विघ्नौघौपवन पचण्ड पवनो विघ्नेश्वरः पातुनः ॥४॥
दधानंभृङ्गालीमनिशममले गण्ड युगले
दन्नसर्वार्थान्निज चरण सेवा सुकृतने ॥
दयाधारं सारं निखिलनिगमानामनु दिनम्
गजास्यं स्मेरास्यं तमिहकलये चित्त निलये ॥५॥
मुदाकरा त्तमोदकं सदा विमुक्ति साधकम्
कलाधरावतंसकं विलासि लोक रक्षकम् ॥
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम्
नता शुभा शुनाशकम् नमामितं विनायकं ॥६॥
भजामो गणेशंभजामो गणेशं जपामोगणेशं जपामो गणेशम् ।
स्मरामो गणेशं स्मरामो गणेशं नमामो गणेशं नमामो गणेशम् ॥७॥

मदन दहन के पुत्र को सुमिरौ बारम्बार ।
विघ्न मिटै संकट कटै मंगल होय अपार ॥८॥
लम्बोदर भुज चार हैं, नेत्र तीन रंग लाल ।
नाना वर्ण सुवेश हैं मुख प्रसन्न शशिभाल ॥९॥

विघ्न निवारण सब सुख कारण भक्त उधारण ज्ञान धनम् ।
दैत्य विदारण परशु धारण ऋधि सिधि कारण देव वरम् ॥१०॥
गिरजा माता षण्मुख भ्राता शंकर ताता सौख्य करम् ।
भूसुर रक्षक मोदक भक्षक ज्ञानी लक्षक कीर्तिकरम् ॥११॥
काटत बन्धन सब दुख खण्डन गिरजा नन्दन पाशधरम् ।
दुख निवारण मंगल कारण करिवर धारण शीतवरम् ॥१२॥
शुण्डा दण्डं तेज प्रचण्डं इन्दु खण्डं भालधरम् ।
मंगल कारण दुर्जन मारण विपतिविदारण ऋधि करम् ॥१३॥
करिवदन विमंडित ओज अखण्डित पूरण पण्डित ज्ञानपरम् ।
गिरि नन्दिनि नन्दन असुर निकन्दन सुरनर चन्दन कीर्तिकरम् ॥१४॥
भूषण मृग लक्षण वीर विचक्षण जन प्रणरक्षण पास धरम् ।
जय जय गणनायक खलगण घालकदास सहायक विघ्न हरन् ॥१५॥
मनाऊँ एक दन्त महा राज सुधारो सभी हमारा काज ।
रूप थारा कनक वरण राजे देख कर महा काल भाजे ॥१६॥
मूरति अति सुन्दर साजे, दुख सब दर्शन से भाजे ।
विनती सुन लीजो गणराज सुधारो सभी हमारा काज ॥१७॥

विघ्न हरण गणनाथ जी, कृपा करो महराज ।
मैं तुम्हारो अब लियो आसरो, रखियो मेरी लाज ॥१८॥

राम नगरिया राम की बसे गंग के तीर ।
अटल राज रघुराज का चौकी हनुमत वीर ॥

बारि बरों बरि बारिदों तापर बारि बयार ।
रघुवर पार लगाइये अपनी ओर निहार ॥

अर्थ न धर्म न काम रुचि गति न चहौं निर्वान ।
जन्म-जन्म रति राम पद यह वरदान बयान ॥

श्रीशाऽवतु !

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रम् ।
वामे हस्ते च दिव्याम्बर कनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्यम् ॥

सा वीणावादयन्ती स्वकर कर जपैः शास्त्र विज्ञान शब्दैः,
क्रीडन्ति दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना ॥ १ ॥

❀ श्रीकृष्ण स्तुति ❀

सजल जलजलीयं, दर्शितो दारु शीलम्,
करतल पद शैलं, वेणु वाद्य वसानम् ।
व्रजजन कुलपालं, कामिनी केलिलोलम्,
तरुण तुलसिमालं, नौमि गोपाल बालम् ॥२॥

येषां श्रीमद्यसोदा सुतपय कमले नास्ति भक्तिर्नराणाम्,
येषामाभीर कन्या प्रियगुण कथनैर्नानुरक्ता रसज्ञाः ।
येषां श्रीकृष्ण लीला ललित रसकथा सादरोनैव कर्णौ,
धिक्तान् धिक्तान् धिगेतान् कथयति सततंकीर्तनस्थोमृदङ्गः ॥

नूतन जलधर रुचये गापवधूटी दुकूल चौराय ।
तस्मै कृष्णाय नमः संसार महीरुहस्य वीजाय ॥
मूकं करोति वाचालं पंगुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ॥

कस्तूरी तिलकं-ललाट पटले वक्षस्थले कौस्तुभम्
नासाग्रे गजमौक्तिकं करतले वेणुकरे कङ्कणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली ।
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः ॥
फुल्लेन्दी वरकान्त भिन्दु वदनं वर्दावतंसं प्रियम् ।
श्रीवत्साङ्कमुदारि कौस्तुभ धनं पीताम्वर सुन्दरम् ॥
गोपीनाम अनूप राशित तनुं गोगोप संहावृत्तम् ।
गोविन्दं कल वेणु वादन वयंदिव्याङ्ग भूषंभजे ॥

वंशी विभूषित करान्नवनीरदाभात् पीताम्वरादरुण विम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादरविन्द नेत्रात् कृष्णात् परं किमपितत्त्वमहं न जाने ॥

कृष्णेनता कृष्ण मनुस्मरन्ति, रात्रौ च कृष्णः पुनरुत्थिताय ।
तेभिर्नदीहा प्रतिहन्ति कृष्णः हविंदधामंत्र हुतं हुताशीः ॥
एकोऽपिकृष्ण सकृतप्रणामो दशाश्वमेधः वमृतेन तुल्यः ।
दशाश्वमेधी पुनरेतिजन्म, कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥

वासुदेवं परित्यज्य, योऽन्यदेव मुपासते ।
तृषितो जह्नवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः ॥

॥ श्री विष्णु स्तुति ॥

स शंख चक्रं स किरीट कुण्डलं, स पीत वस्त्रं शिरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षस्थल कौस्तुभश्रियं, नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥

॥ श्रीरामस्तव ॥

रक्ताम्भोज दलाभिराम नयनं पीताम्बरालङ्कृतम् ।
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्न वदनं श्रीसीतया शोभितम् ॥
कारुण्यामृत सागरं प्रियगणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितम् ।
वन्दे विष्णु शिवादि सेव्य मनिशं भक्तेष्ट सिद्धिप्रदम् ॥
यन्माया वशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादि देवाः सुरा,
यत्सत्त्वादमृषैकभाति सकलं रज्जौयथाहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां,
वन्देऽहं तमशेष कारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥
प्रसन्नतां या न गताभिषेकस्तथा न मम्ले वनवास दुःखतः ।
मुखाम्बुज श्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु सामञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥
मूलं धर्मतरोर्विवेक जलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददम्,
वैराग्याम्बुज भास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम् ॥
मोहाम्भोधर पूगपाटनविधौ स्वः सम्भवं शङ्करम्,
वन्दे ब्रह्म कुलं कलङ्क शमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥
सान्द्रानन्द पयोद सौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरम्,
पाणौ बाण शरासन कटिलसत्तूणीर भारं वरम् ॥
राजीवायत लोचनं धृत जटाजूटेन संशोभितम्,
सीता लक्ष्मण संयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥
कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ,
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौहितौ,
सीतान्वेषण तत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥

ब्रह्माम्भोधि समुद्भव कलिमलप्रध्वसनं चाव्ययम् ।
श्रीमच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ॥
संसारामय भेषजं सुखकरं श्रीजानकी जीवनं ।
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥
शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाण शान्तिप्रदम् ।
ब्रह्मा शम्भु फणीन्द्र सेव्यमनिशं वेदान्त वेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यं हरिम् ।
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूणामणिम् ॥

न्याया स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये,
सत्यं वदामि च भवानखिलान्त रात्मा ।
भक्ति प्रयच्छ रघु पुंगव निर्भरां मे,
कामादि दोष रहितं कुरु मानसञ्च ॥

रामं कामारी सेव्यं भवभय हरणं काल मत्तेभ सिंहम्,
योगीन्द्रं ज्ञान गम्यं गुणनिधि मजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्म वृन्दैक देवम् ।
वन्दे कन्या वदातं सरसिज नयनं देव मुर्वीशरुपम् ॥
केकी कण्ठाभ नीलं सुरवर विलसद्विप्रपादाब्जचिह्नम् ।
शोभाढ्यं पीतवस्त्र सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ॥
पाणौ नाराच चाप कपिनिकर युतं बन्धुनासेव्यमानम् ।
नौमीशं जानकीशं रघुवर मनिशं पुष्पकारूढ रामम् ॥
कोशलेन्द्र पदकञ्ज मञ्जुलौ, कोमला वजमहेश वन्दितौ ।
जानकी कर सरोज लालितौ, चिन्तकस्य मन भृङ्ग सज्जिवौ ॥

शंकर स्तुति

कुन्द इन्दु दर गौर सुन्दरं, अम्बिका पति मभीष्ट सिद्धिदम् ।
कारुणीक कल कञ्जलोचनं नौमिशङ्कर मनंग मोचनम् ॥
शंखेन्द्वा भमतीव सुन्दर तनुं शार्दूल चर्माम्बरम् ।
काल व्याल कराल भूषण धरं गंगाशशांक प्रियम् ॥
काशीश कील कल्मषौघ शमनं कल्याण कल्पद्रुमम् ।
नौमीड्यं गिरजापतिं गुणनिधि कन्दर्पहं शङ्करम् ॥

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्ड कृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे ।

अथ लिङ्गाष्टकम् ।

ब्रह्म मुरारि सुरर्चित लिंगम्, निर्मल भाषित शोभित लिंगम् ।
जन्मज दुख विनाशक लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥
देवमुनि प्रवरर्चित लिंगम्, कामदह करुणाकर लिंगम् ।
रावण दर्प विनाशन लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥२॥
सर्व सुगन्धि सुलेपित लिंगम्, बुद्धि विवर्धन कारण लिंगम् ।
सिद्ध सुरासुर वन्दित लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥३॥
कनक महामणि भूषित लिंगम्, फणिपति वेष्ठित शोभित लिंगम् ।
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥४॥
कुंकुम चन्दन लेपित लिंगम्, पंकजहार सुशोभित लिंगम् ।
संचित पाप विनाशन लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥५॥
देव गणार्चित सेवित लिंगम्, भावैर्भक्तिभिर्वित लिंगम् ।
दिन कर कोटि प्रभाकर लिंगम्, तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥६॥
अष्ट दलः परिवेष्ठित लिंगम्, सर्व समुद्भव कारण लिंगम् ।
अष्ट दरिद्र विनाशन लिंगम् तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥७॥
सुर गुरु सुरवर पूजित लिंगम्, सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगम् ।
परात्पर परमात्मक लिंगम्, तत्प्रणमामि सदा शिव लिंगम् ॥८॥
लिंगाष्टमिदं पुण्य, यः पठेच्छिव सन्निधौ ।
शिवलोक मवाप्नोति, शिवेन सह मोदते ॥

॥ हस्तामलक श्लोक ॥

नाहं मनुष्यो न च देव यक्षो, न ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रः ।
न ब्रह्मचारी न गृही वनस्थो, भिक्षुर्न चाहं निज वोध रूपः ॥
मनो बुद्धिरहङ्कार चित्तानि नाहं, न च श्रोत्रे जिह्वे, न च प्राण नेत्रे ।
न व्योम रूपी न तेजो न वायु श्चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥
अहं प्राणी वर्गों न पञ्चा निलामे, न तोयं न च धातवः पञ्चकोशाः ।
न वाक्यानि पादौ न चोपस्थयाम चिदानन्दन रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम ॥

नमें द्वेष रागो नमे लोभमोहौ मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष श्चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखम् न मन्त्रो न तीर्थो न वेदो न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता श्चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥
न मे मृत्यु शंका नमे जाति भेदाः पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न वन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥
अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणि।
सदा में समत्वं न मुक्ति न बन्धः चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥

शिव स्तुतिः

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागायमहेश्वराय,
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।
मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथ नाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहु पुष्प सुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवायः ॥
शिवाय गौरी बदनाब्ज वृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय
श्री नील कण्ठाय वृषभध्वजाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥
वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमाय, मुनीन्द्र देवार्चित शंकराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय, तस्मै व काराय नमः शिवाय ॥
यक्षस्व रूपाय जटा धराय, पिनाक हस्ताय सनात नाय।
दिव्यायदेवाय दिगम्बराय, तस्मै य काराय नमः शिवाय ॥

❀ राम मंत्र ❀

राम रामेति रामेति रमें रामे मनोरमे।
सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥

दोहा—सुर समूह विनती करि, पहुँचे निज निज धाम।
जन निवास प्रभु प्रगटे, अखिल लोक विश्राम ॥

* छन्द *

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला, कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी, अद्भुत रूप निहारी ॥

लोचन अभिरामं तनु घनश्यामं निज आयुध भुजचारी।
भूषन बन माला नयन विशाला, शोभा सिन्धु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी, केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना, वेद पुराण भनन्ता॥
करुणा सुख सागर सब गुण आगर, जेहिं गावहिं श्रुतिसंता।
सो मम हित लागी जनु अनुरागी, प्रगट भये श्रीकंता॥
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया, रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुस्काना, चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई, जेहि प्रकार श्रुति प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा।
कीजे शिशु लीला अति प्रिय शीला, यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना, ह्वै बालक सुरभूपा।
यह चरित जो गावहि हरि पद पावहि, ते न परै भवकूपा॥

दोहा—विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुण गो पार॥
नील सरोरुह नील मणि, नील नील घनश्याम।
लाजहि तनु शोभा निरखि, कोटि कोटि शत काम॥

❁ श्लोक ❁

हेराम पुरषोत्तम नरहरे नारायण केशव।
गोविन्द गरुणध्वज गुणनिधे दामोदरो माधवः॥
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते।
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम्॥

❁ सायंकाल की वन्दना ❁

श्री रामचन्द्र कृपाल भजुमन हरण भव भयदारुणम्।
नव कञ्जलोचन कंजमुखकर कञ्ज पद कञ्जारुणम्॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनीलनीरद सुन्दरम् ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमी जनक सुतावरम् ॥
भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनन्दन आनन्द कन्द कोशलचन्द्र दशरथ नन्दनम् ॥
शिर कीट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
आजानु भुजशर चापधर संग्रामजित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कर कामादिखल दल गंजनम् ॥

॥ प्रार्थना श्री भगवान ॥

हे पतित पावन पूर्णमय अशरण शरण लक्ष्मीपते ।
दीन दुखहारी दयानिधि देव देव महामते ॥
भय हरण मंगल करण संकट निवारण आप हैं ।
विश्व के उत्पत्ति पालन प्रलय कारण आप हैं ॥
वेद भी महिमा तुम्हारी नाथ कह सकते नहीं ।
निज जनों की त्राण में तुम क्षण ठहर सकते नहीं ॥
फिर अहो किस दोष से हम पर दया करते नहीं ।
दीनबन्धो क्यों हमारी यातना हरते नहीं ॥
रक्षक तुम्हीं को छोड़ कर देखो हमारा कौन है ।
आप बिन जगदीश का जग में सहारा कौन है ॥
हम निराश बने हुए हमारे आपही आधार हैं ।
बन रहे सारे दुखों के आज हम आगार हैं ॥
देर करने से हमारी हानि होगी सर्वथा ।
दीनबन्धु दयाल क्या श्रुतियाँ तुम्हें भाती नहीं ॥
बस करो प्रभु बस करो देखो बहुत कुछ हो चुकी ।
यह हमारी बुद्धि भी तो पार पाती है नहीं ॥
हार मानी दास ने हाँ अन्त में जीते तुम्हीं ।
यह कठिन क्रीड़ा तुम्हारी अब मुझे भाती नहीं ॥
क्या दयामय दास की ... कभी ... नहीं

हे हरे यह यातना मुझसे सही जाती नहीं ॥
शरण देकर चरण में अब भय हरण रक्षा करो ।
बार बार सुयोग विधि की फिर कभी आती नहीं ॥
दयामय दास के जीवन की बारी है ।
कहो गति कौन सी प्रभुजी मुझे देवी विचारी है ॥
हमारे कर्म देखोगे ठिकाना तो कहाँ फिर है ।
अधम संतान भी अपनी कहो किसने बिसारी है ॥
यद्यपि हम है महादोषी दुराचारी पतित पापी ।
अहिल्या सी अधम नारी तुम्हीं ने नाथ तारी है ॥
सदाचारी महात्मा तो तुम्हीं से मुक्त होते हैं ।
हमी सम पाप मुक्तन से बढ़ो महिमा तुम्हारी है ।
सर्व-स्थूल तनुं गजेन्द्र-वदनं लम्बोदरं सुन्दरम् ।
प्रसपन्दन मद-गन्ध-लुब्ध-मधुप व्यालोल गण्डस्थलम् ॥
दन्ताघात विदारि तारि रुधिरैः सिन्दूर शोभा करम् ।
वन्दे शैल-सुता-सुतं गणपतिं सिद्धिः प्रदं कर्मसु ॥

श्री बद्रीनाथो जयति ॥

श्री पवन मन्द सुगंध शीतल हेम मंदिर शोभितं ।
श्रीनिकट गंगा वहति निर्मल श्रीबद्रिनाथ विश्वम्भरम् ॥१॥
शेष सुमिरन करत निशि दिन धरत ध्यान महेश्वरम् ।
वेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री ब० ॥ २ ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर धूप दीप प्रकाशितम् ।
सिद्ध मुनि जन करत जै जै श्र० ॥ ३ ॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गर्व विकाशितम् ।
श्रीलक्ष्मि कमला चँवर डोलै श्रीबद्री० ॥ ४ ॥
शक्ति गौरी गणेश शारद नारदादि मुनि उचरं ।
श्रीयोग्य ध्यान अपार लीला श्री ब० ॥ ५ ॥
कैलाश में एक देव निरंजन शैल शिखर महेश्वरं ।
श्री राजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्री ब० ॥ ६ ॥

श्री नाथ पंच सुरत्न जे नर पठति पाप विनाशनम्।
कोटि तीर्थ भवेत्पुण्यं प्राप्यते फल दायकम्॥ ७॥

श्री बद्रीनाथ भजन

श्री बद्रीनाथ जै जै श्री बद्री नाथजी योग ध्यान वाला।
नित्य भजो श्रीबद्रीनाथजी योग ध्यानी वाला॥
काम धेनु कल्पवृक्ष ठाढ़े नन्दलाला।
करुणा के सिन्धु प्रभु भक्तन के प्रति पाला॥ जै जै श्री०॥
ठंड तो विचित्र पड़े छांही मेघ माल।
पवन तौ झकझोर चले बर्फ का हिमाल॥जै जै श्री०॥
निकट अलक नन्दा नारद कुंडऋषि गंगा और कूर्म्मधारा।
तप्त कुण्ड नहाय प्रभु पाप कटै तत्काल॥ जै जै श्री०॥
शंख चक्र गदा पद्म किरीट मुकुट माल।
मेखली जड़ाव जड़े तिलक ललित भाल॥जै जै श्री०॥
श्री विशाल विशाल प्रभुपते दीन के दयाल।
जाके ब्रह्मा वेद पढ़े इन्द्र दी ववाला॥जै जै श्री०।
नित्य भजो श्री बद्रीनाथ योग ध्यानी वाला।
आदि बद्री ध्यान बद्री नृसिंह योग बद्री॥
भविष्य बद्री सुमिरत नित्यं महापातक नाशनमं।
श्री बदरीनाथजी विश्वम्भरम्॥

॥ अथ शिवाष्टक ॥

नमामीशमी शान निर्वाण रूपं।
विभुंव्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपं॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाशमाकाश वासं भजेहम्॥१॥
निराकार ओंकार मूलं तुरीयं।
गिरा ज्ञान गोतीत मीशं गिरीशं॥
करालं महाकाल कालं कृपालं।
गुणागार संसार सारं नतोऽहम्॥२॥

तुषाराद्रि शंकास गौरं गम्भीरं।
मनोभूति कोटि प्रभा श्रीशरीरं॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारु गंगा।
लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा॥३॥

चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं।
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं॥
मृगाधीश चरमाम्बरं मुण्ड मालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाशं भजामि॥४॥

प्रचंडं प्रकष्टं प्रगल्भं परेशम्।
अखंडं भजं भानु कोटि प्रकाशं॥
मयीशूल निर्मूलन शूल वाणिं।
भजेऽहं भवानीपतिं भाव गम्यम्॥५॥

कलातीत कल्याण कल्पांतकारी।
सदा सच्चिदानन्द दाता पुरारी॥
चिदानन्द सन्दोह मोह प्रहारी।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥६॥

न यावद् उमानाथ पादार विंदं।
भजंतीहलोके परे वा नराणां॥
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं॥
जरा जन्म दुःखौघतातप्यमानं।
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।८।

रुद्राष्टक मिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठतिनरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

चला लक्ष्मीः चला प्राणाः चला जीवित मन्दिरम्।
चला चलेव संसारः धर्म एकोहि निश्चलः॥

❀ दोहा ❀

सुनि बिनती सर्बग्य सिव देखि बिप्र अनुराग।
पुनि मंदिर नभबानी भई द्विज बर बर मागु॥
जौं प्रसन्न प्रभु मोपर नाथ दीन पर नेहु।
निजपद भगत देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु॥
तब माया बस जीव जड़ संतत फिरइ भुलान।
तेहिं पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपा सिंधु भगवान॥
शंकर दीन दयाल अब एहि पर होहु कृपाल।
साप अनुग्रह होइ जेहिं नाथ थोरहीं काल॥

❀ छन्द नाराच ❀

नमामि सिद्धि दायकं। मुनिज्ञ सत नायकं॥
वेद रूप आगरं। श्री ब्रह्म पुत्र नागरं॥
सर्वज्ञ नाथ ब्रह्ममय। नमो नमः कृपाल जय॥
जय ब्रह्म विष्णु शम्भुरूप। अग्नि सूर्य चन्द्र रूप॥
बैजनाथ वेद रूप। तारो भ्रम जाल कूप॥
नमामि मोह त्यागी। हरी रूप में अनुरागी॥
मोहिं दीन जानि के। दरश कियो आनि के॥
पाहि पाह नाथ मैं। सनाथ भयो देखिते॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

जय भवतारण असुर संहारण जयति चक्रधर स्वामी।
महि भार विभंजन सुर मुनि रंजन जयकृपाल अन्तर्यामी॥
जय गदा पदुम धर जिनहि नमत हर जासु चरण की गंगा।
प्रकट भई संसार में आई कीन्हेसि पाप सकल भंगा॥
जय दुष्ट निकंदन जप जग वंदन तुम भस्मासुर भस्म करी।
तुमही प्रभु प्रहलाद उबारेउ हरिणाकुश को उदर विदारेउ
हुई के नरसिंह रूप हरि॥

ते सब लायक सब सिद्धि दायक जिन कर मन रत पद कंजा ।
सुमिरे नाम हेत सब त्यागी धन्य धन्य ते नर बड़ भागी
जिन माया को तुल मंजा ॥
तुमही प्रभु मधुकैटभ मारे उतिहि के तन ते हि विस्तारेउ
मुर ताल को बल भंजा ।
मच्छ कच्छ नरसिंह रूप वावन परशुराम वपु ह्वै हरि सुर
सन्तन को दुख भंजा ॥
सकल चराचर रूप तुम्हारा तुमही प्रभु यह जग विस्तारा
कोई न पावे पारा ।
निगमागम निशि वासर गावै शेष शारदा शंकर ध्यावैं बीते
कल्प हजारा ॥
गुण औगाह थाह नहिं पावे अपनी मति भरि कहि कहि गावें
का कवि करे बखाना ।
जेहि पर नाथ दया करे हेरे उतेहि की मति मद मोह न
छोरेउ सो चरण मल पख्याना ॥
बार बार कर जोरि धर्म सुत सहित द्रौपदी औ अनुजन युत
अस्तुति करत सुजाना ।
मन वांछित फल सो दीन्हेउ मोहि जय कृपाल प्रभु मैं
पाचों तेहि यहि वर अनु माना ॥

❀ त्रिभङ्गी छन्द ❀

जय शिव शंकर भय हरण व्यापक रूप अनूपा ।
मणि त्रिशूल दरिद्र दवन प्रभु कृपा सिन्धु सुर भूपा ॥
सुर मुनि पालक खल कुल घालक जय कृपालु वृषकेतू ।
जय त्रिपुरारी प्रभु कामारी जासु नाम भवसेतू ॥
अंग विभूति अभूषण सो हैं, देखि रूप सुर नर मुनि मोहैं ।
कराल वेष गरल कृत भच्छन शीश जटा गंगा सोहैं ॥
हमहि कृतारथ करन हेत अब दर्शन देहु कृपाला ।
सबलसिंह पुनि पुनि नृप विनवै जय जय दीन दयाला ॥

❀ छन्द ❀

ननामी ईश ईश्वर सुपाहि मैं परमेश्वर।
नमामि आशुतोषनं समस्त लोक षोषनं ।।
अनेक रुप धारणं विभंज लोक कारणम्।
गिरिश रुप आगरं त्रिलोक मैं सुजागरं ।।
कपालमाल शोभितं पाहि शरण वैमितं।
नमामिगंगधारणं भवसिन्धुसुता तारणं ।।
व्यापक विभु प्रभो गुणाकंर कृपाल प्रभो ।।
दयाल दीननायकं सान्तसुखदायकं ।।
कराल काल भक्षकं स्वभक्त दीन रक्षकं ।।
हिमवन्तसुतानायकं सवसिद्धिदायकं ।।
निरंकार रूप नाथ अर्थ चार प्रभोहाथ ।।
शैलनाथ शिवनाथ नागेश्वर रामनाथ ।।
दरशदीन जानि दीन मैं तो सर्वज्ञ हीन ।।
बार बार हाथ जोरि राखो अभिलाषमं.रि ।।

।। कृष्ण के प्रति ।।

काह कहूँ छवि मोहन को मधुरी मुस्कान लगे मोहिं प्यारी
भाल तिलक गोरोचन शोभित पीली पीताम्बर पै बलिहारी ।।
कंठ सुमाल उरर त्रय रेखा नेतस्वच्छन्द बने अरुनारी।
बाजै पैजनिया पायन की बजनो घुघंरु रजनी उजियारी ।।

।। राम के प्रति ।।

रामाय राम भद्राय रामचंद्राय वेधसे।
रघुनाथायनाथाय सीतायाः पतयेनमः ।।

।। भजन ।।

जग असार में सार रसना हरि हरि बोल।
यह तन है झांझर नैया केवल है हरि नाम खेवैया ।।
हो जा भव से पार ।। रसना० ।।

अपने तनको बीन बनाले प्रेमस्वरोंका तार चढ़ाले ॥
राम नाम झनकार ॥ रसना० ॥
जीवन कर्ज लिया है तूने चुकत कुछ न किया है तूने ॥
ऋण का भार उतार ॥ रसना० ॥
अधिक नहीं कुछ कुछ करले तू विन्दु रस से घटभर ले तू ॥
धर ले धन भण्डार ॥ रसना० ॥

सोने की शरीर यामें लोहे की न लागी कील,
मोह की नदी में बैठे कब लग अठिलाओगे—
करह से छूट जात सदा नहीं पास रहत,
हाथ पैर झारके धनी के पास जाओगे—
ताते तात मनमें गोविन्द का भजन करहु,
आठौ याम बोते फिर पीछे पछताओगे—
जसके नगाड़े दरबार में धराहि लेव,
न लादे लिये आये हो न लादे लिये जाओगे—

प्रथम भाग समाप्त

—:❀):—

आनन्द जीवन

द्वितीय भाग

संग्रहित

हरि-भजन रस प्रेमियों के अनवरत अनुराग में।
देवताओं के भजन हैं कुछ दिये इस भाग में॥

अथ द्वितीय भाग

'श्री'

प्रथम कर्मों का कठिन विपाक गर्भ में माँ के ले आया।
कहूँ क्या जो कि वर्णनातीत कष्ट और दुःख वहाँ पाया॥
प्रज्वलित थी जठराग्नि प्रचण्ड न झुलसा वदन अचम्भा यही।
रुधिर ही था जीवन आधार न जाती हाय दुर्दशा कही॥
न सुधि बुधि दुःखादिक से रही तुम्हारा कैसे करता ध्यान।
क्षमा करना अपराधों को दयामय कालेश्वर भगवान॥ १॥
हुआ जब इससे बन्धन मुक्त कष्ट कर बाल्य काल आया।
गिराकर आसमान से ये खजूर हो जैसे लटकाया॥
नहीं परवशता संगिन हुई वही मल मूत्र हुये शृंगार।
पिपासा मात स्तन को रही न जाना और जगद् व्यवहार॥
हवा रोगों से यदि आक्रान्त प्रकट कर सका न कुछ भी ज्ञान।
क्षमा करना अपराध महान हमारे कालेश्वर भगवान॥ २॥
जवानी दीवानी आई चढ़ा विषय का विष भारी।
कामिनी नयन बाण वह लगा चौकड़ी भूल गई सारी॥
रहा इस चिन्ता में संलग्न मिले सम्पत्ति अटूट अपार।
पुत्र पौत्रादिक से भरपूर सदा सम्पन्न रहे परिवार॥
तुम्हारे चिन्तन से हो विमुख रहा जीवन पर अति अभिमान।
क्षमा करना अपराधों को दयामय कालेश्वर भगवान॥ ३॥
जरा अवस्था में कुछ होसके चपल मन ये है कोरी भ्रान्ति।
रहा जो विषयासक्त सदैव रही कब उसके दिल में शान्ति॥
इन्द्रियाँ शिथिल हुईं पर शिथिल न आशा हुई न तृष्णा हटी।
मोह सरिता की भीषण बाढ़ भयङ्कर हुई न कुछ भी घटी॥
स्वास्था का तार टूट कर नाथ कर रहा नीरस जीवन तान।
क्षमा करना अपराध महान् दयामय कालेश्वर भगवान्॥ ४॥
न उठकर भगवन् ब्राह्म मुहूर्त तुम्हारा किया कभी भी जाप।
मग्न निद्रा में रहा सदैव पुण्य के समय कमाया पाप॥
भूलकर कभी जाह्नवी तीर किया एकाग्र न जाकर चित्त।
समर्पित भक्तिभाव से किया आप के अर्थ न कुछ भी वित्त॥

न मन मन्दिर में भी गिरिजेश तुम्हारा किया कभी आह्वान।
क्षमा करना अपराधों को दयामय कालेश्वर भगवान्॥ ५॥
सुवासित चन्दन मृग मद से न प्रेम युक्त तुमको चर्चित्त किया।
पुष्प मालाओं का उपहार न भगवन कभी समर्पित किया॥
प्राप्त करने को निर्मल ज्योति न लाया दीपक कभी समक्ष।
छोड़कर आत्माभिनय ललाम प्रकृति दर्शन ही में हूँ दक्ष॥
दुग्ध दधि मध्वादिक संयुक्त कराया कभी न लिङ्ग स्नान।
क्षमा करना अपराधों को दयामय कालेश्वर भगवान्॥ ६॥
सत्त्व रज तम की लीला भूमि सृष्टि का तुमसे हुआ विकास।
तुम्ही पालक संहारक कौन तुम्हारा केवल भृकुटि विलास॥
सुरनर असुर वन्दना करें हरें प्रारब्ध जनित सबशूल।
क्षमा कर संचित कर्म समूह सुधारें वर्तमान की भूल॥
तुम्हारी अनु कम्पा से नाथ भक्त का सदा हुआ उत्थान।
क्षमा करना अपराधों को दयामय कालेश्वर भगवान्॥ ७॥
सहस्रों पापी हुये पुनीत तुम्हारा केवल लेकर नाम।
न हो आशा मेरी विपरीत भक्त भय हारी करुणा धाम॥
जगादो सारे प्रश्न सुषुप्त खोल दो आत्म महल का द्वार।
आत्म भव वारिधि से अखिलेश डूबती नौका कर दो पार॥
भक्त की आशा को पर्याप्त तुम्हारी मोद भरी मुस्कान।
क्षमा करना अपराधों को दयामय कालेश्वर भगवान्॥ ८॥

श्री उद्दालक ऋषिका

कथा सुने जे प्राणी जावे, माला जपै न जीभ चलावै।
सुने चरित तबमन को बारी, लाग जाय तब प्रेम की तारी॥
दरशैं तहं पर श्रीधनुधारी, वाम भाग श्री सीता प्यारी।
लक्ष्मी सहित विष्णु जग पालन, राधा सहित नन्दके लालन॥
शक्तिन सहित देव मुनि लखिये, यह अनुभवरस कथामें चखिये।
माला जपै कथा में जावे, ना जप होय न हरियश पावे॥
मन चञ्चल यह एकै भाई, दोनों ओर से देव भगाई।
याते नाम सिद्धि नहि होवे, कथा व जप दोनों खोवे॥

जप एकान्त में बैठकर करिये, मन एकाग्र हो प्रेम में परिये।
सन्मुख अद्भुत झांकी आवै, नाना विधि के खेल देखावे॥
तब जप सुफल होय यह भाई, कर्म लिखा विधिका मिटि जाई।
माला की सुधि रहे न तन को, जब स्थिर करली हो मनको॥
करमें है कि अवनि में कर है, जानि न पै हौ मन छवि को है।
अष्टोत्तरी जपमाल सुमिरनो। परमान कसुर मुनि सब बरनो।
सहस एक दुई का कहुँ भाई। सुर मुनि शास्त्र वेद नहीं गाई॥
मनमानी करते मन मुखिया। कैसे होंय भला वे सुखिया।
राम नाम अनमोल मनी को। खेल बनाय के भयोभ्रनो को॥
चरण पादुका जूता पहिने। तुलसी माल लिये कर दहिने।
पैरन चले जीव बहु मारें। तनिकौ मन में नही विचारें॥
घर में तूल के वसन न पायो। यहाँ रेशमी ऊनीचायो।
माला झोली गले में डारे। बाकिन में बनि घूमें प्यारे॥
बातें करे व माला फेरै। इधर उधर दोउ नैनन हेरै।
चकर मकर कै देखै भाई। बुद्धि बिगाड़ देई दुखदाई॥
यासे खुले न लोचन हीके। जग में भेद परै सिय पिय के।
नीक कहै तो लगै बिकारा। तन मन ते उठि गई विचारा॥
दर्पन में करिखा बहु लागा। हंस जो हते सो बनि गये कागा।
सत संगति में कबहुँ न जावे। विषय वासना में हरषावै॥
श्री महाराज कहै कोई आई। सुखी होय मानो निधि पाई।
श्री महाराज को चीन्हा नाहीं। झूठे मन ही मन हर्षाई॥
काम क्रोध मद लोभ मोह को। बनि गये चेला आये द्रोह को।
ऊपर ही तो ज्ञानी बनते। पैसा छूटत नहीं तन मन ते॥
पर दारन के मूत्र पात्र पर। मन रहता है हरदम तापर।
जस मोरी तुम्हरे ग्रह जानों। वैसी ही और न ग्रह मानो॥
इन्द्री नित्य कर्म हित भाई। नर नारी जब जीवन पाई।
नारि पुरुष को संगम भाई। एक मास में सुर मुनि गाई॥
अपनी नारि अपन ही पति हो। नहीं तो यमपुरी कुगति हो।
बने विरक्त आप ग्रह छोड़ा। सान विराग में सुख को मोड़ा॥

विषय वासना संग न छोड़ा। कैसे राम नाम धन जोड़ा॥
सुर मुनि थोड़े ऐसे भाई। जिन संग काम नहीं सुखदाई॥
भजन में कोई बिघ्न न आवे। सुमिरे राम नाम सुख पावे॥
नारिढाल अस पुरवा है जानो। रोके वार अस्त्र को मानो॥
काम कृशान बड़ा दुखदाई। बिरलै शूर कोई ठहराई॥
साधु के वेष बनायो आला। गले में कण्ठी चन्दन माला॥
कपट कतरनी उरमें सोहै। करत दीन शुभ वस्तुन को है॥
करि बारीक दीन अस तिनको। पुवा मुश्किल है अब तिनको॥
दीन भाव आये जुरी आवै। आप को मेटि सबै बिलगावै॥
झगड़ा करि जे ग्रह ते आवे। साधु बने सुख कबहूं न पावै॥
अपनी नारि त्याग जे चलते। ते फिर आये पाप पद करते॥
परदारा परसुत से नेहा। जे जन करै तो होवैं खेहा॥
तरुण अवस्था इन्द्रिन साधन। बिन गुरु होय नहीं आराधन॥
लड़कन ढिग सन्तनको आसन। सुर मुनि वेद न कीन्हा भाषण॥
छोट बनो सो बड़ो कहायौ। सुर मुनि वेदशास्त्र यश गायो॥
मनही मन हरि सुमिरन करिये। पन्थ चलत जप माल न करिये॥
यासं हरि खुश होय न भाई। जगत रिझाय नहीं भलाई॥
दम्भ कपट पाखण्ड को त्यागौ। निर्मल हौ हरि नाम में लागौ॥
नाम की जप कौ बुद्धि जानी। तिनको मिलेंगे शारंग पानी॥
धुनि खुली जाप नाम की सुन्दर। रे रकार जो होवै निरन्तर॥
सीताराम को हरदम चितयो। तन मन छबि सागर में भिजयो॥
हैं सब में अरु सबसे न्यारे। जानत है कोई जानन हारे॥
या मारग गुरु से ले साधौ। तनके चोर सबै कसि बाँधौ॥
सुरति शब्द यह मारग बताया। सुर मुनि सब जग हेतु चलाया॥
भोजन बसन अधिक नहिं होवै। सो समाधि में जाइके सोवे॥
याशे सुलभ मार्ग नहीं कोई। भाग्य होय बड़ पावैं सोई॥
एक बार भोजन को करिये। होई न आलस हरिहि सुमिरिये॥
काम क्रोध लालच में परिके। कैसे सेवक बनिहो हरि के॥
मान अपमान हर्ष अरु शोका। सुख दुख हानि लाभ, दुःख ओका॥

समय पाय के मुंदे उघरे। जब तक प्राण न तनते निकरे॥
जो कोई भजन को विधि को जानै। सोइ इनको सम करि पानै॥
अन्ध ज्ञान ते भाव नहीं तरिहौ। जाय नरक में कल्पन सरिहौ॥
आँख कान खुलै जब भाई। तब हरि के ढिग पहुँचे जाई॥
वही उपासक पक्का जानो। पायो नाम रूप मन मानो॥
राम रसिक ताको श्रुति भाखै। हरदम राम रूप रस चाखै॥

सो०—करि तन मन विश्वास वचन गहै सत गुरुन के।
सो हो जावे पार सर वरिहो सब गुरुन के॥
उद्दालक कहै बचन मम मानि जपो हरि नाम।
मुक्ति भक्ति जपतौ मिलै जाओ हरि के धाम॥

॥ नारद तुम्बुरु संवाद ॥

दुनियाँ मे यारो कौन बड़ा है लीजै जान॥ टेक॥
सुनो सज्जनों! गुरु शिष्य सम्बाद सुनाउँ क्या कहते।
कौन बड़ा है इस दुनियाँ में हैं वाद-विवाद यही करते॥
कहैं तुम्बुरु सुनो गुरुजी बड़ी धरणि जहँ सब रहते।
कोटि २ ब्रह्माण्ड जीव सभी विचरण करते॥
तब नारद बोले सुनो शिष्य यह धरणि सेष सिर पर धरते।
शेषको भूषण बनाके शिवजी इधर उधर फिरते रहते॥१॥
पृथ्वी से तो बड़े शेष हैं शेषसे है शिव भगवान।
शंकर भी गिरिजाके संगमें गिरि कैलाश सदा बसते॥
कैलासहुँ को उठा लिया है रावणने अपने बलसे।
इंद्र वरुण यमराज आदि भी डरते थे जिसके भयसे॥
रावणको भी बालि काख ६ निज कक्षरीमें रहा मलते।
सो बाली औ रावण को भी वध्यो राम तीक्ष्णसरसे।
कह्यो तुम्बुरु लिखो नाथ है सर्वोत्तम भी श्री भगवाग॥२॥
सबसे बड़े रामचन्द्रजी हैं जिनको संसारी भजते।
तब वीणापाणि यों बोले सुनो शिष्य नहिं राम बड़े॥

जिनके उरमें वास करे प्रभु जिन तोड़े अज्ञान छड़े ।
धरि राम उर संत बड़े भये बन्धन तोड़े कड़े कड़े ॥
नट की नाईं लखो रामको संत नचावहिं खड़े खड़े ।
नहीं प्रभु की वहीं कुछ चलती प्रेम तंतु में हैं जकड़े ॥
फिर भृकुटी महलमें बंद किये ऊपर से नेह कपाट जड़े ।
नारदके जब बचन सुने तब शिष्य के उपज्यो विरह महान॥३॥
प्रेम विरहकी अनल धधकती काम क्रोध, मद मोह जली ।
अंन्तः करण भयो तब निर्मल बैंकु द्वार की नैन खुली ॥
हाथ जोड़ तब कह्यो तुम्बुरु और प्रमाण कहौ असली ।
देवर्षि नारद तब बोले सुनो शिष्य यह बात भली ॥
श्रीकृष्णदेव ? अर्जुन संग लेकर जब भीषम को जाय छली ।
दृढ़ हो भीषमने प्रण कीन्हो तब नहीं कृष्ण की एक चली ॥
सुना विलक्षण काम कियो एक राम भक्त बजरंग बली ।
सेतुबांधि श्रीरघुपति उतरे कूद गये हनुमान बली ।
सुनि लीजै प्यारे संत बड़े कि भगवान ॥ ४ ॥
सतयुग श्रीनारद ने कुंजर को नृपति बनाया था ।
यह देख ही कुंभज ऋषिने बच्चों को तुरत बचाया था ॥
तीन विन्दुमें सिन्धु पान कर नाम अगस्त कहाया था ।
लोमश ऋषिने अपने आगे ब्रह्मा बीस बिताया था ॥
सभी ऋषि थे ब्रह्म के ज्ञाता तीन लोक जस छाया था ।
सब ऋषियों की प्रभुताई को चेतो जरा सुजान ॥ ५ ॥
सुनि लीजै श्रृंङ्गी ऋषि भये त्रेतामें दसरथ को जिन पुत्र दिये ।
वाल्मीकि पाराशर विश्वामित्र विलक्षण काम किये ॥
वाल्मीकि ने कुश पैदाकर सीता को ये दान दिये ।
देखो उनकी अद्भुत करनी रामादल सब जीत लिये ॥
पाराशरने कियो दिवस को रात अश श्रुति गान किये ।
विश्वा मित्रने अन्न उपजाओ अस स्मृति बखान किये ।
ब्रह्मा की भी असिट सृष्टि को मेटे [illegible] महान ॥ ६ ॥

सुनि लीजै दुर्वासाजी कुन्ती को दीन्हो मंत्र विचार।
तेहि प्रभावसे उपज पाण्डु सुत भारतमें पाई विजय अपार ।।
कलयुग में शंकराचार्यजी कियो सनातन धर्म प्रचार।
तुलसीदास रचि रामायण को हर लीन्हों पृथ्वी को भार ।।
जिसको पढ़कर पापी जन भी होते भव सागर से पार।
और विलक्षण काम कियो इक कन्या से कीन्हों सुकुमार।
भई अनन्त कृपा सद्गुरु की भाष्यो यह व्याख्यान ।। ७ ।।
प्रबल प्रेम के पाले पड़कर जग पालन की नाहिं चली।
अपना मान टले टल जाये जगकी टाले नाहिं टली ।।
सुनो विलक्षण काम कियो एक राम भक्त बजरंग बली।
सेतु बांधि श्रीरघुपति उतरे लाँघि वीर लंकिनी दली ।।
स्वयं सिद्ध हरि राख्यो भक्तन पड़े कि वेद पुरान ।। ८ ।।
यदि चाहो कल्याण कामना सिद्ध वही तो बात भली।
परम प्रेम से धर्म वेद से पूज चलो गुरु संत चली।
तर्क ज्ञान की धूलि धोय के खोल के देख प्रमान ।। ९ ।।

।। आरति ।।

आरति श्रीहरि घट घट बासी। श्रीसच्चिदानंद सुखरासी।
पुरुषोत्तम नारायण स्वामी। करुणानिधि उर अंतरयामी ।।
कमलापति श्रीविष्णु नमामी। मंगलमय वैकुण्ठ निवासी।
आरति राघव राम जानकी। भरत लषण श्रीहनूमानकी ।।
लंकापति कपिपति सुजानकी। रिपुसूदन अंगद बलधाम की।
आरति राधा कृष्ण मुरारी। नंदनंदन भक्तन हितकारी ।।
केशव वासुदेव बनवारी। आरति कृष्ण चंद अविकारी।
आरति गिरिजा शंकर प्यारे। दुर्गा गणपति रविशशि तारे ।।
सकल देव सब संत अनारी। सद्गुरु एकरस आनंद रासी।
आरति शारद नारद स्वामी। काग भुसुण्डि गरुण सुखधामी ।।
व्यास आदि शुकदेव नमामी। मंजुल तुलसी मंगल स्वामी।
आरति श्रीहरि घट घट बासी। श्रीसच्चिदानंद सुखरासी ।।

॥ निदिया ॥

निदिया वाही घर जइयो जिस घर राम नाम ना होय।
कहतो जइयो ऊचें मंदिर का यहि मन और दुरावे ॥
तोसक तकिया लगी मशहरी तहाँ जाइ सुख पइयो। निदिया० ॥
पहली नींद में सब कोई जागे दूसरी नींद में भोगी ॥
तीसरी नीद में तसकर जागे चौथी नींद में जोगी।
कईतो जइयो सात सखिन के कै जईयो रस भोगी ॥
मेरो साथ छाड़ दे निदिया बन २ फिरौं वियोगी।
कहैं भर्तरी सुन री निदिया यहां न तेरो वासा ॥ ३ ॥
राज पाट तूहीं पर छाड्यो राम मिलन की आसा।
निदिया वाही घर जइयो जिस घर राम नाम ना होय।

गणेश जी की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता तेरी पार्वती, पिता महदेवा ॥
लड्डुवन के भोग लगे, सन्त करें सेवा।
एक दन्त द्रवित, चार भुजा धारी ॥
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।
अंधन को आँख देत, कोढ़िन को काया ॥
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।
हार चढ़े पुष्प चढ़े, और चढ़े मेवा ॥
सूरदास शरण आयो, सुफल कीजै सेवा।
श्री मन्नारायण नारायण नारायण।
भज गोविन्दं भज गोविन्द गोविन्दं भज मूढ़मते।
राम नाम लिख डार, सिला तर जायगी ॥
भज ले सीताराम, मुक्ति हो जायगी।
भज मन गोविन्द भज मन राम गंगा तुलसी सात्विक राम ॥
जपति शिवशिव जानकी राम जय मधुसूदन राधेश्याम।

श्रीकृष्ण गोवर्धन धारी राधावल्लभ कुञ्ज विहारी ॥
वृन्दावन चन्द्र भजो राधे गोविन्द भजो।
जय मीरा के गिरिधर नागर सरदार दास के श्याम।
जय नरसी के सावलिया वो तुलसीदास के राम ॥

प्रदक्षिणा का मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥
तु दयालु दीन हौं तु दानी हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी। तू पाप पुञ्ज हारी ॥
नाथ तू अनाथ सो अनाथ कौन मोसों।
मो समान आरत नहिं आरत हर तोसों ॥
श्री कृष्ण निरञ्जन भव भय भंजन।
मन के मन। जानों की जान ॥
कृपा युक्त निज चरणों में अब लीजै यह मेरा बलिदाना।

हर हर महादेव की जय हो

अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, हर हर महादेव।

दोहा—एक हाथ में खड्ग धरि, एक शूली वर धार।
उठी प्रभा नभ तेज की रवि शत कोटि अपार॥

यहि प्रकार हरि भेद बतायो। अर्जुन नैन मूंदि तब ध्यायो॥
कीन्ही ध्यान क्षण एक बहोरी। स्तुति करत दोऊ कर जोरी॥
जय गिरिजा जय प्रणत पालिका। असुर राज मृग युद्ध जालिका।
महिष मर्दिनी मातु कालिका। निज भक्तन की विपति छालिका॥
जय २ महिषासुर मर्दिनी। अजा कुजा जय मात कमर्दिनी।
शिव शम्भु घरणी शिव धूती। जिहि सुमिरै जग सकल विभूती॥
चंड मुण्ड दलनी अरु चण्डी। ललिता ललित रूप खल खण्डी।
पद्मावती सती तव सीता। होहि काम सब अरि गण जीता॥

रिपु खण्डनि तुव नाम पुनीता। शीशहि जटा कण्ठ शुभतीता
तारा तरणि तारणी गंगा। त्रयपुर की त्रय नाथ विभंगा
कुला कुल गुरुकुल महरानी। गिरा हरा जय जय श्री बानी

दोहा—छिन्ना तू बगला मुखी, बाराही जग माहि।
चरण शरण जगदंबिका, कीजै बेगि सहाय॥
करो राज राजेश्वरी, मातंगी दुख हानि।
दण्ड दै दुष्ट विपाति कै, राखि लेहु धन जानी॥

साँची दुख दलनी जय बाला। करहु कृपा अब होहु दयाला॥
प्रगट्यो एक गगन घन ज्वाला। स्तुति करहि देव दिगपाला।
व्योम गिरा यह भई महाना। म.ग २ अर्जुन बरदाना॥
शत्रु विजय अरु नृप कल्याना। माँगत मातु देहु वरदाना।
है प्रसन्न सुन अर्जुन बानी। एवमस्तु कह गई भवानी।
तब वासकि हय हाँक चलायो। चले मारुतगति पार न लायो।
उठ जाग मुसाफिर भोर भयो। अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है। जो सोवत है सो खोवत है।
टुक नींद से अखियाँ खोल जरा। और अपने प्रभुसे ध्यान लगा।
यहाँ प्रीति करन की रीति नहीं। प्रभु जागत है तू सोवत है॥
जो कल करना है आज करले। जो आज करना सो अब करले।
जब चिड़ियोंने चुग खेत लिया। अब पछताये क्या होवत है।
नादान भुगत करनी अपनी। ये पापी पापमें चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सिरे धरो। अब शीश पकड़ क्यों रोवत है।

❀ ॐ ❀

हे सत्य भू नव खण्ड रवि शशि आदि आदि चराचरम्
विश्वा निदान सदेव देवय एक मेव गुणा गरम्।
सर्वस्व जगदाधार, जानन हार व्यापक सर्वकम्
सवितर विधाता सर्व अन्त प्रकाश रूम्प प्रकाशकम्॥
करो हरि मेरी नैया पार॥ २॥

तुम बिन कौन बचावन हारा यह जग पारावार।
पाप प्रलोभन इञ्जिन भगवन, खैंचि करो मझधार।
मन केवट माया के मदमें घेरा पंच मकार
ढीली परी सुरती की डोरी, स्वामिन तुम्हें विस्तार
बार बार टकरात दुसह दुख टूट गया पतवार।
नाव पुरानी झाँझरि होगई छण में डूबन हार
बल्ली हाथ गह्यो करुणा कर पार करो करतार
करो हरि नैया मेरी पार ॥ २ ॥

॥ दूसरा पद ॥

रे मन ! यह दो दिन का मेला रहेगा।
न कायम यह जगका झमेला रहेगा ॥
किस काम के ऊँचे महल जो तू बनायेगा।
किस काम का लाखोंका तोड़ा तू कमायेगा।
रथ हाथियों का झुंड भी किस काम आयेगा।
जैसा था आया तू वैसा ही जायगा।
संग में तेरी सवारी के खातिर यह
कन्धों पै गठरी का ठेला रहेगा ॥ अरे मन० ॥
कहता है दौलत यह कभी आयेगी मेरे काम।
पर यह बताओ धनभला किसका हुआ गुलाम।
समझ गये उपदेश हरिश्चन्द्र कृष्ण राम।
दौलत नहीं है रहती, रहता है एक नाम।
छूटेगी संपत्ति यही की यहीं पर, तेरी कमर में न धेला रहेगा।
अरे मन साथी हैं मित्र गंगा जलके पानतक।
अर्धांगिनी केवल मकान तक।
बेटा भी हक निभायेगा अग्निदानतक।
परिवार के केवल चलेंगे स्मशान तक।
इससे अगाड़ी भजन है हरिके, भजन बिनु अकेला रहेगा।

॥ अन्नपूर्णा स्तुति ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे ।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥

॥ काली स्तुति ॥

काली काली महाकाली कालिके परमेश्वरी ।
सर्वानन्द करे देवी नारायणी नमोऽस्तुते ॥

॥ शीतला स्तुति ॥

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥

* ॐ *

वारिजा बिनोद हेतु गई थीं उमानिकेत
पूँछती कपाट लागि गिरजा हो घरमें ।
भिक्षुक तिहारो कहाँ बलिमुख शालामें
गरल को अहारी कहाँ पूतना के उरमें ।
सोहै शेष नाग लोतो शेष शय्या पै
पशुपति कहाँ कहूँ गोकुला की डगरमें ।
पूछती है सिंधुसुता ईश्वरी बतावो भेद
शैलपति कहा कहूँ गोवरधन लिये करमें ।

ॐ

धन्य धन्य वृन्दावन, जाकी अति लता सघन ।
जेहि लख मन होत मगन, दुख को नहि नाम है ॥
धन्य धन्य नंदगाँव, सुंदर जहँ कदम छाँह ।
खेले हरि नंगे पाँव, धन्य गोकुल धाम है ॥
धन्य धन्य वंशीवट, धन्य धन्य जमुना तट ।
आवत जहँ लै लै घट, भरन वृज बाम है ॥
धन्य धन्य गोपतायँ, जसुमति औ नन्दराय ।
धन्य सकल गोपगायँ, बिचरैं संग श्याम हैं ॥

धन्य धन्य वृजवासिनि को, वृजजन सुख रासिनको।
कृष्ण नाम दासिनि को, कृष्ण को प्रणाम है॥

भजन

भजु राम राम, कहु हरे हरे, नित ठाढ़े बैठे घरे घरे॥
है निगमागम सिद्धान्त वही, ऋषि मुनि संतन बात कही॥
तपदान यज्ञ है श्रेष्ठ सही, पढ़ राम नाम के तरे तरे॥
धन दारा सुत ग्रह नगर गाँव, सबकुछ रहि जाये यहीं ठाँव।
जब काल पकड़ि हैं आय पाँव, को राखि सकत नहिं अरें अरे॥
यह निसदिन स्वांस चलत जावे, आगे बढ़ि पाछे नहिं आवे॥
जब चलत चलत यह रुक जावे, तब लोग कहत हैं मरे मरे।
सब तज हरि भजु कर काम यही, जीवन नैया जात अब वहीं।
जिन वासुदेव हरि आस गही, ते नर भव सागर तरे तरे।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री रामायण तुलसीकृत

चौपाई—जो कछु कार्य हेतु कोऊ जाई। सुमिरि चले सो यह चौपाई॥
मंत्र—प्रविश नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोशलपुर राजा॥
जो विदेश चाहे कुसलाई। तो यह सुमिरि चले चौपाई॥
मंत्र—रथ चढ़ि सिया सहित दोउ भाई। चले बनहि अवधौ सिर नाई॥
भूत पिशाच जाय जब लागे। यह सोरठा पढ़ै सो भागै॥
सोरठा—बन्दौ पवन कुमार, खल बल पावक ज्ञान घन।
जासु रूप आगार, बसहि राम शर चाप धर॥
शत्रु निवारण चहों जो भाई। भाव सहित जप यह चौपाई॥
जाके सुमिरन ते रिपु नाशा। नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा॥
यह चौपाई जपै जो कोई। अन्न आदि दुःख ताहि न होई॥
विश्व भरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥
जो उत्सव चह विविध प्रकारा। कर यह चौपाई अनुसारा॥
जब ते राम ब्याहि घर आये। नित नव मंगल मोद बधाये॥
जो चाहों जग में यश भाई। सुस्थिर है जप यह चौपाई॥

सखा धर्ममय असरथ जाके । जीत न सकहि कबहुं रिपु ताके
है बहु भाँति कार्य जग माहीं । रामायण से सब है जाहीं
रामायण विधि कहैं विशारद । सनत्कुमार सो भाषी नारद
सहित विधान सुनै जो कोई । सहज मुक्ति पावे नर सोई
कार्तिक माघ चैत्र हित लाई । नव दिन कहे कथा सुखदाई
ब्रह्म मूहूर्त सहाय होय जबहीं । कर्म करै सौचादिक तबहीं
करै दन्त धावन लट जीरा । मंजन करै धरै मनधीरा
पुनि रामायण पुस्तक अरचै । प्रेम सहित गंगादिक चर्चै
ॐ नमो नारायण मंत्र भनीजै । तीन आहुती होम करीजै
मन वच कर्म पाप तन केरे । छूट जात नहिं आवत नेरे

❀ ॐ ❀

ये दुनियाँ चन्द रोजा है, ये जीवन बे करारी है ।
जहाँ को देख कर भूला, ये नर कैसा अनारी है ॥
बड़ा मति मंद अज्ञानी, न समझे लाभ अरु हानि ।
करे क्यों अपनी मन मानी, अकल क्यों बेच डारी है ॥
करम अपना भुलाता है, दुखों की मार खाता है ।
जो करता है वह पाता है वो ईश्वर न्यायकारी है ।
बने हो बातों से ज्ञानी करो सब काम हैं बानी ।
पड़ा है बुद्धि पर पानी चढ़ा शिर भूत भारी है ।
तेरी है कुछ दिन काया फिरै है जिस पै गरवाया
क्यों अपने प्रभु को बिसराया गई मति कैसी मारी है ।
समझ शठ काल आता है लिये ही तुमको जाता है ॥
लगाता किससे नाता है तू करता किससे यारी है ।
धर्म भक्ति करो भाई जो होवें अंत सुखदाई
कहें जगदीशानंद समुझाई सफल की अब तैयारी है ।

॥ अथ श्रीदुर्गा प्रार्थना ॥

या चण्डी मधुकैटभ प्रमथिनि, या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्ड मथिनी, या रक्त बीजाशिनी ।

शक्तिः शुम्भ निशुम्भ दैत्य दलिनी, या सिद्धि लक्ष्मीः परा
सा देवी नव कोटि मूर्त्ति सहिता माम्पातु विश्वेश्वरी ॥१॥
हे दुर्गे जगदम्बिके गिरि सुते सर्वाश्रये शर्म्म दे
हे नित्ये मधुकैटभ प्रमथिनी श्रीज्ञानि माये जये।
हे शक्ते महिषा सुरार्दिनि शिवे देवेशि देव स्तुते।
हे शुम्भाद्यसुरघ्निवाणिवरदे, मातः सदा पाहि माम् ॥२॥
महान्तं विश्वासन्तव चरण पंकेरुहयुगे
निधायान्यन्नैवा श्रितमिहमयादैवतमुभे ॥
तथापि तच्चेतो यदि मयि न जायेतसदयं।
निरालम्बो लम्बोदर जननिकं यामि शरणम् ॥ ३ ॥

(इति)

॥ अथ श्रीदक्षिण कालिका स्त्रोत्रम् ॥

अलं गङ्गया किं गयापिण्डदानैरलंकाशिकावास सन्यासयौगै ॥
नवीनस्फुरन्नीरदश्यामकाया यदिशानजायासमायातिचित्ते ॥१॥
जरीजृम्भदम्भोजिनी पुञ्जसंगा मिलन्मौक्तिकस्त्रागजटाला विशालाः ॥
किमन्यैरगदायेरधन्यै रपुण्यैः करिष्यन्ति नः शर्म्मं काली कटाक्षाः ॥२॥
पतिष्यन्ति नः पादयो भूमिपाला मिलिष्यति कामालसा वामबालाः ॥
स्फुरिष्यन्ति दिव्योक्ति काव्य प्रबन्धाः कृपाङ्गेतिकरिष्यन्ति काली कटाक्षाः
तवामी दरा मील दम्भोज भासो महाशोचना मोचना लोचनान्ताः ॥
नुकम्पा मोकम्पा समुद्राः सभद्रा अभद्राणि दुर्गाणि विद्रावयन्तु ॥ ४ ॥
इदं कालिकास्तोत्र मस्तोभचिताः पठन्तीह ये भक्ति तोऽभक्ति तो वा ॥
रमन्ते च तेनैवदुःखं न शोको नतेषांभवेद्वा यमाद्भोतिरत्र ॥ ५ ॥

॥ अथ द्वादश ज्योतिर्लिंगानि ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथंच श्रीशैलेमल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यांमहाकाल मोंकारममलेश्वरम् ॥१॥
परल्यांवैजनाथं च डाकिन्यां भीम शंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥

वाराणस्यां तु विश्वेशंत्र्यंबकं गौतमीतटे।
हिमालयेतुकेदारं घुसृणेशं शिवालये ॥३॥
एतानिज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतंपापंस्मरणेन विनश्यति।४॥

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

॥ श्रीविष्णोः षोडशनाम स्तोत्रम् ॥

औषधये चिन्तयेद्विष्णुं भोजने च जनार्दनम्।
शयने पद्मनाभं च विवाहे च प्रजापतिम् ॥ १ ॥
युद्धे चक्रधरं देवं प्रवासे च त्रिविक्रमम्।
नारायणं तनु त्यागे श्रीधरं प्रिय संगमे ॥ २ ॥
दुःस्वप्नेस्मर गोविन्दम् संकटे मधुसूदनम्।
कानने नारसिंहं च पावके जलशायिनम् ॥ ३ ॥
जलमध्ये वराहं च पर्वते रंघुनन्दनम्।
गमने वामनं चैव सर्वं कार्येषु माधवम् ॥ ४ ॥
षोडशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वं पाप विनिर्मुक्तो विष्णु लोके महीयते ॥ ५ ॥

श्रीविष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्।

॥ अर्जुन उवाच ॥

किं नु नाम सहस्राणि जपंते च पुनः पुनः।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशव ॥ १ ॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

मत्स्यं कूर्मंवराहं च वामनं च जनार्दनम्।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ॥ २ ॥
पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालिं हलायुधम्।
गोवर्द्धनं हृषिकेशं वैकुण्ठम् पुरुषोत्तमम् ॥ ३ ॥
विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम्।
दामोदरं श्रीधरं च वेदांगं गरुड़ध्वजम् ॥ ४ ॥
अनन्तं कृष्णगोपालौ जपतो नास्ति पातकम्।

गवांकोटि प्रदानस्य अश्वमेध शतस्य च ॥ ५ ॥
कन्यादान सहस्राणांफलं प्राप्नोति मानवः ।
अमायां वै पौर्णमास्यामेकादश्यां तथैव च ॥ ६ ॥
संध्याकाले स्मरेन्नित्यंप्रातःकाले तथैव च ।
मध्याह्ने च जपेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ७ ॥
ॐ क्लीं कृष्णाय-गोविन्दाय-गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।
भगवान् सच्चिदान्द की जय हो–हिन्दूधर्म की जय हो–
गोमाता की जय हो–भारत माता की जय हो–
संत समाज की जय हो–श्रीगुरुदेव भगवान् की जय हो–
त्रैलोक्यामुदितंसर्वंदृष्ट्वा शक्त्यायुतं शिवम् ।
तदास्तोत्रंमुहरिश्चक्रेऽश्विवयोः परमात्मनोः ॥१॥

ॐ विष्णुरुवाच ॐ

मन्दारमाला कुलितालकायैकपालमालङ्कितशेखराय ।
दिव्यांबरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥२॥
सुलोचनायै विषमेक्षणाय सुधाशनायै गरलाशनाय ।
विभूतिदायै विभवोतिभाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥३॥
सर्वार्चितायै सकलार्चिताय कामप्रदायै स्मरनाशनाय ।
सुधांसुभायै च सुधांसुभाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥४॥
इति स्तुता महादेवो विष्णुना शक्ति संयुक्तः ।
तमुवाच जगन्नाथं गिरागम्भीरया हरः ॥५॥

॥ शिव उवाच ॥

प्रसन्नोऽस्मि महाविष्णो तव भक्त्याऽनया हरे ।
वरं वरयमत्तास्त्वंयत्तेमनसिवर्तते ॥६॥

॥ विष्णुरुवाच ॥

शम्भोतच्चरणाम्भोजे भक्तिर्मेऽस्वस्त्वनपायिनी ॥
सदादेहि देहि वरं यत्तु नान्यंवृणोमिते ॥७॥

॥ शिव उवाच ॥

एवमस्तु हृषीकेशममास्मासि रमापते ।
शिवेन सत्कृतोत्यर्थं जगामभुवनंस्वकम् ॥८॥

❀ शुभंभूयात ❀

कबीर दास

देखि देखि जिय अजरज होई, यह पद बूझै बिरला कोई ।
धरती उड़ैय अकाशै जाई, चींटी के मुह हाथी समाई ॥
बिना पवन जह पर्वत उड़ैं, जीव जन्तु सब वृक्षहि बूड़ैं ।
सूखे सर पर उड़ै हिलोर, बिनु जल चकवा को हिलोर ॥
बैठा पण्डित पढ़े पुराना, बिनु देखे को करै बखाना ।
कबीर जो पद को जाने, सोई सन्त सदा पर माने ॥

राग झझोटी

बालमीक तुलसी जी कहियेगा एक दिन कलियुग आवेगा ।
ब्राह्मण होकर वेद न जाने मिथ्या जन्म गवायेगा ।
बिना खड्ग के क्षत्री होइ है, शूद्रहि राज चलावेगा ॥
बेटा मातु पिता नहिं चीन्हे त्रिया से नेह लगावेगा ।
सो त्रिया स्वामी को ना जानै, आन पुरुष मन भावेगा ॥
सती जती कोई बिरलै होइहै सब दुखिया हो जावेगा ।
कहे कबीर सुनो हो साधू राम नाम न आवेगा ॥

❀ अस्तुति ❀

दिशा बसन अरु शक्ति कराला । पहिरे उर मुण्डन के माला ॥
अंग अंग अहि भूषण नाना । शिवारूढ़ अरु बसत मसाना ॥
मुक्त केश अरु बदन पसारे । जिह्वा ललन दशन भयकारे ॥
विकसत अरुण नयन त्रय ज्वाला । अष्टबाहु तन श्याम तमाला ॥
घुरघुर शब्द सहित घनघोरा । शिवा नाद पूरित चहुँओरा ॥
मुण्ड एक कर एक कृपाना । एक अभय एक कर दाना ॥
एक पाणि मदिरा कर भाजन । एक पाणि श्रृंगी हितु बाजन ॥

एक हाथ में खड्गधर, यक शूली वरधार।
उठत प्रभा नभ तेज की, रवि शत कोटि अपार॥

जय गिरिजापति दीन दयाला। सदा करो भक्तन प्रतिपाला॥
जय गिरिजा जय प्रणत पालिका। असुर राज मृग युद्ध जालिका॥
महिषमर्दिनी मातु कालिका। निज भक्तन की बिपति घालिका॥
जय जय जय महिषा सुर मर्दिनी। अजा कुजा जय मातु कपरदनी॥
शिव शंभु धरणी शिव दूती। जेहि सुमरे जग सकल विभूती॥
चंड मुंड़ दतानी अरू चंडी। ललिता लीला-सरूप खल खंडी॥
धूमावती सती तुव सीता। होहि काम सब आरिगण जीता॥
रिपु खंडन तुव नाम पुनिता। शीशहि जटा कंठ सुभ गीता॥
तारा तरणि तारणी गंगा। त्रैपुर की त्रप ताप विभंगा॥
जय जय जै जगदम्ब भवानी। गिरा हरा जय जय श्री बानी॥

लावनी

सतयुग में सत रहा त्रेता द्वापर के जाते जाते।
बुद्धि भ्रष्ट हो गयी कयों की कलयुग के आते आते।
सत्य धर्म कम रहा पाप बढ़ गया कलौ के दरम्याने।
हुआ कलौ का वर्तमान सब देव छोड़ गये स्थाने।
शंकर गये कैलास विष्णु वैकुण्ठ गये सुन वय आने।
ऐसा तेज घट गया रहा न ऊँच नीच कोई पहचाने।
बुद्धी भ्रष्ट हो गयी कयों की कलयुग के आते आते।
धरती हुई फल हीन राजा राजनीति को ना जाने।
विप्र लालची हुये देख लो गऊ लगी विष्ठा खाने।
पतिव्रता ना रही स्त्री कहा पति का ना माने।
वेटा बाप को गाली देता सब देखो कलियुग म्याने।
भाई भाई में वैर देख लो एक एक की ना माने।
पञ्चन की परतीत नहीं पर पंच न्याव लागे छाने।
गुरु लोभी चेला लालची फिरते हैं माते माते।

बुद्धि भ्रष्ट हो गयी क्यों की कलियुग के आते आते।
पिता पुत्र का यही दण्ड है कर दिया व्याह व सागाई।
कुटुम कबीला छोड़ अलग हो गया जो लेकर लोगाई।
मित्र हुये बयमान देख भाभी से लगाते स्नाई।
भड़ुवे खाते माल देखलो फांका करते सीपाही।
सच्चे का न पता झूठ पर दुनिया को माया छाई।
असल बीज कम रहा देखलो अन्डवेल मंडप छाई।
गंगा गुप्त कर देंगे भला पापी दुष्ट नहाते नहाते।
बुद्धि भ्रष्ट हो गयी क्यों की कलियुग के आते आते।
कलकत्ता मुकाम कलौका जमा दिया अपना थाना।
सबको बस कर लिया बचा न कोई भी मरदाना।
डूबी बादशाही दिल्ली की लूट लिया सब खजाना।
बड़ा तेज प्रताप कम्पनी चल हुकुम का परवाना।
तुकानगिरि महराजगिरि की ऋसिलगिरि मुरसतगाना।
हवा देख कर चलौ कलौ में बहु बात बिच गम खाना।
सत धर्म से चलौ कलौ में सबहिं पाप जाते जाते।
बुद्धि भ्रष्ट हो गयी क्यों की कलियुग के आते आते।

ॐ

कवित्त—लाख करोड़ मंत्र का गनघुनि।
तंत्र ग्रन्थ लखि अंश सकल गुनि॥

काली ताको अंश प्रधाना। माहेश्वरी आदि लख नाना॥
हरिहर ब्रह्म सकल तेहि ध्यावे। निज निज अंश कृपा तेहि पावे॥
ध्येयरूप ध्यावत हैं जबहीं। सिद्ध उपासन लखिये तबहीं॥
अंश उपासना हरि अरु हर की। नारी मूर्ति धरी तज नर की॥
अमृत मथन प्रसंग में हरी मोहनी स्वरूप।
अर्ध अङ्ग शिव को लसे देवी रूप अनूप॥
भक्त भगवती के हर हरि हैं। इन सम कौन उपासन करिहैं॥
तदपि महामाया जो ध्यावहिं। तुरत सकल पुरुषारथ पावहिं॥

॥ लावनी धनुष यज्ञ की ॥

प्रण किया जनक जो तोड़ धनुष बल लावै।
करूं व्याह जानकी तुरत संग ले जावै ॥
हर जगह हुई जब खबर गये परवाने।
है रचा जनक ने जज्ञ कठिन प्रण ठाने ॥
जहाँ रावन से योधा लगे सभा में आने।
अब देख धनुष सब जोधा लगे घबराने ॥
भुज विस्व उठाया धनुष जोर अजमावै। करूं विवाह ॥
जब धनुष यज्ञ की खबर राम पै आई।
चल दिये जनक पुर आये दोनों भाई ॥
है सुन्दर रूप अनूप न बरनो जाई।
गावत है शेष गणेश पार नहिं पाई ॥
है रामचन्द्र अवतार जगत यो गावै। करूं विवाह० ॥
जिनके बल का नहि पार महाबल कारी ॥
निज चरनन की रज से दई अहिल्या तारी।
सब सुन्दर ता को देख रहे चुप भारी ॥
क्या अजब मोहिनी रूप उमर है वारी ॥
सब धनुष उठाकर थके हिलन न पावै। करूं विवाह० ॥
यह दशा देख रघुनाथ धनुष कर लीन्हा ॥
ले तुरत धनुषको खण्ड खण्ड कर दीन्हा।
सब भूप रहे चुप साध तरे सिर कीन्हा ॥
तब सिया ने तुरत राम को चीन्हा।
सब देवन के गण लगे फूल वरसावै ॥ करूं विवाह० ॥
विश्वामित्र दशरथ को लिखी तब पाती ॥
वह पत्री फिर तुरत अवधपुर जाती।
पढ़ लिया व्याह का हाल सजे सब बाराती ॥
सज २ खूब बरात जनक पुर जाती।
हाथी घोड़ा और ऊंट साज सब लावै। करूं विवाह० ॥

आ गयी जबै बारात जनक लई अगवानी।
जनवासा फिर दिया खूब सुख मानी॥
जय माला राम के डार सिया हरसानी।
हुआ राम का ब्याह सकता जग जानी॥
फिर चलन अवध पुर राम हुक्म कर भावै। करूं विवाह०॥
सब लौट बराती अवध पुर को आते॥
जो जिस लायक है सभी बिदाई पाते।
फूलन की वरसा करी देव हरषाते।
श्रीराम लावनी राम ब्याह को गाते॥
जगदीशानन्द दे छपादई ये पुरा भाग कहावै।
करूं ब्याह नन्द जानकी तुरत संगले जावै॥

॥ प्रभावती ॥

सूरज निकला हुआ सवेरा तू क्यों अब तक सोता है।
काम क्रोध लोभ कीं बोझा तू सर पर क्यों ढोता है॥
भव सागर में आकर वन्दे क्यों तू गोता खाता है।
तन पवित्र अपने में प्यारे पाप बीज क्यों बोता है॥
कोई संग न जावे तेरे क्या बेटा क्या पोता है
कहे जगदीशानन्द सुन प्यारे वन्दे उमर मुफत क्यों खोता है॥
जय जय नारायण नन्द ब्रह्म परायण श्रीपति कमला कन्तम्।
नाम अनन्तं कह लग वरणे शेष न पावत अन्तम्॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक नारद ध्यान धरन्तम्। जय०॥
जन्म लियो वसुदेव गृह यसुदा गोद खिलन्तम्।
पैठि पाताल काल नक नाथ्यो फन पर निरत करन्तम्॥
परसराम सोई राम चन्द्र भये लीला कोटि करन्तम्।
कच्छ मच्छ नर हाई प्रभू सूकर वामन रूप धरन्तम्॥
बलभद्र भये सोई असुर संहारे कंस के केश गहन्तम्।
जगदीशानन्द जग मग चिन्ता मणि बैठि रहे निश्चिन्तम्॥
कलियुग में निष्कलंक होयँगे वसुधा रूप धरन्तम्॥

दशम अस्कन्ध भगवत् गावत सूर्य शरण भगवन्तम् ॥
जय नारायण ब्रह्म परायण श्री पति कमला कन्तम् ।

❀ श्रीकृष्णजी का राधा के भवन जाना ❀

लावनी ॥ २ ॥

आधी रात के विखें कृष्ण राधे के भवन को जाते भये ।
कर सरोज द्वारे के ऊपर पट कपाट खटकाते भये ॥
चौंक उठी वृषभान नन्दिनी कौन मेरे द्वारे आया ।
नाम बतादो जी आकर मुझको जिसने नींद से जगाया ॥
परस्थान में धसा आन के जरा न दिल में शंका लाया ।
फिरो दिवाना दीवाना होकर कै हो किसी का भरमाया ॥
मधुर बचन सुन राधे जी के श्रीकृष्ण समझाते भये ॥ कर सरो० ॥
हरी नाम है मेरा जगत में तेरे पास आया हूँ अली ।
कहत राधिका शरद ऋतू में ऋतु बसन्त नहिं लाग भली ॥
रितु बसन्त जन जान प्रिया तू चक्री है मेरा नाम अली ।
चक्री हो तो यहाँ से सरको पूछो जाय कुम्हार गली ॥
धरनीधर कहते मुझको वेद नोति से गाते भये ॥ कर सरोज० ॥
जानत हूं तुम शेषनाग हो सहस शीस तन के कारा ।
शेष नहीं हूँ प्रिया हूँ मैं तो सरपन के मारन हारा ॥
शेष नहीं तो गरुड़ होगे वनिता के करो प्रतिपाला ।
हरी नाम है मेरा जगत में सकल लोक में उजियाला ॥
सूरज हो तो स्वर्ग छोड़कर मेरे भवन क्यों आते भये ॥ कर० ॥
कृष्ण कृष्ण श्री कृष्ण तीन वेर उच्चार किया ।
उठी राधिका दनि पट खोला गले बीच का हार किया ॥
तुर्रा के जवाब को सुनकर धोती के उड़ जाते भये ।
कर सरोज द्वारे के ऊपर पट कपाट खटकाते भये ॥

❀ गाना ❀

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान ।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया,

हारे ऋषी मुनी कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान ॥
तूही जल में तूही थल में, तूही मन में तूही बन में ।
तेरा रूप अनूप जहान. बना मन मन्दिर आली शान ॥
तू हर गुल में तू बुल बुल में, तू हर डाल के पातन में ।
तू हर दिल में मूरति मान, बना मन मन्दिर आली शान ।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये ।
तेरी लीला ऐसी महान, बना मन मन्दिर आली शान ॥
झूठे जग की झूठी माया, मूरख क्यों इसमें भरमाया ।
कर कुछ जीवन का कल्याण बना मन मन्दिर आली शान ॥

❀ गाना ❀

ॐ जय जगदीश हरे । भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे ।
जो ध्यावै फल पावै दुःख विनशे मन का,
सुख सम्पति घर आवै कष्ट मिटे तन का । ॐ जय जगदीश हरे
मात पिता तुम मेरे स्वामी शरण गहूँ किसकी,
तुम बिन और न कोई आश करूँ किसकी । ॐ जय जगदीश
तुम पूरण परमात्मा प्रभुवर तुम अन्तर्यामी,
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी । ॐ जय जगदीश ह
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता,
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता । ॐ जय जगदीश ह
तुम तो एक अगोचर सबके प्राण पती,
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती । ॐ जय जगदीश
दीनबन्धु दुख हर्ता तुम रक्षक मेरे,
करुणा हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे । ॐ जय जगदीश हरे
विषय विकार मिटाओ मेरे पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा । ॐ जय जगदीश ह

❀ भजन ❀

दिल तो मेरा हर लिया गोविन्द माधो श्याम ने ।
कृष्णा कृष्णा मैं पुकारूँ तेरे दर के सामने ॥

वंशी वाले अपनी वंशी तू सुना दे आन कर।
तेरी चरचा हम करेंगे हर बशर के सामने॥
खम्भ से प्रह्लाद को तूने बचाया था प्रभू।
द्रौपदी की लाज राखी कौरव दल के सामने॥
मेरी ख्वाहिश है फकत मोहन तेरे दीदार की।
इस लिये धूनी रमायी तेरे दर के सामने॥
कृष्ण जी दरशन दिखा दो इस दास को आनकर।
हम तुम्हारे सामने हो तुम हमारे सामने॥

❀ गजल ❀

इस तन में रमा करना इस मन में रमा करना।
बैकुण्ठ तो यही है इसमें ही बसा करना॥
हम मोर बन के मोहन नाचा करेंगे बन में।
तुम श्याम घटा बनकर उस बन में उठा करना॥
हो करके हम पपीहा पी पी रटा करेंगे।
तुम स्वाति बूंद बनकर प्यासों पै दया करना॥
हम राधेश्याम जग में तुमको ही निहारेंगे।
तुम दिव्य ज्योति बन कर नैनों में रहा करना॥

॥ भजन ॥

डरते रहो यह जिन्दगी बेकार न हो जाय।
सपने में किसी जीव का अपकार न हो जाय॥
पाया है तन अमोल सदाचार के लिये।
विषयों में फँसके तुमसे अनाचार न हो जाय॥
सेवा करो सब देश की शुभ कर्म हरि भजन।
इतना भी करके तुमको अहंकार न हो जाय॥
मञ्जिल असल मुकाम की तै करनी है तुम्हें।
जग ठग नगर में फँसके गिरफ्तार न हो जाय॥
माधव लगी है बाजी माया मोह जाल की।
धोखे में पड़ के अबकी कहीं हार न हो जाय॥

॥ पञ्चक ॥

यहाँ एक आलम्य माया का टूटी झोपड़ी छानी है।
फकत लँगोटी चहत कमण्डल सो पीने को पानी है।
साल दुशाला का लै करिबे गुदड़ी में कुरवानी है।
लछिमन दास दिना दश में यह बीती जात जवानी है॥
फूँक २ पग धरो रे भाई यह तो उमर दिवानी है।
परि जैहो कहीं विषय फन्द में तादिन परिहै जानी है॥
अन्धा फिरै ज्ञान को मारो समुझत ना अज्ञानी है।
जस के कीन्हें भला होत है अपजस में बड़ि हानी है॥
कटुक वचन मत कहो किसी को बोलो मीठी बानी है।
तजि अभिमान भजो साहब को जरा आइ नगिचानी है॥
लछिमन दास दिना दश में अब बीती जाति जवानी है।
किया गुमान झूठो काया को छिन में होत बिरानी है॥
मिट्टी को तनु रचो विधाता तामें हवा समानी है।
काहे को कोई सोच करत हो यह तो वस्तु बिरानी है॥
लछिमन दास दिना दश में बीती जाति जवानी है।
श्रवण सुने अघ कोटि करत है मूढ़ होत विज्ञानी है॥
सन्तन को विराग उपजावत भक्ति की यही निशानी है।
निर्गुण तत्व छानि के वर ने यह तो विश्व कहानी है॥
लछिमन दास दिना दश में बीती जात जवानी है।

ॐ

चले न पद कर कम्पन लागे मुश्किल जंगल जावे है।
उठवे की ना रही संकिता परे होत पेशा वे है।
सुबह शाम की लगी तयारी रखा पाँव रकावे है।
लछिमन कहैं जब थकी देह सब साथिन दियो जवावे है।
गिरि गये दशन कपोल सूख गयी मुँह की उड़ गयी आवै है।
तोरै कौर समूचो निगले कछु बन पर तन खावै है।
कानन सुनै न आँखिन सूझे हो गयी सकल बेकावै है।

लछिमन कहै जब थको देह सब साथिन दियो जवावै है।
आयु जरो श्वेत कच हो गये कीन्ह कण्ठ कफदावे है।
नाती पूत न अपने बसके ना कछु रहो रोवावे है।
बहू कहै कब मरै निगोड़ो कीन्हेसि ठौर खरावे है।
लछिमन कहैं जब थकी देह सब साथिन दियो जवावै है।
पचि पचि मरे बहुत धन जोरो द्रव्य के लागि भरावे है।
सुर धुर धानी किला उठावे धरी वुर्ज पर तोपे है।
साहब हुक्म दियो तब चलिये संगन कछु असवावे है।
लछिमन कहे जब थको देह सब साथिन दियो जवावे है।
रूपकार भये जब यम आगे लागे होन हिसावे है।
भिन्न - कहि दिया दोष गण जो कछु लिखा कितावे है।
किये हवाले जल्लादन के तेहि छन कियो कवावे है।
लछिमन कहैं जब थकी देह सब साथिन दियो जवावे है।

❀ भजन ❀

रे मन कृष्ण २ बोल तेरी हीरा ऐसी काया बातों में बीती जाय।
गंगा यमुना बहुत नहाये धुला न मन का मैल।
घर धन्धों में लगा रहे यों ज्यों कोल्हू का बैल।
तेरे जीवन की आशा बातों में बीती जाय रे।
मेरी तेरी कहते कहते निकल गयी है जान।
जैसे जलबीच बीच बतासा बातों में बीती जाय रे।
पाप गठरिया सिर पर बाँधे भटकत फिरता रोज।
रोम रोममें कृष्ण लिखा है मूरख इसको बाँच।
झूठो करता रहा बहाना बातों बीती जायरे।
रे मन कृष्ण २ बोल तोरी हीरा ऐसी-
काया बातों में बीती जायरे।

❀ कीर्तन ❀

राम राम भज कृष्ण कृष्ण गोपाल गोवर्धन गिरधारी।
हो जाओ होशियार की जिनका हो गया नोटिस जारी।

होग ये बाल सफेद तो समझो पहली नोटिस सरकारी।
दूजे कान सुने कम तीजे नयन ज्योति भई न्यारी। राम २ भ
झुकी कमर अरु गिरे दाँत तो समझो पूरी तैयारी।
हिचकी तीन तीन बोलों में कुड़क हुयी सम्पति सारी।
छूटेगा सब माल खजाना जर जमीन जोरू प्यारी।
ले यम दूत पकड़ ले जावे गले बीच फाँसी डाली।
राम राम भज कृष्ण कृष्ण गोपाल गोवर्धन गिरधारी।

उजरे उजरे सब भले, उजरे भले न केश।
नारी डरै न रिपु डरै न आदर करै नरेश॥

अर्थ—उजला उजला सब कुछ तो अच्छा है किन्तु उजले (बाल) नहीं अच्छे। कारण, केश सफेद होने पर न तो अपनी ही डरती है और न अपना शत्रु ही डरता है तीसरे राजा भी आ नहीं करता।

ॐ

ऐ काशी वासी सकल सुख राशी विभव विलासी।
मोक्षासो मन्थन विनासो सदा।
लगा दे गाँसी तू चपल मन हाँसी कर रहा।
नमों नाश प्रार्थी चरण पर माथा धर रहा॥
जटा सोहैं गंगा शसि सिर अनंगा रहत हैं।
भवानी अर्धङ्गा गणपति उछङ्गा धरत हैं॥
लसै गोरे अङ्गा शित. भसि भुजङ्गा भरण हैं।
करो भव भय भङ्गा शिव शिव तुम्हारी शरण है॥
ऐ काशी वासी मन करत हांसी जनन की।
करो याकी फाँसी कठिन रच गाँसी चरण की॥
लिये सेना संगा नित फिरत दंगा करन को।
करो कैसे भङ्गा शुभ सब नङ्गा करन को॥

प्रार्थना

खबर करदो रघुनन्दन को खड़े हम दर पर दर्शन को।
लाख चौरासी स्वांग धर नाना कष्ट उठाय।
जन्म-मरण से हो दुखी गिरे चरण में आय।
झुकाये हुये गरदन को खड़े हम दर पर दर्शन को।
यद्यपि आपही ने दिया नाम रूप गुण भार।
किन्तु एक भक्ति बिना यह सब है बेकार।
करें क्या लेकर इस धन को खड़े हम दर पर दर्शन को।
खेल तमाशा में सदा दौड़ दौड़ मन जाय।
भजन भयङ्कर सा लगे बुद्धि भ्रष्ट हो जाय।
कहाँ तक रोवें करमन को खड़े हम दर पर दर्शन को।
नौका पापों से भरी डूब रही मझधार।
डूबी कछु डूबन चहै एक तुम्हीं अधार।
उबारो राधेश्याम जन को खड़े हम दर पर दर्शन को॥

॥ ईश्वर प्रणिधान ॥

अज अद्वितीय अखण्ड अक्षर अर्यमा अविकार है।
अभिराम अभ्याहत अगोचर अग्नि अखिलाधार है।
मनु मुक्त मंगल मूल मायिक मान हीन महेश है।
कर तार तारक है तुही यह वेद का उपदेश है।
वसु विष्णु ब्रह्मा बुध बृहस्पति बुध विश्व व्यापक है।
वरुणेन्द्र वायु वरिष्ठ विश्रुत वन्दनीय विशुद्ध है।
गुण हीन गुरु विज्ञान न सागर ज्ञान गम्य गणेश है।
कर तार तारक है तुही यह वेद का उपदेश है।
निरुपाधि नारायण निरञ्जन निर्मयमामृत नित्य है।
अजा अनादि अनन्त निरुपम अन्न जल आदित्य है।
प्रीतम पुरोहित प्राण पाक प्राज्ञ पूज्य प्रवेश है।
कर तार तारक है तुही यह वेद का उपदेश है।
कवि काल काली [illegible] कर केतु करुणाकन्द है।

सुख धाम सत्य सुपर्ण सच्छिव सर्ग प्रेम स्वच्छन्द है।
भगवान भावुक भक्त वत्सल भू-विभू भुवनेश है।
कर तार तारक है तुही यह वेद का उपदेश है।
अव्यक्त अव्वल अकाय अच्युत अंगिरा अविशेष है।
श्री मच्छ माशुभ शून्य शंकर शुक्र शासक शेष है।
जगदन्ती जीवन जन्म कारण भरत वेद जे वंश है।
कर तार तारक है तुही यह वेद का उपदेश है।

❀ ॐ ❀

नारायण का ध्यान सदा दिलके अन्दर लाना चहिये,।
मानुष तन है दुर्लभ जगमें इसका फल पाना चहिये॥
दुर्जन संग नरक का मारग उनसे दूर जाना चहिये।
सत संगत में बैठ हमेशा हरिके गुण गाना चहिये॥
धर्म कमाई करके अपने हाथों को खाना चहिये।
दुखी दीन जन देख दया करके कुछ दिलवाना चहिये॥
पर नारीको अपनी माता के समान जानना चहिये।
सब जीवन के सुख दुख अपने तन जैसे मानना चहिये॥
झूठ कपट की बात सदा कहने में सरमाना चहिये।
सत्य बोलने की आदत को मन में अटकाना चहिये॥
तास गंजफा खेल तमाशा सबको छिटकाना चहिये।
कथा पुराण संत संगत में दिलको बहलाना चहिये॥
मात पिता और गुरुकी आज्ञा सदा बजा लाना चहिये।
करे जो नर उपकार सदा गुण सुमराना चहिये॥
काम शुरू किया होय शुभ जल्दी निपटाना चहिये।
बुरे काम का होय विचार तो मनमें लटकाना चहिये॥
पाप कर्म हो जाय सदा फिर मनमें पछताना चहिये।
करके पुण्य का काम नाम उसका फिर बिसराना चहिये॥
विद्या अरु शुभगुण के कारण-धनको खरचाना चहिये।
अन्नदान समदान न दूँगा इसको बरताना चहिये॥

सदा सुपातर और दुखियों को भोजन करवाना चहिये।
पशु पच्छी सब जीव जन्तु को सुख नित पहुंचाना चहिये॥
घट घट में ईश्वर व्यापक है एक रूप माना चहिये।
अपनी जो नर करै बुराई-उसको सह जाना चहिये॥
काल खड़ा है सिर के ऊपर मन में डर पाना चहिये।
पर उपकार सदा करने को मन में हरखाना चहिये॥
सब से मिल जुल के दुनिया में उमरा गुजराना चहिये।
नित उठके प्रभात समय में ईश्वर को ध्याना चहिये॥
भोग विलास छांड़ दुनिया के मनको ठहराना चहिये।
ज्ञान सीख सतगुरू से रूप अपने को पहचाना चहिये॥
ब्रह्मा नंद विहाय भव सागर तर जाना चहिये।
हरिका नाम सुमिर नर प्यारे कभी भुलाना ना चहिये॥

॥ प्रार्थना ॥

निर्बल के प्राण पुकार रहे—जगदीश हरे २।
स्वासों के स्वर झनकार रहे—जगदीश हरे २॥
आकाश हिमालय सागर में पृथ्वी पाताल चराचर में,
यह मधुर बोल गुंजार रहे जगदीश हरे २।
जब दया दृष्टि हो पड़ती है—जलती खेती हरियाती है,
इस आस पै जन उच्चार रहे—जगदीश हरे २॥
दुख सुखों की चिन्ता है ही नहीं—भय है विश्वास जाय कहीं,
टूटे न लगा यह तार रहे—जगदीश हरे जगदीश हरे २।
तुम हो करुणा के धाम सदा—सेवक हैं राधेश्याम सदा,
बस इतना ही तो विचार रहे जगदीश हरे जगदीश हरे॥

❀ ॐ ❀

सुनो दूनो रूपकी शोभा, जाकी माया में जगत लोभा।
राम दशरथजी के लाला, कृष्ण नन्दजी के बृजबाला॥
राम कौशिल्या के प्यारे, कृष्ण यशोदा के नैन के तारे।
राम लक्ष्मण दोउ बीरा, कृष्ण बलदेव रण धीरा॥

राम फिरैं सरजू तीरा, कृष्ण अचवैं जमुना तीरा।
राम श्रीक्रीट राजै, कृष्ण मोरमुकुट सिरसाजै॥
राम कर धनुष बान सोहै, कृष्ण मुरली मधुर सोहै॥
राम मिथिला पुरी आये, कृष्ण बर्साने को धाये।
रामने ब्याही जनक प्यारी, कृष्ण वृष भानुकी प्यारी॥
राम बनवास को धाये, कृष्ण द्वारिका पुरी को छाये।
राम ने रावण को मारा, कृष्ण शिशुपाल संहारा॥
राम सबरी के फल खाये, कृष्ण भाजी विदुर खाये॥
राम गौतम तियातारी, कृष्ण द्रोपदि विनय धारी॥
राम सरभंग गति दीन्ही, कृष्ण कुवरी सरल कीन्ही।
रामने बांधा सेतु सागर, कृष्ण नख पर राख्यो गिरिवर॥
राम राजनीति से कीना, कृष्ण लीला में परवीना।
रामको तुलसी अति जाने, कृष्ण को सूर पहिचाने॥

॥ समुद्र में निकले हुए रत्न ॥

१—श्री २—मणि ३—रंभा ४—वारुणी ५—अमी ६—शंख ७—गज राज ८—धेनु ९—धनुष १०—शशि ११—उच्चै श्रवा १२—कल्प १३—धन्वन्तर १४ विस राजु।

॥ कवित्त ॥

भोरहिते भानु उदित समय, दधि लागि विलोरननंदकी रानी।
अस्तन पान किया, वह मोहन जाय गही कर सो जो मथानी॥
ताहि समय दधि दून भयो, अरु शेष सकान रमा अकुलानी।
इंद्र अनन्दित भे पिछले कृतभानु हँसे गिरजा सकुचानी॥

॥ कबीर के दोहे ॥

चलती चाकी देखकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटोंके बीच में जीवित बचा न कोय॥
चाकी तो चलती रही, कीला बाँधा कोट।
कोई २ साधूबच गये, पारि ब्रह्म की ओट॥

ख्याल कलयुग का रंगत खड़ी ।

मति सबकी लड़ गई नजर शुभ कर्म न आया कलयुग में ।
धर्म धूरमें मिला पाप पृथ्वी पर छाया कलयुग में ॥ टेक ॥
विप्रों से शूद्रों ने टहल करवाई कलयुग में ।
ऊँच नीच हो गये सभी ऊंच कहलाया कलयुग में ॥
पुरुष त्याग नारी घर वेश्या के बसाया कलयुग में ।
नारि पतिसे वैर पर पति ठहराया कलयुग में ।
पर विध्नी बहु तेरे नर देखे निरछाया कलयुग में ॥
धर्म धूरमें मिला पाप पृथ्वी पर छाया कलयुग में ॥१॥
पोथी कथा पुरान तान और ध्यान न पाया कलयुग में ।
पर निन्दा पर नारि परम रुचिपर धन भाया कलयुग में ॥
मसजिद मंदिर तोड़के मयखाना बनवाया कलयुग में ।
बुतखानों का नादानों ने मान घटाया कलयुग में ॥
चमार कोरी डोम संत का भेष बनाया कलयुग में ।
धर्म धूर में मिला पाप पृथ्वी पर छाया कलयुग में ॥२॥
पाखंडी से शुद्रों ने विप्रों से पैर पुजाया कलयुग में ॥
नीचों ने पढ़ वेद विप्र से वाद बढ़ाया कलयुग में ।
धर्म धूर को छोड़ अधरम बरसाया कलयुग में ।
साहों को आकर के चोरों ने धमकाया कलयुग में ॥
कुलवन्ती स्त्री ने क़स्बी का कार्य उठाया कलयुग में ।
धर्म धूर में मिला पाप पृथ्वी पर छाया कलयुग मे ॥३॥
वेद शास्त्र को मेट के निज २ मता चलाया कलयुग में ।
राजों ने रइयत को सताया कलयुग में ।
ज्वारी चोर लबार बहुत बाढ़े समुदाया कलयुग में ॥
ईश्वर का तेज भक्ति भूत प्रेतों को मनाया कलयुग में ।
गृहस्थ भूखों मरे नीच घर देखी माया कलयुग में ॥
धर्म धूरमें मिला पाप पृथ्वी पर छाया कलयुग में ॥४॥
झूठे घी गुण खाया चुगुल से चतुर कहाया कलयुग में ।
साँचे के घर फौंके धर्मी धक्का पाया कलयुग में ।

ऐसा अधर्म बढ़ा देख सो मन घबराया कलयुग में।
बशीनंद आनंद गुरुने ज्ञान लखाया कलयुग में॥
बाबूलाल खुश हाल ख्याल पर ख्याल सुनाया कलयुग में।
धर्म धूर में मिला पाप पृथ्वी पर छाया कलयुग में॥५॥

बजरंग सुता

धन २ महावीर बलवान, सुधि सीता की लानेवाले॥ सुधि सीता०
आज्ञा ले रघुवर की धायो, फिर तुम निकट सिन्धु के आयो।
फाँदे सिन्धु नहीं घबरायो, रघुवर काज बनाने वाले॥
हनुमत राम चरण चित्त लाई, फिर लंका की सुरत लगाई।
पहुँचे बिभिखन के घर जाई-ऐसे खोज लगाने वाले॥
विभिखन हनुमत निकट बुलाई, पूँछी कुशल केर रघुराई।
बोले हनुमत सुन ये भाई, हैं वो भी अब आनेवाले। धन २ महावीर०
अप जस त्याग मित्र जस लीजै कारज रामचन्द्रजी का कीजै।
सुधि सीता की हमको दीजै, हम हैं लौट के जानेवाले। धन २ महावी०
अब तुम अशोक वनको जाओ, दरसन सीताजी के पावो।
जाकर उनको धीर बँधावो। ऐसे धीर बधानेवाले।
धन २ महावीर बलवान सुधि सीता की लानेवाले॥२॥
करतारे गिरन्द धरिध्यान रखियो लाज मेरी भगवान।
मैं तो हूँ मूरख अज्ञान—गुण तेरा ही गानेवाले॥
धन २ महावीर बलवान सुधि सीता की लानेवाले॥३॥

आरती

जय जय कार कृपाकी जय कृपानिवास की जय।
सियावर रामचन्द्र की जय अयोध्या राम लला की जय।
पवन सुत हनुमान की जय उमापति महादेव की जय।
रमापतिरामचन्द्र की जय वृन्दावन श्रीकृष्णचन्द्र की जय।
बोलो भाई सब संतन की जय, अपने गुरु गोविन्द की जय।
जय सन्खा आरती जय जय सीता राम।

ॐ

नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगं—सीता समारोपितवाम भागम् ।
पाणौ महा शायक चारु चापं—नमामि रामं रघुवंश नाथम् ॥
गङ्गातरंग रमणीयजटाकलापंगौरी निरन्तर विभूषित बामभागम् ।
नारायण प्रिय मनङ्ग मदा पहारं–वाराणसीपुरपतिंभजविश्वनाथम्

ओ३म

धनि है तेरी कारीगरी करतार ।।टेक।।

जब निराकार और निर्विकार साकार बना दिया जग कैसे ?
जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया रचा मोक्ष का मग कैसे ?
क्या वस्तु लई देह जिससे भई फिर बना दिया रग रग कैसे ?
धार सबको रहा रम सबमें रहा फिर सबसे रहा अलग कैसे ?
जब सब में तू सब गुलों में बू सब रुहो की रुह सुभग कैसे ?
जब आपनि पादो पवन गृहीत्वा फिर कोई पकड़े पग कैसे ?
जब सृष्टिकर्ता भर्ता हरता धरता. वहता अन्न द्रुग कैसे ?
जब काशी कावे में न पता फिर आये बताया लग कैसे ?
वन पर्वत पृथ्वी नभ तारे सबको रहा तु कैसे धार ?
प्रभु धनि है तेरी कारीगरी करतार ॥ १ ॥

किये रंग विरंगे फूल और बादल रंग की रेंडी कहीं नहीं ?
किये सूरज जैसे चमकते.पदारथ चमक निराली कहीं नहीं ?
पत्ते पत्ते की कतरन न्यारी तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं ?
बरसे जब भर दे जल जंगल आकाश में सागर कहीं नहीं ?
दे भोजन चींटी से हाथी तक चढ़े दीख भण्डारे कहीं नहीं ?
दिन रात न्याय में फर्क पड़े नहीं तेरी लगी कचहरी कहीं नहीं ?
कर्मों का फल दे यथा योग्य मिले रू और रियायत कहीं नहीं ?
अखण्ड ज्योति अपार लीला किन्हूँ न पायो तेरा पार ?
प्रभु धनि है तेरी कारीगरी करतार ॥ २ ॥

न जाने किस विधि गर्भ में रहकर दे क्रीड़ा बालकपन को ।
फिर जाने जवानी आई कहाँ से कमी रही ना यौवन की ।

फिर वृद्धापन देकर दिखला दे सबको बनी सो एक दिन बिगड़ने की
कोई पिये भंग कामिनी किलोल करै कोई रो रो राख करै तन की
कोई पैसे पैसे को मुहताज कोई कोठी खोल रहा धन को।
मरुत भूमि कहीं टीले पर टीले कहीं कहीं हरियाली बन की
कहीं लाल सुरंगे जल से भरी कहीं चोटी चमक रही पर्वतन की
कहीं शरद ऋतु के झोंके बहे कहीं धूप और सर्दी घन की
कभी चैत मास घटा घिर आये बरसे बहादे जल धार।
प्रभु धनि है तेरी कारीगरी करतार ॥ ३ ॥
चाहे कितना बरतो न निपटै जब देने लगे इतना माल।
नहीं थे दिन रात कमावे फिर भी बना रहे कंगाल।
अदना से आला करै पल में जिस नर पर होवे तु कृपाल।
राजों का राज ताजों का ताज तुही महराज कालों का काल।
तू इतना जबर ना तेरी खबर मेरी सुन दिलवर मुझे कर निहाल।
रहूं तेरी शरण गहूँ तेरा चरण मत तू दे मरण हम तेरे लाल
हे सुख निधान रख मेरा मान दे शक्ति दान होकर दयाल।
दीन-बन्धु सुनो हम दीनन की हे प्रभु पतित उद्धार।
प्रभु धनि है तेरी कारीगरी करतार ॥ ४ ॥
तू अनन्त तेरी गति अनन्त तुझे देख संत कर योग ध्यान।
नहीं छाया धरै रंग इतने भरैन किसी को गिन सकता जहान।
ना जाने कहाँ सिखे जो दिखे नहीं चीटी के बना दिये नाक कान।
माया अनुगामी जीव के स्वामी अन्तर्यामी बल निधान।
सब जगह जोर नहीं तुम्हारी ओर सबके सिर मौर सबके प्रधान।
सच्चिदानन्द तू करुणाकन्द मैं महानन्द मुझे अपना जान।
तुही मित्र तुही सखा सनेही तुमही हो हमारे परिवार।
प्रभु धनि है तेरी कारीगरी करतार ॥ ५ ॥
जब चार वेद छः शास्त्र पुकारे सारे गुणों का सुमार नहीं।
जो करै सो ईश्वर आप करै किसी और की चाहत संहार नहीं।
जो करना चाहे कर गुजरै किसी काम में तू लाचार नहीं।
जो प्रेम करे उससे परिचय तेरे ऊंच और नीच की हार नहीं।

करि भक्ति रंक गले लपटे बिन भक्ति भूप से प्यार नहीं।
मस्ती राम दरवाजे खड़ा क्यों इसकी सुनत पुकार नहीं।
सखा स्वरूप इसे दे अपना अखंड खोल दे द्वार।
प्रभु धनि है तेरी कारीगरी करतार॥ ६॥

❀ गजल ❀

स्टेशन जिस्म है तेरा नब्ज की रेल जारी है,
पकड़ सकता नहीं कोई कि जब फारम निकलती है।
नहीं आता है जब तक तार उधर से लैन किलियर का,
करो दिल की सफाई फिर जरा फुरसत न मिलती है॥
टिकट नेकी का हो जिसके पास वह अन्दर निकलता है,
बगैरज टिकट के दुनियाँ खड़े ही हाथ मलती है।
बजा करती है सीटी रात दिन या मौत के लोगो,
बदों के वास्ते हरदम पुलिस टहेलती है॥
करे नेकी अगर जायद तो पाये दरजा भी अव्वल,
टिकट ले लो अभी कुछ देर है इञ्जन बदलती है।
गया बचपन जवानी में बजाई दूसरी घण्टी,
चलो जल्दी नही तीसरी घंटी उछलती है॥
उठा असबाब अपना हक से नासिक चढ़ो जल्दी,
नहीं तो बिछुड़ जावेंगे घड़ी उसकी टलती है॥
खड़े रह जावेंगे चुपचाप फाटक पर जो गाफिल हैं,
वह चलदी रेल है ज्यादा तो अब क्या पेस चलती है॥

॥ दादरा ॥

मन भावे हमें काशी की गली विश्वनाथ पद पूजा भली।
श्वास श्वास पर शिव दर्शन जहाँ सिद्धि विराजे थली थली॥
भैरवनाथ करत कोतवाली पाप ताप कर डाले मली।
शोभा सदन मदन छवि वारो जहाँ बसे हिमवान लली॥
जगदीशानन्द आनन्द जहाँ जम की कछू नाहीं चली।
मन भावे हमें काशी की गली॥

कवित्त

अंगमें विभूत गले मुंडन की मालनसे,
माथे बिराजे त्रिपुण्ड चण्ड आले हैं।
शीश पै तरङ्ग लेत गंगा महरानी जू,
नट वो जटन बीच झूमे नागकाले हैं॥
नन्दी सवारी कर डमरू त्रिशूल लिये,
भाँग के पियाले पियें डाल के मसाले हैं।
कहते जगदीशानन्द वास करते कैलास में
शंकर मतवाले सब देवन से निराले हैं॥

डिमिक डिमिक डिम डमरू बाजे प्रेम मगन नाचत भोला।
भाल चंद्र श्रीगंगा बिराजत हाथ भभूतन को गोला।
सिंगीनाद बजावत गावत लटक रहा बगली झोला।
नाग फनन सो करत आरती देवदेव गति अन मोला॥

कवित्त

ब्राह्मण पैठि पाताल छल्यो वलि ब्राह्मण साठि हजार को जारेव
ब्राह्मण सोखि समुद्र लियो अस ब्राह्मण क्षत्रिन के दल मारेव।
ब्राह्मण लात हनी हरि के तन ब्राह्मण ही यदु वंश उजारेव
ब्राह्मण सों जनि वैर करौ कोई ब्राह्मण से परमेश्वर हारेव।

❀ ॐ ❀
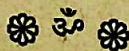
काया का पिंजड़ा डोले, एक साँस का पंछी बोले।
तन है गिरि मन है मन्दिर, परमात्मा है जिसके अन्दर॥
वह नैन है पाक समुन्दर, कायाका पिंजड़ा डोले।
वो पापी पाप को धोले, आने की सहादत है जाना॥
जाने से है क्या पछताना, काया का पिंजड़ा डोले।
दुनियाँ है मुसाफिर खाना अब जाग जगतमें का सोले॥
काया का पिंजड़ा डोले।

माँ बाप पती पत्नी के कोई भी नहीं किसी का।
काया का पिंजड़ा डोले ॥
झगड़ा ये है जीते जी का क्यों अज़ीज भेद को खोले।
काया का पिंजड़ा डोले ॥

कव्वाली

पूरण प्रेम लगा दिल में जब नेम का बन्धन छूट गया ॥
कोई पण्डित लोक बतावत हैं समझावत हैं जग रीतन को।
जब प्रीतम से दृढ़ प्रीत भई सब रीति का बन्धन टूट गया ॥
कोई तीरथ परसन जानत है कोई मन्दिर में नित दर्शन को।
घट भीतर देव दीदार हुआ तब बाहिर से मन रूठ गया ॥
कोई जीव कहे कोई ईश कहे कोई गावत ब्रह्म निरञ्जन को।
जब अन्दर बाहर एक हुआ सब द्वैत का परदा फूट गया ॥
सोई एक अनेक स्वरूप बना परिपूरण है जल में थल में।
ब्रह्मानन्द करी गुरुदेव दया भवसागर का भय उठ गया ॥
कामिल काम कमाल किया तैंने ख्याल से खेल बनाय दिया।
नहिं क़ागज कलम जरूरत है बिन रंग बनी सब मूरत है ॥
इन मूरत में एक सूरत है तैंने एक अनेक दिखाय दिया।
जल बूँद को लेकर देह रची सुर दानव मानव जीव जुदा ॥
सबके घट अन्दर मन्दिर में तैंने आप मुकाम जमाय दिया।
कोई पार न वार अधार बिना सब विश्व चराचर धार रहा ॥
बिन भूमि मनोहर महल रचा बिन बीज के बाग लगाय दिया।
सब लोकन के नित संग रहे फिर आप असंग स्वरूप सदा ॥
ब्रह्मानन्द आनन्द भयो मन में गुरुदेव अलेख लखाय दिया ॥

प्रभाती ताल दादरा।

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई।
राजा रानी वजीर, पंडित ज्ञानी सुधीर,
बड़े बड़े शूरवीर धरणि में समाई ॥ राम सुमर० ॥
ब्रह्मादिक देव वृन्द, तारागण सूर चंद,

सागर पर्वत बुलन्द सवन काल खाई ॥ राम सुमर०
सेना गढ़ राज पाट, बाजी गजराज ठाट,
नारी घरबार हाट छूटे पल माहीं ॥ राम सुमर०
झूठे सब कारबार, जग में हरि नाम सार,
ब्रह्मानन्द बार बार जप ले मन लाई ॥ राम सुमर०

॥ खमाव ताल ॥

सुनले प्रभु अरज हमारी, सुनले प्रभु अरज हमारी।
दीनदयाल सकल दुख भंजन, अशरण शरण परम सुखदायक,
जन्म मरण भव बन्धन हारी ॥ टेक ॥
तुम सकल जगत के स्वामी हो, घट घट के अन्तर्यामी हो,
सब विश्व चराचर गामी हो, जल थल गिरिवर नदिया सागर,
तुम्हरी रचना अचरज सारी ॥ सुनले प्रभु० ॥
कहीं सूरज चन्द सितारा है, कहीं बिजली का चमकारा है,
कहीं भुवन चतुर्दश न्यारा है, सुर नर पशुगण जीव चराचर,
सब जग पालक नित हितकारी ॥ सुनले प्रभु० ॥
कोई निगमागम गुण गाते हैं, कोई निर्गुण रूप बताते हैं,
कोई मुनिजन ध्यान लगाते हैं, तुम्हरा अन्त पार नहिं पावें
अचरज पर बल महिमा भारी ॥ सुनले प्रभु० ॥
तुम परमधाम अविनाशी हो, सत चित सुख रूप विलासी हो।
सब व्यापक विश्व विकासी हो, ब्रह्मानन्द करो करुणा,
अब शरण पड़ो मैं आय तुम्हारी ॥ सुनले प्रभु० ॥

❀ ॐ ❀

हुआ तंग मैं बहुत स्वांग चौरासी लच्छ भरते भरते।
नाक में दम हो गया जन्म से बार बार मरते मरते ॥
कितने गर्भवासों में कर चुके वास कुछ-इसको हमको खबर नहीं।
कितनी माताओं का दूध पी चुके हमें कुछ उसका असर नहीं ॥
कितने भाई मिलकर बिछुड़े उनका पता सुमार नहीं।
किन मुल्कों में गए रहे कब पाया इसका पार नहीं ॥

कौन कब सखा संगी थे कब हमने किये खेल थे।
जन्म किन २ योनियों में कब किये क्या फेल थे।
कब ये बिछुड़े वह हमारे जो कि संग सहेल थे॥
किसकी शादी गमी मान हँसते रोते लड़ते भिड़ते॥ नाक में०॥
कहाँ २ कब गए जायँगें कहाँ २ अब भाई।
खबर न हमको खाक की हम कौन २ काया पाई॥
कौन था किसका चचा कौन किसकी चाची ताई।
पता न इसका लगा कौन था बाप इसकी माई॥
मुद्दतों से काल के चक्कर में चक्कर खा रहे।
देखते दुनियाँ को आते जाते हम भी जा रहे॥
घूमते ही घूमते सब मौत के ढिग आ रहे।
फिर भी निश्चय जान कर दुनियाँ में पग फैला रहे॥
रहा न एकौ बाल शीश पर यम के जूते पड़ते॥ नाक में०॥
हजारों आये इस दुनियाँ में योगी मुनि ऋषि तप धारी।
हजारों आये महाराज सब चले गए बारी बारी॥
रहे नहीं रावण बाणासुर कुंभकरण से बल धारी।
चले गए हैं जरासध औ कंस बड़े अत्याचारी॥
हो गये रुस्तम हजारों पहलवान शूरवीर।
बड़े २ विद्वान भी शाह भो एकदम लाखों हुए फकीर॥
बड़े २ पूँजीपति अपनी पूँजी करके हुये अमीर।
मौत से कोई न छूटा खा गई सबको अखीर॥
धनवन्तरी से वैद्य हजारों गये तीन करते करते॥ नाक में०॥
जो आया है सभी जायंगे कोई नहीं रहने वाला।
तू फिरता है किस घमंड में समझ देख मनमें लाला॥
कमा ले नेकी जगमें आकर क्यों करते गड़बड़झाला।
कोई दिन इस का मेहमान चलेगा यहाँ से मुँह करके काला॥
हो के तंग दुनियाँ से अर्ज करता हूँ मैं।
लीजिये अब तो खबर सिर चरण में धरता हूं मैं॥

झोंकते झक मारते मुद्दत से दुख भरता हूँ मैं।
कर्म के अनुसार आज खुद इस कैद में पड़ता हूँ मैं।
हुआ आर्ज बलदेव गर्भ आशय के बीच सड़ते सड़ते।
नाक में दम हो गया जन्म से बार बार मरते मरते॥

॥ गजल ॥

तेरी शरण में आयके फिर आश किसको कीजिये॥ टेक॥
नहिं देख पड़ता है मुझे दुनियाँ में तेरी शान का।
गंगा किनारे बैठकर किस कूप का जल पीजिये॥ तेरी०॥
हरगिज नहीं लायक हूँ मैं गरचे तेरे दरबार का।
मेरी खता को माफकर दीदार अपना दीजिये।
पतित पावन नाम सुन के मैं शरण तेरी पड़ा॥
सफल कर इस नाम को अपना मुझे कर लीजिये।
मिलता है ब्रह्मानन्द जिसके नाम लेने से सही॥
ऐसे प्रभु को छोड़ कर फिर कौन से हित कीजिये।
जो भजे हरि को सदा सोई परम पद पायेगा। टेक॥
देह के माला तिलक अरु छाप नहिं किसु काम का।
प्रेम भक्ति के बिना नहि नाथ के मन भायगा॥ जो भ०॥
दिलके दर्पण को सफा कर दूर कर अभिमान को।
खाक हो गुरुके कदम की तो प्रभु मिल जायगा॥ जोभ०॥
छोड़ दुनिया के मजे सब बैठकर एकान्त में।
ध्यान धरि हरिके चरणका फिर जनम नहिं आयगा।
दृढ भरोसा मन में करके जो जपे हरि नाम को॥
कहता है ब्रह्मानन्द ब्रह्मानन्द बीच समायगा॥ जो भ०॥
देख ले नजरों से प्यारे ईश का दरबार है॥ टेक०॥
भूमी गलीचा है बिछा आकाश तम्बु सुहावना।
नदिया फुवारे चल रहे पवन-पवन झूले सदा॥
सागर सरोवर शोभते सब पर्वतों की दीवार है।
न्यायकारी आप ईश्वर जीव लोक सभा भारी॥

राजा व रंक समान से सुनता सभी की पुकार है।
स्वर्गभूमि इनाम सुन्दर नारक नेल जगा बनी॥
ब्रह्मा नन्द मिले सभी फल कर्म के अनुसार है।
ज्ञान देव गुरु देव ने मेरे दिल का भ्रम मिटा दिया॥
जाता था देखन को जिसे मथुरा बनारस द्वारिका।
सोई चेतन देव को घट में मेरे दिखला दिया॥
इस नजर से जगत को मै देखता था जुदा जुदा॥
जीव ढून, अनेक में मुझे एक रूह बता दिया।
जगत सांचा मान के फिरता थां में भटका हुआ॥
स्वपने समान लिचार के सब नाश रूप जता दिया।
सुख दु:ख भूख पियास जीलन मरण धर्म शरोर को॥
ब्रह्मानन्द स्वरुप को करके जुदा दरसा दिया।

गजल।

जोगम का इकरार था तुम्हें याद हो के न याद हो॥
उलटे वदन से लटकना फिर लख चौरासी भटकना।
तब सोच कर सर पटकना, तुम याद हो के न याद हो॥
पिछले जन्मका सभारना, सब कर्मका वो विचारणा॥
फिर ईश ईश पुकारना, तुम्हें याद हो के न याद हो।
विषयों को दिल से हटावना, हरि के चरण में लगावमा।
किसी जीव को न सतावना, तुम्हे याद हो के न याद हो।
उस बात का विसरावना दुनिया की मौज उडावना॥
ब्रह्मानन्द फिर दुख पावना तुम्हें याद हो के न याद हो।
जो गर्भ का इकरार था तुम्हें याद हो के न याद हो॥
जो ईश का उपकार था तुम्हें याद हो के न याद हो।
करि गर्भ में तेरी पालना फिर, दुख से बाहर निकालना॥
कुचियों में दूध का डालना, तुम्हें याद हो के न याद हो।
सूरज वा चाँद सितार है, जल पवन भोग अपार है।
तेरे वास्ते यह बहार है, तुम्हें याद होके न याद हो॥

नर जन्म यह बहु काम का, तुझको दिया बेदाम का।
अब भजन उसके नाम का, तुम्हें याद होके न याद हो॥
हरि के भजन बिनु बेवफा, तुझको मिले न कभी वफा।
ब्रह्मानन्द का कहना सफा, तुम्हें याद होके न याद हो॥ २९॥

जो नाम का परताप है, तुम्हें याद होके न याद हो।
जब दैत्य चाबुक मारिया, प्रह्लाद नाम उचारिया।
नख से असुर को विदारिया, तुम्हें याद होके न याद हो॥
ध्रुव को पिता निकाल दिया, हरिनाम में मन ला दिया।
उसे अचल धाम दिला दिया, तुम्हें याद होके न याद हो॥
गजराज पै विपता पड़ी, मन में जपा जो हरी हरी।
ग्रह मार के मुकती करी, तुम्हें याद होके न याद हो॥
द्रुपदी की लाज उतारिया, जप कृष्ण कृष्ण पुकारिया।
ब्रह्मानन्द चीर बधारिया, तुम्हें याद होके न याद हो॥ ३०॥

जो मौत का दिन आयगा, तुम्हें याद होके न याद हो।
दुनियाँ में दिल को मिला दिया, हरि के भजन को भुला दिया।
मनुषा जनम को रुला दिया, तुम्हें याद होके न याद हो॥
जब रोग आय सतायगा, खटिया में तुमको लिपटायगा।
कोई कार काम न आयगा, तुम्हें याद होके न याद हो॥
सुत मीत बाँधव नारियाँ, धन माल महल अटारियाँ।
तेरी छूट जाँयगी सारियाँ, तुम्हें याद होके न याद हो॥
जमदूत लेकर जायगा, तुझे नरक बीच गिरायगा।
ब्रह्मानन्द फिर पछतायगा, तुम्हें याद होके न याद हो॥ ३१॥

गये राम तेरे नाम का मुझको अधार है।
अंधे को जैसे लाकड़ी तन का सहार है॥
तप योग यज्ञ और कर्म बन पड़े नहीं।
कलियुग में तेरे नाम की महिमा अपार है॥

लिखने से राम नाम के जल में शिला तरी।
कैसे मनुज न जा सके भव सिन्धु पार हैं॥
शबरी के याद नीर से सरवर विमल हुआ।
छूने से चरण के तरी गौतम की नार है॥
करके भरोसा मनमें राम नाम सुमर ले।
ब्रह्मानन्द मिटे जन्म मरण बार बार है॥३२॥

ईश्वर तेरे दरबार की महिमा अपार है।
बंदा न सके जान तेरा क्या विचार है॥
पृथ्वी जलों के बीच में किस आसरे खड़ी।
सूरज व चाँद घूमते किसके अधार हैं॥
सागर न तीर लांघते सूरज दहे नहीं।
चलती हवा मर्याद से किसके करार है॥
भूमि बिछा है विस्तारा नदियों में जल भरा।
चलती हवा दिन रात में किसके अधार है॥
फल फूल अन्न शाक कंद मूल रस भरे।
घृत दूध दही खान पान की बहार है॥
पिता है तु दयालु तेरे बाल हम सभी।
ब्रह्मानन्द तुझे धन्यवाद बारबार है॥३३॥

ईश्वर तेरा स्वरूप विश्व का अधार है।
तेरे हुक्म से हो रहा सब कारो बार है॥
सूरज व चन्द्रमा सदा उगते हैं नेम से।
दिन रात घड़ी पलक काल का शुमार है॥
पड़ती है धूप शीत वृष्टि वक्त पै सदा।
फलते हैं वृक्ष लता अपना बारबार है॥
बालक जुवान वृद्ध पणा होत काल से।
मरणा न देह का कोई सके निवार है॥

तप योग यज्ञ जतन सभी कठिन है बड़े।
ब्रह्मानन्द जगत बीच तेरा भजन सार है॥ ३४॥

———

॥ गंगा जी ॥

मंदिर मंदिर रात दिना करि दर्शन देव सेवै सुख लूटे।
एकादशी नवमी नितही, व्रत कै चरणामृत घूँटन घूटे॥
दूध अहार किये तजि अन्न, दिये बहु दान पै मान न टूटे।
शोंचि कहै 'हरिशारद' यों परदोष रहे पर दोष न छूटे॥
प्रेम प्रयोधि न हायों नहीं, नहिं नेम निवाहि सुकम प्रचारे।
धार्यो विवेक विराग नहीं, नहिं ज्ञान के साधन पास हमारे॥
देव आरधना चेत नहीं, चित चिंतित विभ्रम विगारे।
भागीरथी हम दोष भरे, पै भरोस यही जो परोस तिहारे॥
अमृत सागर भरा सभी कुछ, तुलसी कृत रामायण में।
एक बूँद मिल गया उसी को, महिमा गाऊँ जन जन में॥
विवरण विमल विचार पढ़ो पुनि, शब्द समझ कर मन मन में।
ज्ञान रूप श्री राम मिलेंगे उसी समय पर दरशन में॥

॥ गाना ॥

जमाना रंग बदलता है।
रोज सुबह को दिन चढ़ता है, शाम को ढलता है॥
आज हुआ है जहाँ में कोई, शाहों का भी शाह।
कल को वह ही कौड़ी कौड़ी को, हो रहा तबाह॥
बिगड़ कर कोई संभलता है॥ जमाना रंग बदलता है॥
बड़े बड़े हो गये जहाँ में राजा और फकीर।
खाली हाथों आये थे, सब खाली गये अखीर॥
वक्त टाले नाहीं टलता है॥ जमाना० ॥
बहु तेरे खूबरू जहाँ में होकर माला माला।
अन्त समय में हाथ झाड़ते गये काल के गाल॥
यहाँ वस किसका चलता है॥ जमाना० ॥

अच्छा और बुरा जैसा हो रह जाता है नाम।
इसीलिये दुनियाँ में नेकी करलो राधेश्याम॥
नहीं तो वक्त निकलता है॥ जमाना०॥

॥ ज्ञान अंग ज्ञान की चौसर ॥

मन खेलो ज्ञान की चौसर, नहिं मिलेगा ऐसा अवसर।
सत रज तम के पाँसा जानो, पचीकरण पचीसी।
बुद्धि इन्द्रिया पंच पराना, सो रागो जगीसी॥ मनखे०॥
काम क्रोध अरु लोभ मोहिं, इन चारो रंग की गोटैं।
एक से एक प्रबल हैं जानो, करैं नई नित चोटैं॥ मनखे०॥
तृष्णा भरै अनारी मनुआ, उल्टा पाँसा खेलैं।
जोई जोइ दाँव पेरे पासा महँ, सोइ सोई गोटै मेलैं॥ मनखे०॥
बहुत जन्म यों खेलत बीते, याहूँ जन्म गवावैं।
बाजी कबहुँ जीत नहिं पावें, गोटैं पिट जावें॥ मनखे०॥
करम जोग जब मिलै खेलाड़ी, पाँसा खेल सिखावें।
सब गोटैं लाल होंय जब, तब चार पदारथ पावें॥ मनखे०॥
रे मन मूढ़ अधम अज्ञानी।
झूठी माया भजन साँची मानत, ऐसी मत बौरानी।
पारस तज कौड़ी को हेरत, सूझत लाभ न हानी॥ रे मन०॥
वारु महल खसत हरि छिन पल, तापै वस अभिमानी।
वालि विलोय चहत घृत काढ़न, मृग तृष्णा ते पानी॥ रे मन०॥
वेद पुराण सत्य नहिं मानत, जानत झूठ कहानी।
गुरु शिक्षा पर ध्यान धरत नहिं, करत बात मन मानी॥ रे मन०॥
भ्रमत योनि चौरासी लखमा, भोग्यो चारों खानी।
अबकी चूकि बहुर सोइ दुर्गत, भुगतत खैंचा तानी॥ रेमन०॥
अजहुँ चेत छाड़ि छल हरि भजु, तजि निज बान पुरानी।
वासुदेव भगवन्त भजन बिनु, तरत न कोऊ प्रानी॥ रेम०॥

श्री

नं न मानं न च याद विन्दु, रूपन्न रेखा न च धातुरन्यम्॥
टानहष्टं श्रवणं न आश्रयम्, तस्मै नमो ब्रह्म निराश्रयोऽयम्।

वृक्षो न मूलं न च वीज पुष्पम्, शाखा नपत्रं न च बिल्व पत्र
पुष्पं न गन्धं न फलं न छाया, तस्मै नमो ब्रह्म निरञ्जनोऽ
न वेद शास्त्रं न च शौच सन्ध्या, मन्त्रन्न जाप्यं न च ध्यान ध्ये
होमं न यतो न,च वेद पूजा, तस्मै नमो ब्रह्म निरञ्जनोऽय
अधो न ऊर्ध्वं न शिवो न शक्तिः, पुमान्न नारी नच लिङ्ग मू
न विष्णुर्न ब्रह्मा नच देव रुद्रः, तस्मै नमो ब्रह्म निरञ्जनोऽय
अखण्डं न खण्डं न च दण्ड दण्डम्, कालो न देव्यं नगुरुर्न शि
न ग्रहो न तावा न च मेघ माला, तस्मै नमो ब्रह्म निरञ्जनोऽय
नश्वेतं न न च रक्त रेतम्, हेमं न रोप्यं न च वर्ण वर्णम् ।
चन्द्रार्क राहो रुदयो न चान्तम् तस्मै नमो ब्रह्म निरञ्जनोऽयम् ॥
स्वर्गे न पंक्ति नगरे न क्षेत्रे, जातेर तीतं न च भेद भिन्नम् ।
नाहं न तत्वं न पृथक पृथक्त्वा, तस्मै नमो ब्रह्म निरञ्जनोऽयम् ॥
गम्भीर दीप्तं न विर्वाण शून्यम्, संसार सारं न च पाप पुण्यम् ।
व्यक्तं न चाक्तं न च भेद भिन्नमू, तस्मै नमो ब्रम्ह निरञ्जनोऽयम् ।

दोहा-काशी विधि वश तनु तजै, हठि तनु तजै प्रयाग ।
तुलसी जो फल सो सुलभ, राम नाम अनुराग ॥
हम लखि हमहि हमार लखि, हम हमार के बीच ।
तुलसी अलखहिं काल खहि, राम नाम जपु नीच ॥
जे जन रुखे विषय रस, चिकने राम सनेह ।
तुलसी ते प्रिय राम को, कानन बसै कि गेह ॥

ॐ

दोहा—अतिथि जो आवे द्वार पर नहि पावे सन्मान ।
नसै पुण्य शत जन्म के कह स्कन्द पुरान ॥

भजन करत कन्या भली भलो न जग में पूत ।
छेरी के गल थन बुरे जिन में दूधन मूत ॥

विश्व नाथ दर्शन केरा, नित गंगा स्नान।
समय बचे तामे करो, गोविन्द के गुण गान॥
बस इतनो ही जान तू भव तरिवे को ज्ञान।
तीरथ में काशी बड़ी देवन में महदेव।
नदियन में गंगा बड़ी करि परीक्षा लेव॥
इन तीनों को ही भजो प्रेम सहित लव लाय।
तनक कथा तन में भई कहे हाय बड़ शोक॥
होश हवा हो जायेंगे जब देखे जम लोक।
आज नहीं तो कल वहाँ जाना पड़े जरूर॥
शिव नारायण वहाँ का करू प्रबन्ध भर पूर।

———

तुलसी वारि न याद कर पग ऊपर तत शीश॥
मृत मण्डल में आयके, भूलि गये जगदीश।

———

सुत दारा अरु लक्ष्मी पापिव के घर होय॥
सन्त समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ होय।

———

अकबर बादशाह जब श्री गोस्वामी तुलसीदास जी को कैद में रख दिये थे तब उन्होंने यह कवित्त कहा है—

कानन भूधर वारि वयारि महा विषय व्यधिद्वा अरि घेरे।
संकट कोटि जहाँ तुलसी सुत मातु पिता सुत बन्धु न नेरे।
रखि हैं राम कृपालु तहां हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे।
नाग रसातल भूतल में रघुनायक एक सहायक मेरे।

श्री गोस्वामी तुलसी दास जी को काशी जी में जब लोगों ने उपहास किया है तब यह कहे हैं।

धूत कहौ अवधूत कहौ अब रजपूत कहौ, जुलाहा कहौ कोऊ।
काहू के बेटी से बेटा न व्याहब, काहु कि जात बिगारन सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को, जाको रुचै सो कहौ अरु सोऊ।
मांगि के खइबो मसती के सोइबो लइबे को एक न दइबे को दोऊ।

श्री गोस्वामी तुलसी दास जी काशी में अन्तिम टाइम में कहे
कुंकुम रंग सुअंग जितौ, मुख चंद सो चन्दन होड़ परी है।
बोलत बोल समृद्ध चुवै, अवलोकत सोच विचार हरी है।
गोगो किंगग बिहंगिनि मेष कि, मंजुल मूरति मोद भरी है।
पेशु समीप पयान समै सब, सोच विमोचन क्षेम करी है।
श्री गोस्वामी तुलसी दास जन्म :—

दोहा—पन्द्रा सौ चौवन मिषे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी धरेव शरीर॥

अन्तिम समय :—

सम्वत् सोलह सै असी असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला निज शनि तुलसो तज्यो शरीर॥

* कृष्ण नाम सो नाम *

नर जन्म उसका व्यर्थ है जो प्रेम का भूखा नहीं।
जो प्रेम का करता निरादर सुख कभी पाता नहीं॥
जो तू आया जगत में जगत सराहे तोय।
ऐसी करनी करि चलो जग में हँसी न होय।
एक घरी आधी घरी, आधी मे पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की, कटै कोटि अपराध।
अरव खरव लौ द्रव्य है उदय अस्त लौ राज।
तुलसी जो निज मरण है तौ आवे केहि काज।

॥ हरि हरि बोल ॥

जग असार में सार रसना हरि हरि बोल।
तन से होत प्राण जग न्यारे आध घरी कोई नहिं राखे।
घर ते देत निकाल॥ रसना हरि हरि बोल॥
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला और अपनो नार—
वृथा समय बिताय रहे हो मन मन्दिर में पड़े पड़े।
हरि बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी।
कलिकाल कुठार लिये फिरता तन मन से चार कि लीन मिली।
जपले हरि नाम अरी रसना फिर प्रात समयामे हिली न हिली। हरि

❀ द्वितीय भाग समाप्त ❀

अथ तृतीय भाग

आनन्द जीवन

तृतीय भाग

संग्रहित

देखकर जनवृन्द के छल छन्दमय आचार को।
उपदेश के कुछ कूट हैं अङ्कित उचित व्यवहार को॥

श्री जगदीशानन्द

❀ ॐ ❀

जैसे पिता का अंश पुत्र है उसी प्रकार ब्रह्म का अंश जीव सच्चिदानन्द स्वरूप शुद्ध बुद्ध और युक्त है जैसे पुत्र यदि पिता का सम ही पात्र होता है जीव अपने पिता रूप ब्रह्म स्वरूप को न भूले तो सदै सुखी रहे परन्तु जीव परमात्मा को भूल कर विषय भोग द्वारा होना चाहता है संसार रूप जन्म मरण चक्र में पड़कर घटीयन्त्र समान नीचे ऊपर घूमता रहता है संसार में करम तृप्त नही हो सक जहाँ जन्म साथ में लगे हुये हैं वहां सुखी होना असम्भव ही ना है सुख कहाँ है दुख क्यों है सफल चराचर तुचर।

जगदीशानन्द–

श्रीकृष्णगोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेवा ।
जिह्वे-पिवस्वामृतमेतदेव-गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
ॐ क्लीं कृष्णाय-गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।

दोहा—पाप छिपाये नहिं छिपै, जिव लाहसुन की बोय ।
घरमें खाय छिपाय के, प्रगट सभा में होय ॥

॥ श्री ॥

शिखरिणी जगदम्बा जी का क्षमा स्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुति महो ।
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथा ॥
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाते विलपनम् ।
परं जाने मातस्त्वदनुशरणं क्लेश हरणम् ॥ १ ॥

विधेर ज्ञानेन द्रविण विरहेणालसतया ।
विधेया शक्त्या तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ॥
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे ।
कुपुत्रो जायेत् कचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः ।
परं तेषां मध्ये विरल तरलोऽहं तव सुतः ॥
मदीयोऽयं त्यागस्समुचितमिदं नो तव शिवे ।
कुपुत्रो जायेत् कचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥

जगन्मातर्मातस्तव चरण सेवा न रचिता ।
न वा दत्तं देवि द्रविण मपि भूयस्तव मया ॥
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे ।
कुपुत्रो जायेत् कचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥

परित्यक्ता देवा कति न तव सेवा वशतया ।
मया पञ्चाशीतेरधिक मपि नीते तु वयसि ॥
इदानीमप्यन्तम्तव यदि न माता सकरुणम् ।
निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥

श्वपाको जल्प पाको भवति मधुपाकोपं गिर ।
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटि कनकैः ॥
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फल मिदम् ।
जनः को जानी ते जननि जपनीयं जयविधौ ॥ ६ ॥
चिदा भस्माल्लेपः गरल मशनं दिक् पर धरो ।
जटा धारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशु गतिः ॥
कपालो भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीम् ।
भवानी त्वद् पाणी ग्रहण परिपाटी फलमिदम् ॥ ७ ॥
न मोक्षस्याकाङ्क्षा न च विभव वाञ्छा चपिनमे ।
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुशेच्छा पिन पुनः ॥
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै ।
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥ ८ ॥
नाराधितासि विधिना विविधोऽपि चारैः ।
किं रूक्ष चिन्तन परैर्न कृतं वचोभिः ॥
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मयि नाथे ।
धत्से कृपा मुचित मम्बपरं तवैव ॥ ९ ॥
आपत्सु मग्नः स्मरणन्त्वदीयम् ।
करोमि दुर्गे करुणार्णवेसि ॥
नैतच्छठ त्वं मम भावयेथाः ।
क्षुधा तृषार्ताः जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किम् ।
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ॥
अपराध परम्परा वृत्तम् ।
नहि मातस्समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥
मत्समा पातकी नास्ति । पापघ्नी त्वत्समा नहि ॥
एवं ज्ञात्वा महादेवि । यथायोग्यं तथा कुरु ॥ १२ ॥

नित्य-प्रार्थना

समस्त हिंदुओं की एक प्रार्थना, एक ही समय पर, सूर्यास्त के समय १४ मिनट तक सामूहिक रूप से सूर्य की ओर मुख करके होनी चाहिए। अंत में दो-दो बार पांच जयकार लगाकर विसर्जन करना चाहिए।

यह सुविधा न होने पर सूर्यास्त होते समय ७ मिनट तक प्रत्येक गृह में नित्यप्रति माता, बालक तथा परिवार के समस्त लोगों के साथ प्रार्थना कर ली जाया करे अथवा अकेले होने पर (मैदान, बाजार, दूकान) जिस स्थान पर, जिस दशा में भी हों नियम की पूर्ति अवश्य कर ली जाय।

—पूज्यपाद महामना मालवीयजी ।

प्रथम प्रार्थना

जय जय सुरनायक जन-सुख-दायक प्रनतपाल भगवंता।
गो-द्विज-हितकारी जय असुरारी सिन्धु-सुता-प्रिय कंता॥
पालन सुर-धरनी अद्भुत करनी मरम न जानै कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥
जय जय अविनासी सब घटवासी व्यापक परमानन्दा।
अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुन्दा॥
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनि वृन्दा॥
निसि बासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानन्दा।
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविधि बनाई संग सहाय न दूजा॥
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भगति न पूजा।
सो भव-भय-भंजन मुनि-मन-रंजन गंजन विपतिबरूथा॥
मन बच क्रम बानी छाँड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा।
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना॥
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव-वारिधि मंदर सब विधि सुन्दर गुन-मंदिर सुख-पुञ्जा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद-कुंजा॥

द्वितीय प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दयानिधे ! कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर-सेवा, पर-उपकार में हम जग-जीवन सफल बना जावें।
हम दीन-दुखी निबलों-विकलों के सेवक बन सन्ताप हरें।
जो हैं अटके, भूले-भटके, उनको तारें, हम तर जावें।
छल-दम्भ, द्वेष, पाखण्ड, झूठ, अन्याय से निशदिन दूर रहें।
जीवन हा शुद्ध सरल अपना शुचि प्रेम सुधारस बरसावें॥
निज आन कान मर्यादा का प्रभु ध्यान रहे, अभिमान रहे।
जिस देश-जाति में जन्म लिया, बलिद न उसी पर हो जावें॥

दोहा—मेढ़ा कौआ छुद्र जन, भैसा और बिलाव।
इनसों मत विश्वास करि पीछे धोखा खाय॥
दुष्ट त्यागिवे योग्य है, क्यों न होय विद्वान।
ज्यों मणि पारो सर्प हूं महा भयंकर सान॥
चाहे होय विरक्त त्रिय शत्रु होय चह सन्त।
है इनके विश्वास से, निश्चय जीवन अन्त॥
दान शूरता शुद्धि चित सुख दुख भव समान।
प्रेम सत्यता चतुरता, मित्रन के गुण जान॥

जगदीशानन्द—

कुंडलिया

क्या सोवे नर वावले कर मालिक से मेल।
बार बार मरने पर ऐसा खेल न खेल॥
ऐसा खेल न खेल फेल ये है शैतानी।
दिनहूं में न दिखाय अरे उल्लू की नानी॥
रतन जन्म बलदेव मोल माटी के खोये।
कर मालिक से मेल नींद में अब क्या सोवे॥

दो दिन का मेला यहाँ समय देख शैतान।
सौदा कर ले सोच कर मत होवे हैरान॥
मत होवै हैरान देख दुनिया की रंगत।
कर ईश्वर का ध्यान और साधौ की सङ्गत॥
कछु न संग ले जाय जाय बलदेव अकेला।
समझ देख शैतान जगत दो दिन का मेला॥

॥ श्री ॥

शयन करने के समय इस ध्यान को अवश्य करें
हे अर्जुन है पवन सुत द्वय शिव सुत भय राम।
आस्तिक गंगा गरुड गिरिजा गुरु हरि नाम।
शयन समय सुमिरन करै पद्म नाम नर कोय।
अग्नि चौर अरु स्वप्न भय ताको कबहूँ न होय।

॥ मंत्र ॥

ॐ क्लीं देव की सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणङ्गतः॥
इस मंत्र की जप संख्या कम से कम ३६००००० लक्ष परिमित आवश्यकीय है।

विश्वेश्वरी प्रमाण

अन्नं ब्रह्म रसो विष्णु भोक्ता देवो महेश्वरः।
एवन्ध्यात्वा द्विजो भुंक्ते सोऽभदोषैर्नलिप्यते॥

अथ गोलक योगः

सप्तैग्रहा पदै कस्था गोल योगात्तथा भवेत्।
दुर्भिक्षं राष्ट्र पीडा च तस्मिन योगे न संशयेः॥
श्री भगवान् विष्णुजी नारद के प्रति कहते हैं उस समय जब कि: ऋसि नारद जी को मोह हुआ था वैषयिक।

जपहु जाइ शङ्कर शतनामा।
होई तुम्हार परम कल्याना॥

गायत्रीवेदजननीगायत्रीपापनाशिनी । गायत्र्यास्तू परं नास्ति-दिवि चेह च पावनम्—

प्रातःकालेब्रह्मरूपा	मध्याह्नकाले विष्णुरूपा	सायंकालेशिवरूपा
चार मुख से	विष्णु रूपा	नन्दीपर
हसं पर	गरुड़ापर	सवारी
सवारी	सवारी	

॥ ब्राह्मणतिलक मन्त्र ॥

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च ।
जग द्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥

॥ यजमान रक्षाबन्धनमन्त्र ॥

येनवद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामनुवध्नामि रक्षेमां चलमा चल ॥

॥ लेखनी पूजन ॥

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमा माद्यां जगद् व्यापनीं वीणा पुस्तक धारणीमभयदां जाड्यान्धकारा पहाम् । हस्तेस्फाटिक मालिकां विदधतीपंद्मासने संस्थितां वंदे ताम् परमेश्वरीं भगवतींबुद्धिप्रदाम् शारदाम् ॥ लेखिन्ये नमः ॥

प्रश्न—सर्व लोक में जय जय का किसकी होती है ।

उत्तर—जो ५ देवी तथा दो देवताओं की पूजा करता है ।

प्रश्न—५ देवी और दो देवता कौन हैं सो कहो ।

उत्तर—१ पृथ्वी २ गऊ ३ विद्या ४ दया ५ भाई भक्त अर्थात् सम्पूर्ण जीवों को भाई समझे सबसे प्रेम भक्ति का व्यवहार करे देवता १ गुरुदेव २ सूर्यदेव का पूजन करो ।

प्रश्न—शत्रु रहित कौन है ।

उत्तर—जो पुरुष क्षमावान है उसका कोई शत्रु नहीं ।

प्रश्न—फिक्र से कौन बचा है ।

उत्तर—जो जुआ चोरी आदि से लिप्त नहीं होता कर्ज आदि नहीं करता वह ही बचा है।

प्रश्न—संसार में उत्तम दान कौन है।

उत्तर—अन्न दान वस्त्र दान अभय दान ज्ञान दान वेदी दान उत्तम हैं।

प्रश्न—भूलना क्या चाहिये।

उत्तर—अपनी बड़ाई तथा दूसरे अवगुणों को भूलना चाहिये।

प्रश्न—इससे क्या लाभ है।

उत्तर—अच्छे पुरुष के गुण आदि कहने से बुद्धि स्वच्छ मार्ग का अनुसरण करती है।

प्रश्न—बल बुद्धि ठीक रखने का क्या उपाय है।

उत्तर—ब्रह्मचर्य पालन, गौ की सेवा, सत्यवादी होना व दयावान पुरुषों का संग करना।

प्रश्न—सन्तों में क्या क्या होना आवश्यक है।

उत्तर—सन्तोष, वैराग्य, समता, विचार शक्ति आत्मज्ञान सत्य उपदेश करने की शक्ति धनमान की तथा नाम की अनिच्छा क्षमा ये आवश्यक हैं।

प्रश्न ब्राह्मण में क्या क्या बातें होनी आवश्यक है।

उत्तर—विद्या सत्यता, पवित्रता, सन्तोष, शील शान्ति गऊ व विद्या की सेवा करना ये आवश्यक हैं।

प्रश्न—छत्रिय में क्या क्या होना उपयुक्त है।

उत्तर—हिम्मत, वीरता, नीति, आचरण, विद्या, प्राप्ति के दसवें हिस्से का दान ये आवश्यक हैं।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुर प्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय,
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।

तुलसीदास का वाक्य

नारि मरि घर संपति नासी, मुड़ मुड़ाय भये सन्यासी।
ये विप्रन से पाँय पुजावे। उभय लोक परलोक नशावै।
विप्र पुजिये सकल गुणहिना। और शुद्र न दूजै वेद प्रवीना।

प्रश्न—वैश्यों में क्या क्या होना आवश्यक है।

उत्तर—लक्ष्मी, मधुरवाणी, सच्चा कारवार, कार्य को अधिक बढ़ाने की शक्ति परमार्थ में प्रीति व गऊ की सेवा करना परमावश्यक है।

प्रश्न—शूद्र में क्या २ होना आवश्यक है।

उत्तर—सबसे प्रेम भक्ति सदा नम्रता और सचाई

प्रश्न—स्त्री मे क्या २ होना उपयुक्त है।

उत्तर—पतिव्रता, लज्जा, कम बोलना, मधुर भाषण, विद्या उपदेश द्वारा बालक सुधार व गृह कार्य का पूरा २ ज्ञान होना आवश्यक है।

प्रश्न—अशुद्ध क्या चीज है

उत्तर—अपना देह जो शुद्ध पदार्थ को अशुद्ध बनाता है।

प्रश्न—अखण्ड और शुद्ध क्या है।

उत्तर—जो सर्व व्यापक चेतन आत्मा है जो अखण्ड है शुद्ध है परमात्मा का नाम शुद्ध अमर है।

प्रश्न—देश २ में किस के मकान हैं

उत्तर—जो पदेशियों का सत्कार करता है व अन्न प्रेम दान करता है।

प्रश्न—बहादुर कौन है

उत्तर—जिसने क्रोध लोभ, मोह अहंकार काम तथा इन्द्रियों को जीता है।

प्रश्न—नाम संसार में किसका होता है

उत्तर—जो लोग तथा क्रोध का परित्याग कर एक समान देखे।

प्रश्न—नीच जाति कौन है।

उत्तर—जिसके कर्म नीच है वही नीच जाति का माना जाता है अर्थात् जिसने अपने कर्मों का परित्याग किया है।

दो०—जानि राम सेवा सरिस, समुझि हृदय अनुमान।
रुद्रदेह तजि नेह बस, बानर भे हनुमान॥
सो०—जरत सकल सुरवृन्द, विषम गरल जेहि पान किय
तेहि न भजसि मतिमन्द, को कृपालु शंकर सरिस

१ प्रश्न—झगड़ा कहाँ पर होता है कौन करता है।

उत्तर—जहाँ पर मेरा तेरा भाव है सो अज्ञान से होता है तथा च ज्ञान से शक्ति मिलती है।

२ प्रश्न—मोक्ष प्रदायकः का विद्या

उत्तर—गान विद्या, ज्ञान विद्या, मोक्ष विद्या विद्या त्रय में एक का भी सम्यक प्रकार से ज्ञान होने पर वह व्यक्ति मोक्षाधिकारी हो सकता है

३ प्रश्न—तीनों विद्याओं में सर्वप्रथम कौन है

उत्तर—भक्ति तथा ज्ञान पूर्वक जो गान विद्या है वह सर्वश्रेष्ठ है जिसको नारदादि महर्षियों ने गाया है वेद पुराणादि तथा रामायणादि में जो भाषा गायी गयी है। इसके बाद दूसरा दरजा है ज्ञान विद्या का जो सतसंग आदि से प्राप्त होता है। तीसरा दर्जा है मोक्ष विद्या में जो कि हठ योगादि से प्राप्त होता है।

४ प्रश्न—सर्व संसार को जीत के वश में कौन कर सकता है।

उत्तर—जो निष्काम स्वार्थी है जिसने क्रोध का परित्याग कर दिया है तथा वाणी मे सरसता प्राप्त की है व क्षमाशील है।

५ प्रश्न—कहार धोबी और नाऊ का अवतार किसका होता है।

उत्तर—जो साधू चलते शरीर को आलसी बनाकर औरों से बरतन मलवाते हैं सो कहार और साफी कपड़ा दूसरे से धुलाने वाले धोबी और जो दूसरों से पैर आदि दबवाते हैं सो नाई होतें हैं।

६ प्रश्न—मनुष्यों में महा भाग्यान कौन हैं

उत्तर—जिनकी बुद्धि शरीर संग अच्छा है और प्रेम के साथ परमार्थ भक्ति नित्य नियम से जिनसे हुआ करती है सोई महाभाग पुरुष हैं।

कूट

सारङ्ग जा सारङ्ग गह्यो, सारङ्ग के वर तीर।
सारंग ले सारंग पतिहिं, अरप्यो जान अमीर॥

भावार्थ—हिन्दी—सारङ्ग, नाम जल से जो उत्पन्न हुआ जो सारङ्ग (अर्थात् ग्राह यानी मगर) है उसने सारंग यानी हाथी को पकड़ा। सारङ्ग यानी पानी के किनारे तब सारङ्ग नाम हाथी ने सारग नाम कमल हुआ क्योंकि कमल की उत्पति भी जल से है अर्थात् हाथी ने उस कमल को अपनी सुण्ड में लिया। और सारङ्ग पति जो भगवान विष्णु हैं क्योंकि शार्ङ्ग नाम धनुष का भी है अर्थात् उनके पति माने धारण करने वाले जो भगवान विष्णु हैं उनके अर्पित किया इस प्रकार इस कूट की गति हुई।

गोपिकाएँ कृष्ण के विरह में आतुर होकर अपनी प्यारी सखियों से निवेदन करती हैं। वह यह है कि—

निशा नाथ निर्मल कला कीन्हों आज प्रकाश।
बिन ब्रजपति रति पति दहे, कासंग करो विलास ॥२

हे रात्रि के स्वामी चन्द्रदेव जी आपने अपनी निर्मल (अर्थात् स्वच्छ) किरणों से आकाश मण्डल को प्रकाशित किया है। इसलिये हे सखियों यह जो प्रकाश है वह मुझको दुःख दे रहा है कारण ब्रज-पति ब्रज नायक भगवान वासुदेव जी के न होने पर यह जो कामदेव है सो मुझे जलाता है झुलसित करता है अतः हे ब्रज बालाओं बताओ, मैं किसके साथ रास विलास का सुख उठाऊँ!

उद्धव जी भगवान श्री कृष्ण जी से कहते हैं कि आप का मङ्गल हो परन्तु उससे किस युक्ति से कवि ने कहा है।

दोहा—सिन्धुसुता हो सौगुनी, सह सगुने गजराजि।
हर वाहन वाहन सुवन, सो हमेश हो राज ॥३

हे महाराज सिन्धु जो सागर है उसकी पुत्री जो लक्ष्मी जी हैं वह सौगुनी हों अर्थात् लक्ष्मी जी का अपार वास आपके यहाँ हो तथा गज नाम हाथी तथा बाज जो घोड़े हैं वह भी सहस गुण हों अर्थात् हजार गुना और बढ़े। और हे भगवन हर जो भगवान शंकर हैं उनका जो वाहन (सवारी) नन्दी गण है तथा नन्दी का वाहन जो पृथ्वी है उसका पुत्र जो मंगल है वह आपके यहाँ पर सदा ही वास करे।

एक सखी अपनी एक अभिमानिनी नायिका से कहती है कि ऐ सखी,

दोहा — मेष अग्र आदित्य द्वौ, तासु सुता गहु ज्ञान।
जात रूप दाहन दयो, कहा रही करि मान ॥४

मेष लग्न अर्थात मेष राशि के आगे फिर वृष राशि आती है इसके बाद आदित्य नाम भानु है इन दोनों को एक में एकत्रित करने पर वृषभानु यह नाम सम्पन्न होता है तथा उनकी पुत्री जो राधिका जी है वही ठहरी ज्ञान सो ऐ सखी उनको तू पकड़ और अभिमान न कर देख जात रूप जो सुवर्ण है (अर्थात् सोना है) उसपर यदि सुहागा लगा दिया जाता है तो वह कितना सुन्दर हो जाता है अतः री सखी भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी जो अखिल लोक के पालक हैं उन्होंने तुझे सौभाग्य दिया है इसलिये तू उस पर अभिमान कर रही है।

कवि अपने कूट रूप दोहे से श्री गणेश जी के प्रति स्तवन करता है कि —

दोहा — व्योम केश की सुन्दरी, ता सुत सुमिरै कोय।
नाम लेत संकर करैं, सुफल काज सब होय ॥५॥

व्योम केशी जय वृषध्वज' यानी व्योम केश जी जो भगवान गरल कण्ठ शिवजी हैं उनकी परम पवित्र प्रियतम जो अति सुन्दरी पार्वती है उन परमादर्श सती पार्वती जी के पुत्र गणेश जी का सुमिरन अर्थात् उच्चारण या हृदय से स्तवन करे तो नाम मात्र के उच्चारण से

अमिट जो विघ्न है उनका भी विनाश हो जाता है और सम्भव अर्थात् न होने वाले कार्य भी अवश्य होते हैं अतः शिष्ट लोगों ने यही आदेश दिया है कि कार्य की यदि निर्विघ्न समाप्ति चाहते हो तो मंगलाचरण करो !

श्रतिः—समाप्ति कामः पुरुषो मङ्गलमाचरेत्—

कवि की आलोचना है कि मणि-मुक्ताओं से युक्त जो आभूषण है उनसे मनुष्यों की शोभा अवश्य होती है किन्तु उनके न होने पर भी शोभा होती है। इसी उद्देश्य को लेकर कवि समालोचना रूपसे कूट में परिणित करता है।

दो०—मणि माणिक भूषण त्रिविध सोह सुसहित हिसाब,
वनसुत तनया पुत्र सुत, ताविन नरवे आब ॥६॥

मणि तथा माणिक के अनेक प्रकार के बने हुए भूषण (अलङ्कार अर्थात् गहने आदि अपने २ अनुकूल शोभित होते हैं। किन्तु वन सुत जो कपास है उसकी तनया (कन्या) जो रूई है उसका पुत्र जो वस्त्र है उसके विना मनुष्य विना रूप का रहता है अर्थात् कवि का सारांश यह है कि अनेक प्रकार की मालायें आभूषण आदि विना वस्त्रके अशोभित हैं।

एक भक्त अपने शिष्यमण्डली को उपदेश करता है कि

जो चाहो भवनिधि तरो, करुजिन और उपाय।
जरासन्ध की कन्यका, तासु नाथ रिपु ध्याय ॥७॥

यदि आप लोग इस असार संसार रूपी सागर से तरना चाहते हो तो और दूसरा कोई उपाय न करो केवल एक उपाय करो वह यह है कि जरासन्ध की जो कन्या है उसका जो पति पापात्मा कंस है उसका जो शत्रु है अर्थात् अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक जो भगवान् श्री कृष्ण चन्द्रजी हैं उनका हृदय से ध्यान करो।

इस अपार कलि में तरने के लिये भक्त जो अपने अनुयायिओं से कहता है कि—ऐ प्यारे भक्त वर्गों।

दो०—गुडाकेश वर अनुज को, मन में तात विचार।
तो तेरे तन को सुनर कलि में होय उधार ॥८॥

आपलोग - गुड़ाक् कहते हैं निद्राको उसके जीतने वाला अर्थात् उसका जो स्वामी अर्जुन है उस अर्जुन का जो अत्यधिक श्रेष्ठ भाई युधिष्ठिर उन युधिष्ठिर महाराज के जो पिता हैं धर्मराज जी उनका हृदय में ध्यान करो तो हे सुनर-अर्थात् हे श्रेष्ठ पुरुषो! आप लागों का इस कलि से उधार हो सकता है। तात्पर्य कवि का यह है कि इस समय घोर पाप राशि बढ़ रही है सभी व्यक्ति अपनी मानमर्यादा का उल्लंघन करते हैं अतः इससे तो कलिकी और वृद्धि होती है इसलिये हे धर्माचार्यो! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आपलोग इन धर्म भगवान् का ही हृदय से स्तवन करें यदि इस कलिसे पार होना चाहते हैं।

भक्त पुनः अपने भक्तों से कहता है –

दो० - नागवेल रिपु की सुता ताके पति को हार।
ता अहार सुतपति भजो, वृथा सकल जंजाल ॥९॥

नागवेल का शत्रु है हिम (तुषार या वर्फ) उसकी कन्या है श्रीमती पार्वती जी, उनके पति है भगवान् शंकर उनका हार अर्थात् गजरा (या माला) है सर्प उसका अहार अर्थात् सर्पका भोजन है वायु उस वायु के पुत्र जो अमितबलराशि हनुमान जी हैं उनके जो पति भगवान् दशरथ नन्दन श्री रामजी उनका भजन करो और तो संसार सब व्यर्थ का जाल है अर्थात् चक्कर है।

पुनः भक्त दूसरे भक्त से कहता है—

दो० – वृजवासिन को ईश जो, धरे शीश सिख पच्छ,।
हस सुता तट सखन संग, विमल चरावत वच्छ ॥१०॥

व्रजवासी जो ग्वाले हैं उनके स्वामी जो भगवान् श्रीकृष्ण जी हैं वह कैसे हैं कि अपने मस्तक पर सिखि कहते हैं मोर को उसका पच्छ धारण किये हैं तथा हंस जो भगवान भुवन भास्कर हैं उनकी सुता

जो श्री जमुनाजी हैं उनके किनारे अपने प्यारे सखाओं के साथ अपने निर्मल (अर्थात् श्वेत) जो बछड़े हैं उनको चराते हैं ऐसे भगवान वृजविहारी का भजन करो ताकि पापराशि नष्ट हो।

पुनः भक्त अपने प्यारे भक्त से कहता है—

दो०—वन तनया प्रीतम पिता, तासु तपति अरिनाम।
ता सुत पुत्री पति पिता, ता पितु भजत तमाम ॥१॥

वन नाम जल का है उसकी तनया अर्थात् पुत्री हुई कुमुदिनी उसके प्रीतम हुये चन्द्रदेव उनके पिता हुये समुद्र अर्थात् सागर उसका पुत्र उच्चैःश्रवा नाम घोड़ा उसके स्वामीं हुये सूर्य उनके अरि हुये शीत अर्थात् हिम तथा उसका पुत्र हिमाचल उसकी पुत्री जो पार्वतीजी हैं उनके पति ईश्वर भगवान् शंकर जी उनके पिता जो ब्रह्मा जी हैं, तथा उनके भी पिता जो परब्रह्म परमेश्वर निर्गुण निराकार हैं, उनका परब्रह्म परमेश्वर विश्वम्भर का सभी भजन करते हैं अर्थात् उन्हीं का भजन करो?

भक्त भक्त से प्रार्थना करता है कि राम का भजन करो—

छै कर छै पद छै श्रवण, तीन जीभ दो नैन।
ताके अरि के सुवन को, भजन करो दिन रैन॥

भक्त कहता है कि श्रवण के माता पिता अन्धे थे और श्रवण उनको काँवर (एक प्रकार का वहिंगा) में बैठा कर तीर्थ यात्रा कराया करता था उसी समय उनके पिता को प्यास लगी तो वह नदी में जल लेने गये उधर से दशरथजी शिकार को गये थे उन्होंने घड़े की आवाज सुनकर शब्दवेधी वाण फेंक दिया जो श्रवण की छाती में लगा था। उन्हीं दशरथ जी के पुत्र जो रामजी हैं उनको भजन करने के लिये भक्त कहता है कि छैकर अर्थात् ६ अर्थ और ६ पद माने छ पैर तथा ६ कान और तीन जीभ तथा दो नयन (आखें) अर्थात् श्रवण के ही नेत्र थे इनके माता पिता तो अन्धे थे—

इस प्रकार से श्रवण के जो शत्रु हैं दशरथजी उनके सुत जो परब्रह्म हैं रामजी जिन्होंने लीला से शरीर धारण किया है और भक्तों

को सुख पहुँचाया है उन्हीं भक्त भयहारी भगवान् का दिन रात भजन करो।

एक मित्र अपने मित्र से नमस्कार को संबोधित करके कहता है कि—

हिरनाकुश सुत मदनत्रिय ब्रह्म पुत्र अरु रुद्र।
आदि २ अक्षर गिनो तुम हो शील समुद्र॥

हिरण्यकशिपु के पुत्र हैं प्रह्लाद तथा मदन (कामदेव) इनकी स्त्री है रति और ब्रह्माजी के पुत्र नारदजी तथा रुद्र श्री महादेवजी इनके आदि २ के अक्षरों को संघटित करने से पर नाम शब्द बनता है जिसका कि भाव है नमस्कार अर्थात् हे मित्र तुम शील सदाचार के समुद्र (सागर) हो तुमको मेरा नमस्कार है।

विधि सुत सुत तनया निकट, सोहैं श्रीनंद लाल।
जल जातक अरि सुवन सुन, उठधाई ब्रज बाल॥

कि ऐ सखी, विधि कहे जो ब्रह्माजी हैं उनके पुत्र हैं कश्यप जी तथा उनके पुत्र है सूर्य जी उनकी पुत्री हैं श्री यमुना जी उन जमुना जी के समीप श्री आनन्द कन्द श्री नन्दलाल जी शोभित हो रहें हैं। उसी समय जब श्री कृष्णजी ने जल जातक जो मछली है उसका जो अरि अर्थात् शत्रु वंशी उस वंशी का सुवन कहे पुत्र जो बजाने से प्राप्त है शब्द वह शब्द वंशी के बजाने ब्रज वाला जो गोपियाँ थीं वे विकल होकर दौड़ीं!

एक भक्त अपने प्रिय भक्त से कहता है—

विधि सुत धरनी तासु सुत, ता पति हिये विचार।
कलि कल मखनासे सकल, भव सागर हो पार॥

कि ऐ प्रिय विधि नाम ब्रह्मा उनके पुत्र कश्यप जी उनकी धरनी नाम स्त्री हुई दिति जी उनके पुत्र हुये देवता उन देवताओं के पति श्री अखण्ड कोटि ब्रह्माण्ड नामक श्रीभगवान् जी उनको हृदय में धारण करने से कलियुग के जो कलमष नाम पाप हैं वे पाप नाशता

को प्राप्त कराके भव रुपी संसार को पार कराते हैं अर्थात् तात्पर्य यह है कि श्री अनन्त व्यापी भगवान् अद्वैत श्री कृष्णचन्द्र जी मूर्ति का ध्यान करके इस कलियुक के पापों से मुक्त होकर संसार सागर से पार हो जाता है। श्री व्रजविहारी ने गोपियों से कहा था कि मैं शीघ्र ही आऊँगा उसी का आश्रय लेकर कवि कहता है।

उग्रसेन तनया सुवन जब ते कहि गये बैन।
सारंग रिपुभक्षण अली, लगत नहीं दिन रैन ॥

कि उग्रसेन जो राजा थे मथुरा के उनकी तनया जो देवकी उनके पुत्र वही अखण्ड लोक-पालक गोपियों के नयनाभिराम श्री कृष्णजी जब से कह गये कि हम मथुरा से शीघ्र ही आवेंगे तब से आज तक मेरे दिन पल पल के समान व्यतीत होते हैं कैसे सारंग नाम है हाथी का उसका रिपु है सिंह उस सिंह का भक्ष्य भोजन हैं मांस उसी मांस को ऋषि प्रिय भाषा जो संस्कृत है उसमें उसे पल कहा गया इस प्रकार कवि ने उक्ति को संगत करके आपके सामने उपस्थित किया है।

द्रुपदसुता पति तासु पति, को पावे तुवपार।
हिरना कुश सुत असुरतें, कीन्हों वरसिरदार ॥

भक्त भगवान् से कहता है—

कि द्रुपद की सुता (कन्या) जो द्रौपदी हैं उसके पति पाण्डव तथा उन पञ्च पाण्डवों के पति (अर्थात्) रक्षक भगवान् श्री कृष्णजी सो हे भगवान् आपका पार अर्थात् आपकी माया को कौन जान सकता है। आपने हिरण्यकशिपु के पुत्र श्री प्रह्लाद जी को जो असुर योनि में थे उनको सरदार बना दिया वर देकर। अर्थात् आपकी महिमा अपार है आप जब चाहें जिसको कुछ का कुछ बना दें।

भक्त अपने प्रिय पात्र भक्त से कहता है—

दुरदारन पितु तासु पितु, तापति सुमरे कोय।
पव नाशन पति जो धरें, ता सतु निसदिन होय ॥

कि दुर जो पाप हैं उनके दारन माने विनाश करने वाले श्री गणेश जी उनके पिता जी (श्री भोला वावा) उनके भी पिता श्री ब्रह्मा जी उनके पति हुये श्री नारायण भगवान् शेष शायी विष्णु जी को सुमिरण करें अर्थात् ध्यान करे तो पव नाशन जो सर्प हैं उसके पति जो शेष जी जिसको धारण किये हैं अर्थात् पृथ्वी को जो अमित सुख दात्री है उसका पुत्र जो मंगल है वह निश दिन ही हुआ करे।

पुनः भक्त भक्त से उपदेश करता है—

कलि कल्मष दाह न तने, ता वधत्रिय भाय।
सो प्रभु अपने जनम पै, निसदिन रहे सहाय ॥

कि कलि जो कलियुग है उसका कलमष जो पाप है उस पाप के दाहक जो भगवान धर्म है उनके तनय जो युधिष्ठिर उनके वन्धु जो श्री गाण्डीवधारी अर्जुन उनकी स्त्री जो सुभद्रा देवी है उनके भ्राता श्री कृष्णचन्द्र जी सो वे प्रभु अपने जनों पर (अर्थात्) भक्तों पर निसिवासर सहायक रहें।

कहते हैं करते नहीं सो तो वड़े लवार।
आखिर धक्का खायेंगे साहिव के दरवार ॥
विषयन में काहे रम्यो निमिष न होई उदास।
कहि शंकर हरि भज मना परै न जमकी फास ॥
सबै सहायक सबल के कोऊ न निवल सहाय।
पवन जगावत आगि को दीपहिं देत बुझाय ॥
रोस मिटै कैसे कहत रिस उपजाव न बात।
ईधन डारैं आग में कैसे आग बुझात ॥
दुष्ट न छांडै दुष्टता कैसे हू सुख देत।
धोये हूँ सौ वेर के काजल श्वेत न होत ॥
स्वासा संयम कीजिये दृष्टि धारना धारि।
तत्व भेद तवही मिले विन्दु साधेकछु नाहि ॥
आसन पद्म लगाइ कै एक वर्ष लगसाधि।
वैठे सोवत डोलते स्वासा हिर दे राधि ॥

आप करै उपकार अति पति उपकार न चाह।
हियरो कोमल सन्त सम सुह्रद सोई नरनाह॥
लोभ सरिस औगुन नहीं तप नहिं सत्य समान।
तीरथ नहिं मन शुद्धिसम विद्यासम धनवान॥
दुख सुख अति विग्रह विपति यामे तजै न संग।
गिरधार दास बखानिये मिल सोई वड़ ढंग॥
भला चहौ तो चेत लो, आइ लगी है नाव।
पुनि पाछे पछिताओगे, बहुरिन ऐसा दाव॥
शव्द सम्भारे बोलिये शव्द के हाथन पाव।
एक शव्द करै औषधी, एक शव्द करै घाव॥
पूरा साहेव सेइये पूरा होइके आप।
पूरा के पूरा मिलै पूरा पूर लखाय॥
क्षमा शील जव ऊपजै अलख दृष्टि तव होइ।
विना शील पहुँचै नहीं, कोटि कथै जो कोइ॥
जो पूरे एक वरस भरि मौन धार नित खात।
युग कोटिन के सहस तक स्वर्ग मोहि पुजिजात॥
द्वारपाल सेवक पथिक समय छुधारत पाय।
भण्डारी विद्यारथी सोवत सात जगाय॥
भूपति मृगपति मूढमति त्यौं शूकर औ वाल।
सोवत सात न जगाइये नहिपर कूकर व्याल॥
मन मलीन खल तीर्थ में यदि सौ वार नहाहि
होय शुद्ध नहिं जिमि सुरा वासन दीनहु दाहि

———

लोभ सरिस अवगुन नहीं, तपनहिं सत्य समान
तीर्थ नहीं मन शुद्धि सम, विद्यासम धन आन
आहार निद्रा भयमैथुनश्च, सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीनाः पशुभिस्समानाः
यह कलि काल मलायतन, मनकरि देखुविचार
श्री रघुनायक नाम तजि, नहिं कछु आन अधार

भगवान का तीर्थ महात्म वर्णन

सुनहु तीर्थ महिमा कहत रामचन्द्र भगवान
पवन तनय या अवध सम तीर्थन कोऊ आन

यद्यपि बहु वैकुण्ठ वखाना, वेदपुराण विदित जनजाना
अवधसरिस मोंहि प्रिय नहि सोऊ,-यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ
यह शरीर महँ अवध बनाऊ, मिटै द्वैत अद्वैत लखाऊँ
अवध ऊहै यह मानुष देहीं, सुरनर मुनि सब वाचत जेही
चौरासी को अवधि बताई, कहा राम मानुष प्रिय गाई

दोहा

चौरासी लख भोगिके, होत मनुष अवतार
कर्म स्वरूपी देह में तुलसी कहे विचार
थो सम दीनन दीन हित तुम समान रघुवीर
अस विचारि रघुवंशमनि हरहु विसम्भवपीर

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रियजिमि दाम
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम
अर्थ न धर्म न काम रूचि गतिन चहहु निर्वान
जन्म २ रति राम पद यह वरदान न आन॥

राम नगरिया राम की बसै गंग के तीर
अटल राज रघुराज कर चौकी हनुमतवीर
वारि वरोवर वारि है तापर वहत बयारि
रघुवर पार लगाइये अपनी ओर निहारि
कहा कहौं छबि आपकी भले बने हो नाथ
तुलसी मस्तक जब नवै धनुष वान लो हाथ
कित मुरली कित चन्द्रिका कित गोपिन के साथ
अपने जन के कारण कृष्ण भये रघुनाथ
अस प्रभुदीन वन्धुहरि कारणरहित दयाल
तुलसिदास सठ ताहि भजु छाँड़ि कपट जञ्जाल

पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं, भूतलपरे लकुटकी नाई
एक घरी आधी घरी ताही में पुनि आध
तुलसी संगत साधु की हरत कोटि अपराध

प्रात समय गे बावन बलि ग्रह !

हाथे दण्ड कमण्डलु सोहै माथे तिलक (रमावन)।
धरि बटु रूप मुदित मंगल छवि जय २ शब्द सुनावन
द्वार पाल भूपति के बैठे उठि कै माथ नवावन
कहो बिप्र आगमन कहाँ से जैहो कौने गावन
दानी भूप सुना हम बलि कहँ आयो हौं कछु मागन
यह समुझाय कहेव राजा से तनिक विलम्ब न लावन
द्वारपाल भूपति ढिग गवने बोले वचन सुहावन
तीनलोक की शोभा लैके आयो द्विज दर्शावन
करत दण्डवत भूपति दौड़े जाको स्तुति अस गावन
राजा कह्यो सुनहु उत्तम द्विज माँगहु जो मन भावन
स्वर्ग वास हम कहँ नहि चाहिय ना गजबाजि सुहावन
साढ़े तीन पैग वसुधा दियो नापि हमारे पावन
लै झोरी से कुश गंगाजल द्विज संकल्प बढ़ावन
जब संकल्प दियो राजा ने रूप बिराट बढ़ावन
तीन लोक तीन पग नाप्यो आधे में भरमावन
तुलसिदास अजहु भगवानहिं लाग्यो पीठ बढ़ावन

दोहा:—

भगवान का नाम जब हृदय में धारण किया जाता है उस समय समस्त पातकों का विनाश होता है।

जबही नाम हृदय धर्यो भयो पाप को नाश।
जैसे चिनगी आग की परी पुराने घास ॥

वामन.

वामन रूप धरो सुर काज गये बलि याचन आप मुरारी।
मांगत दीन है दान कछू वसुधा नृप दीजिय धर्म बिचारी

देन लगे नृप दान जबै गुरु देवन देत भयो दुख भारी
ले कुश शुक्र की आँख तहाँ सब ठाढ़े रहे उन फोरिहि डारी
मांग लेहू राज तिहूँपुर का अस माँग लेऊ बैकुण्ठ निशानी
चाहौ तो इन्द्र को लेउ सिंहासन, और लेउ सिगरी रजधानी
चाहौ तो मोक्ष पदारथ लेउ तब सत्य रहे की यदा महिमानी
बारम्बार कहें प्रभु वामन माँगती हो सो माँगले रानी,

रानी का वचन

हाड़िल भूमि को त्याग दियो, और फेरि न पैर धरे भुई माहीं
चकई ने तो रैन को त्याग दियो अरु हेरत कंथ को कोशल की नाईं
ऐसे जा दानी हते प्रभु वामन तो काहे को द्वार पर ओढ़ो तिवाही
लौट के गंग पछाँह वहैं ऐसे माँगनहार पै माँगत नाहीं

रुक्मिणी का प्रश्न

हे नाथ क्या करने लगे मैं हूँ विकल अति शोक में।
हे कृपानिधि मैं रहूँगी जाय के किस लोक में॥
भूप किन्हों रङ्क ते तुम रंक होना चाहते।
हे नाथ अपने हाथ से सम्पत्ति खोना चाहते
विप्र के छल में न आवो मान जाओ बात को
देखि लीजै चिह्न उर में विप्रभृगु की लात दो

श्री कृष्ण का जबाब

भामिनि क्यों बिसरी अबही,
निज व्याह मय द्विजकी हित आई।
सोच लियो द्विज की करणी,
जिसके करसे पतिया पहुँचाई॥
विप्र सहाय भयो तेहि अवसर,
को द्विज को समुहै समुदाई।
योग्य नहीं अर्द्धाङ्गिनि है,
तुमको द्विज हेतु हती निठुराई॥

दुर्जन दुशाशन दुकूल गह्यो,
दीनबन्धु दीन है, के द्रोपदी दुलारी यों पुकारी है
अपनो सबल छाड़ि ठाढ़े पति,
पारथ से भीम महा भीम ग्रीव नीचे कर डारी है।
अम्बर लौ अम्बर पहाड़ कीन्हों शेष,
कवि भीषम कर्ण द्रोण सभी यों विचारी है
सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है,
कि सारी है किनारी है कि नारि है किसारी है।
तारिहौ जो शम्भु न अम्ब की अदालत में,
नेह को वकील का नालिश लिखायेंगे।
वादा सदा तारि वे को कीन्हों त्रिपुरारी आप,
अब इन्कार यही दावा लिखायेंगे॥
दावा के जवाब में कहोगे पातकी है यह,
और पापियों की नजीर दिखलायेंगे।
एतेहूँ पर न जो तारिहौ दिगम्बर नाथ,
कोष करुणा का सब कुड़क करायेंगे॥

———

मेरे मन मन्दिर में आइये महेश ईश,
स्वागत में पलकों के पाँवड़े बिछाऊँगा।
प्रेम बूटी घोट घोट सत्य की शिलायें,
खूब शान्त शुद्ध रगणों की तगड़ी बनाऊँगा॥
विष का विनाशक विश्वास का धतूरा डारि,
सत्य सुधा दुग्ध मिला दूधिया बनाऊँगा।
शक्ति जो लड़ेगी मनाऊँगा उसे भी,
हरि भक्ति की माँग भव्य भाव से पिलाऊँगा॥

———

प्रार्थना

सेवक चूक परै बहुधा, प्रभु ताहि न क्रोध विरोध विचारो।
पत कपत कौ कितनौ, पितमात नहीं दुख आप बिसारो॥

पालन पोषण नित्य करै मुद मोद समेत हमेश दुलारो।
बूड़त पाप समुद्र पवांर दया करि कै अब वेगि उबारो॥

चौपाई

निर्मल मन जन सों मोहि भावा, मोंहि कपट छल छिद्र न भावा।
सन्मुख होय जीव मम जबंही, जन्म कोटि अध नाशों तबहीं॥

———

मन पत्ती जब लग उड़ै विषय वासना माँहि।
प्रेम बाज की झपट में जब लगि आवे नाँहि॥
ईश्वर नारायण हरि राम कृष्ण घन श्याम।
शिव गणेश जी के सकल, माया मित्थनाम॥

———

प्रारब्ध ने उतो दियो जब लग रहे शरीर।
तुलसी चिन्ता मत करो भज लो श्री रघुवीर॥

———

पोथी तो थोथी भई तिलक हुआ तलवार।
बिना भजन भगवान् के चारो वर्ण चमार॥
सन्त सन्त सब यों करे ज्यों पुस्ता का खेल।
कोई कुदरती लाल है कोई श्वेत का श्वेत॥

———

वैद्य रोगी ज्वान जोगी सूर के पीठ पर घाव।
कीमियाँ करि भीष मागें इन चारों को जनिपति भाव॥
कच्चे बहुत सुहावने गदरे बहुत हिताय।
तुलसी वे फल कौन हैं जो पाकेते करू आय॥
यथा लाभ सन्तोष सुख, रघुवर चरन सनेह।
तुलसी जो मन रम सकै, कानन बसै कि गेह॥
कृष्ण मन्त्र विहीनस्य, पापिष्ठस्य दुरात्मनः।
स्वान विष्ठा समं चान्नं जलं च मदिरा समम्॥

तीन रत्न सबसे बड़े सब रत्न की खान।
तीन लोक की सम्पदा वशी शील में आन॥
गोधन गजधन वाजि धन सबै रत्न धनखान।
जब आवें सन्तोष धन सब धन धूरि समान॥
जहाँ आपा तहँ आपदा जहाँ शोक तहँ पाप।
जहाँ दया तहँ दृढ़ता जहाँ क्षमा तहँ आप॥
मन सब पर असवार है मन का पेड़ अनेक।
जो मन पर असवार है सो कोई विरला एक॥
मैं अपराधी जन्म का नख शिख भरा विकार।
तुम दाता दुःख भञ्जन मेरा करो उवार॥
चोरी करै निहाय की करै सुई का दान।
ऊँचे चढ़िके देखि हैं केतक दूर विमान॥
नीचे नीचे सब तरे जे ते बहुत अधीन।
चढ़े बहुत अभिमान ते बूड़े बहुत कुलीन॥

॥ गुरु जी की महिमा ॥

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण लीजिये॥
खा रहा हूँ गोते मैं भवसिन्धु के मंझदार में।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में॥
मुझमें न जप तप है न साधन और नहीं कछु ज्ञान है,
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है।
पाप बोझो से लदी नैय्या भँवर में आ रही।
नाथ दौड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही।
आप भी यदि छोड़ दोगे फिर कहाँ जाऊंगा मैं।
जन्म दुःख से नाव कैसे पार कर पाऊंगा मैं।
सब जगह मञ्जुल भटक कर मैं ली शरण है आपकी
पार करना या कराना दोनों में मरजी आपकी

प्रसग

एक उत्तम श्रेष्ठी (वनिया किसी ग्राम में रहता था, वह दीन दुःखी ब्राह्मणों को दान दिया करता था। प्रायः उसके चारो दरवाजों में अनेक दुःखी ब्राह्मण आते थे और वह सभी को दान बराबर देता रहता था प्रसंगतः भगवान उसकी परीक्षा लेने के लिये साधु का वेष बनाकर अपने शिष्यों को लेकर आये और शिष्यों से कहा कि तुम ले ले कर नाली आदि में फेकते जाना उन लोगों ने भी वैसा ही किया किन्तु उदार वनियाँ नीचे को आँखे किये हुये बराबर देता गया उसी समय साधु-वेषधारी भगवान ने श्रेष्ठी (वनिये) से पूछा कि—

१—सीखे हो तुम कौन से ऐसी उत्तम देन।
हाथ उठाये देत हौ करके नीची नैन॥

सेठ ने कहा— २—देने वाला और है देत रहे दिन रैन।
लोग नाम मेरा धरैं ताते नीचे नैन॥

३—मेरा मुझमे कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते क्या लगेगा मोर।

१—रहिमन पर उपकार में करतन पारी बीच।
मांस दियो शिव भूप ने दीन्हों हाड़ दधीच॥

२—रहिमन यह तन सूप है, लीजै जगत पछोर।
हलुकन को उड़ जानदे, भारीराखु वटोर॥

३—रहिमन लहिला कीभली, जो पर सै मन लाय।
पर सत मन मैल करै, वह मैदा जरि जाय॥

॥ न्याय ॥

न्यायपरापण जो कोई होगा होगी कभी न उसकी घर।
कपटीकुटिल कोटि रिपु उसके, हो जावेंगे छण में क्षार॥
पाण्डव पाँच रहे कौरव सौ राम एक थे निश्चर लक्ष।
विजयी वे ही हुयें देख लो न्याय युक्त था जिनका पक्ष॥
मुझे उपासना शिव की भली प्रतीत होती है।
लगे जो ध्यान में शिव के उसी की जीत होती है

कोई भोले कोई शम्भू कोई त्रिपुरारि कहते हैं
कोई कहता है शिवशंकर कोई असुरारि कहते हैं
हमारे अंग की नस २ काय हर २ तार कहता है
जवाँ से नाम रट शंकर का वारम्बार कहता है
परवत पर आज शंकर धूनी रमा रहे हैं
अपनी लटों से गंगा शीतल बहा रहे हैं
मगन हो अपने मनमें जो सदा शिव को मनाते हैं
वह ही फिर भोले बाबा के दरश नित प्रेम पाते हैं।
जगत में वर्षा अमृत की तभी होती है ऐ अमृत।
हो नन्दी गणपै असवारी शिव डमरू बजाते हैं
जो शिव चौदस को व्रत रक्खे औगंगा असनान करैं
फिर पार उसी को भवसागर से शिवशंकर भगवान करैं
किया है जिस घड़ी मैंने, इक पैमाना शंकर का
उसी दिन से बना फिरता हूँ मैं दीवाना शंकर का
हरि पैरी हरि में रची गंगा सेवन की धार
ब्रह्म कुण्ड ब्रह्मा रचो चंडी को पिछवार
कनखल पुरी अनूप है सब देवन को थान
चण्डी वो परवत वसे तर गंगा हहराय।

दोहा— तुलसी या जग में वसत, भाँति २ के लोग
सबसे हिलमिलि चालिये, नदी नाव संयोग
तुलसी या संसार में पाँच रतन हैं सार
संत मिलन अस हरि भजन, दया धर्म उपकार

मङ्गल भवन अमङ्गल हारी।
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी॥
सीता राम चरण रति मोरे।
अनु दिन बढ़य अनुग्रह तोरे।
तुलसी पच्छिन के पिये घटै न सरिता नीर
धर्म किये धन ना घटै जो सहाय रघुबीर

परशुराम

जै शारङ्ग धर जै असुरारी,
जै मनमोहन कुञ्ज विहारी।
मच्छ कच्छ वाराह महीरधर,
जल सायक मंगल करना॥
एते नाम जपो निशि वासर,
जन्म २ के दुख हरना।

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाड़िये जब लग घट में प्रान।

जब तालक जिन्दगी आजाद है फुरसत नहीं है कामसे।
कुछ घड़ी ऐसी निकालो प्रेम करलो राम से।
रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम।
प्रात लीजिये पाँच नाम, हरि वलि कर्ण युधिष्ठिर परशुराम।

ध्यान देनें योग्य आवश्यक विषय

शौचविधिः

यज्ञोपवीत कण्ठी कर दाहिने कान पर लपेटे। वस्त्र या आधी धोती से शिर ढके। वस्त्र के अभाव में जनेऊ को सिर पर लेकर बाँये कान के पीछे करे। जलपात्र बायें रख दिन में उत्तर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुखकर मौन होकर मल त्यागे।

मिट्टी से लिंग एक बार, गुदा तीन बार, बायाँ हाथ दशबार, दोनों हाथ सात बार तथा पैर तीन तीन बार मिट्टी और जल से शुद्ध करे।

सामने देवता दक्षिण में पितर और पीठ पीछे ऋषियों का वास रहता है। इसलिये बायीं ओर कुल्ला करे।

मल त्यागने के बाद १२ मूत्र त्यागने के बाद ४ और भोजन के बाद १६ कुल्ला करना चाहिये।

दन्तधावन विधिः

संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्ध के दिन, प्रतिपदा, षष्ठी अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, और रविवार को दन्तधावन नहीं करे। इन निषिद्ध दिनों में मुख साफ कर १२ कुल्ले और अधिक करे।

क्षौर विधिः

एकादशी, अमावस्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति व्यविपात, व्रत, श्राद्ध, रवि, मंगल तथा शनि के दिन क्षौर नहीं करावे।

मुनियों का मत है कि रविवार को क्षौर कराने से १ मंगल को ८ और शनिवार को ७ मास आयु घटती है। बुधवार को ५ समो-वार को ७ गुरुवार को १०, और शुक्रवार को ११ मास आयु बढ़ती है। गृहस्थ को सोम और गुरुवार को भी क्षौर नहीं कराना चाहिये।

तैल विधिः

षष्ठी, एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा तथा रवि, मंगल, गुरु और शुक्रवार को तेल न लगाये। किन्तु सुगन्धित तेल लगाये।

रविवार को तेल लगाने से ताप, मंगल को मृत्यु, गुरुवार को हानि तथा शुक्रवार को दुख होता है। सोमवार को शोभा बुधवार को धन और शनिवार को सुख होता है। यदि निषिद्ध दिनों में तेल लगाना हो तो रविवार को तेल में पुष्प, गुरुवार को पूर्वा, मंगल वार को मिट्टी और शुक्रवार को गोवर छोड़ कर लगाने से दोष नहीं लगता।

स्नान विधिः

कुयें के जल से झरने का, झरने से सरोवर का। सरोवर से नदी का, नदी से तीर्थ का और तीर्थ से गंगा जी का जल पवित्र है।

संक्रान्ति, रविवार, सप्तमी, ग्रहण, सन्तानोत्पत्ति मृतका शौच, श्राद्ध, जन्मतिथि के दिन और अस्पृश्य को छू लिया हो तो गर्म जल से स्नान नहीं करे।

गंगा जी में दातून नहीं करे। स्नान के पश्चात् गंगा जी में भीगी धोती नहीं बदले और न निचोड़े।

धोबी का कपड़ा धोने का पत्थर तथा जितनी दूरी तक उस वस्त्र का छींटा पड़ता है उतना जल अपवित्र है।

(क्षमा प्रार्थना)

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितंमयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यदभवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ सर्वेयो देवेभ्यो नमः

। देवपूजा पद्धति ।

गृहस्थ का नित्यकर्म यथाविधि लिखा जाता है जिसके करने से देव ऋषि और पितृऋण से छुटकारा होता है इसलिये नित्यकर्म अवश्य करे।

स्नान, संध्या, जप, देवताओं का पूजन, वैश्यदेव, और अतिथि सत्कार ये ६ कर्म नित्य करना चाहिये।

प्रातः स्मरण (शय्यापर भी किया जा सकता है)

सूर्योदय से प्रायः १ घंटा पहिले ब्रह्म मुहूर्त होता है।

इसमें निद्रा लेना निषिद्ध है। अतः इससे पहले उठकर हाथ देखे ॥

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥

हाथों के अग्रभाग में लक्ष्मी मध्य में सरस्वती और मूलमें ब्रह्मा हैं। अतः हाथों का दर्शनकरे पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना कर पृथ्वी पर पैर रखे ॥

समुद्र वसने देवि! पर्वतस्तन मण्डले
विष्णु पत्नी ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।

मुख धो नीचे लिखा प्रातः स्मरण और भजनादि करे गणेश जी, लक्ष्मी, सूर्य, तुलसी, गौ तथा वृद्ध जनों को प्रणाम करे।

भोजन

भोजन के पहले भगवद् दर्शन कर तुलसी चरणामृतादि लेना चाहिये। दूसरा वस्त्र लेकर बलिवैश्वदेव करके भोजन पात्र के चारों ओर जल ले ब्राह्मण चौकोण क्षत्रिय त्रिकोण और वैश्य गोल मण्डल बनावे। बायें हाथ से भोजन तथा जलपान नहीं करे।

ॐ भूपतये स्वाहा १। ॐ भुवन पतये स्वाहा २। ॐ भूतानां पतये स्वाहा। पश्चात् नीचे लिखा मन्त्र बोलकर आचमन करे।

"अमृतो पस्तरणमसि स्वाहा।"

नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्र से ग्रास लेकर आचमन करके भोजन करे।

ॐ प्राणाय स्वाहा १। ॐ अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

भोजन के अन्त में "ॐअमृतपिधानमसि स्वाहा" बोलकर आचमन करके उच्छिष्ट अन्न को नीचे लिखे मन्त्र से दक्षिण में फेंक दे।

मद्भुक्तोच्छिष्ट शेषं ये भुञ्जते पितरोऽधमाः।
मेषामन्नं मया दत्तम क्षप्पमुपतिष्ठतु॥
मुख शुद्धि के लिये सोलह कुल्ले करके नीचे लिखे मन्त्र बोले।
अगस्त्यं कुम्भकर्णंच शनिश्च वड़वानलम्।
आहार परीपाकाय संस्मरामि वृकोदरम्।
आतापी भक्षितो येन वातापि च महाबलः
समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु॥

शायन विधिः

रात्रि में शयन समय दिन में किये हुए कर्मों का स्मरण करे। यदि त्रुटि हो गई हो तो उसके निमित्त यथाशक्ति भगवान का नाम लेकर प्रार्थना करे और मन में दृढ़ संकल्प करे जिससे फिर त्रुटि न हो। नीचे लिखे मन्त्र बोल पूर्व या दक्षिण की ओर शिर कर तथा भगवत्स्मरण करता हुआ निद्रा ले।

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः।
अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः।
अगस्ति मधिवश्चैवं मुचुकुन्दो महाबलः।
कपिलो मुनिरास्तकः पञ्चैते सुख शायिनः।
तपणिसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तिकवचनं स्मर॥
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति संहार कारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णो रतुलां तेजसः प्रभुः।
तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती।
तासां स्मरण मात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः ॥कफल्लम् ३॥

तीर्थ सूची

तीर्थ का अर्थ है "तरति पापादिकं यस्मात्" जिससे पापादिकों से छुटकारा हो जाय। तीर्थ तीन प्रकार के हैं। संगम, मानस और स्थावर। ब्राह्मण तथा सज्जनगण ही जंगम तीर्थ हैं।

मुदमंगल मय संत समाजू, जो जग जंगम तीरथ राजू।
राम भगति जहँ सुरसरि धारा, सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा।
विधिनिषेधमय कलिमल हरनी, करम कथा रविनन्दनि बरनी।
हरिहर कथा विराजत वेनी, सुनत सकल मुदमंगल देनी।
वट विश्वास अचल निजधर्मा, तीरथ राज समाज सुकर्मा।
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ, देइ सद्यफल प्रगट प्रभाऊ।

सत्य, क्षमा, इन्द्रिय निग्रह, दया, दान, स्वाध्याय, मन को वश में रखना तथा सन्तोषादि मानस तीर्थ हैं। जितेन्द्रिय तथा शुद्धचित्त होकर स्थावर तीर्थों की यात्रा करने से उपर्युक्त जंगम तथा मानस तीर्थ भी सुलभ हो जाते हैं। यों तो भारतवर्ष में अनेकों तीर्थ हैं परन्तु उनमें विशेष महत्व इनका है।

चारधाम—बद्रीनारायण, द्वारिका, रामेश्वर, जगन्नाथ,

द्वादश ज्योतिर्लिंग—सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ममले-

श्वर, केदारनाथ, भीमशंकर, विश्वनाथ, अम्बकेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर और धुष्मेश्वर।

सप्त प्रयाग :—प्रयागराज, देव प्रयाग, विष्णु प्रयाग, कर्ण प्रयाग, शोण प्रयाग, नन्द प्रयाग, रुद्र प्रयाग।

सप्तक्षेत्र :—कुरुक्षेत्र, हरिहरक्षेत्र, प्रभासक्षेत्र, रेणुकाक्षेत्र, भृगुक्षेत्र, पुरुषोत्तम क्षेत्र।

सप्तपुरी :—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार) काशी, काञ्ची अवन्तिका (उज्जैन) द्वारिका।

सप्तगंगाः—भागीरथी, वृद्धगंगा, कालिन्दी, सरस्वती, कावेरी नर्मदा, वेणी।

सिद्ध पीठ :—लक्ष्मी, तुलजापुरी, हिंगला, ज्वालाजी, शाकम्भरी, विन्ध्यवासिनी, चन्द्रला, कौशिकी, सुन्दरी, मोगेश्वरी, कामाख्या, स्थूला, चण्डमुण्डी, नकुलेश्वरी, त्रिशूला, सूक्ष्मा, स्वायम्भुवी, विश्वेशा, भीमेश्वरी, उत्पलाक्षी, काली, चितापूर्णिनी, महाभागा, चण्डी, कात्यायिनी, दिक्कर वासिनी, पूर्णेश्वरी।

नदी :—गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, तुङ्गभद्रा, ब्रह्मपुत्र, वसुधारा, गण्डकी, यमुना, गोमती, सरयू, ताम्रवर्णी, कृष्णगंगा, गढ़गंगा, गोदावरी, रेवा, ताप्ती, क्षिप्र, चन्द्रभागा, सिन्धु, पयोष्णी, मन्दाकिनी, व्रजा, त्रिजटेश्वरी।

अन्य प्रसिद्ध तीर्थ :—गंगासागर, गुल्टाजी, योगमाया, जीणमाता, जयन्ती, मुम्बादेवी, खैरायवानी, चामुण्डी, वाणेश्वरी, उलपचण्डी, मसानी माता, पशुपति नाथ, अमरकंटक, अमरनाथ, पुष्करराज, कालाहस्ती, नाथद्वार, वृन्दावन, नैमिषारण्य, गया, गिरिनार, नवद्वीप, राजगिरि, लौहार्गल, चित्रकूट, दक्षबालाजी, डाकोरजी, जनकपुर, पन्नारसिंह, ताड़केश्वर भुवनेश्वर, साक्षीगोपाल, धनुष्कोटि, श्रीरंगन्, ऋषिकेश, गढ़मुक्तेश्वर, चिदम्बर, त्रिचन्नापल्ली, गुप्तकाशी, मदुरा-मुंगेर, कन्याकुमारी, वशीष्ठाश्रम, शिवर्गल, परशुराम, सांभर, ठोसी, शृंगरामपुर, शुक्लतीर्थ, वदताल, अरेराज, कुशीनगर, कुशेश्वर, गोरखनाथ, गौतम क्षेत्र, ...श्वर, वाराह अवतार, वैशाली, अश्वक्रान्त,

कान्तानगर, जसरेश्वर, विदुरकुटी, उत्तरखेड़, महामंत्रालया, सज्जनगढ़, अमरावती, किष्किन्धा, गोकर्ण, गौतमेश्वर, धण्डी, इलौरा भडाचन; रामपुर, सुखदेवाश्रम, ततापनी, प्राणनाथ, महाभैरव ॥

पीपलस्तुतिः

अश्वत्थ हुत भुग्वास गोविन्दस्य सदाप्रियं ।
अशेषं हरमे पापं वृक्षराज नमोऽस्तुते ।

तुलसीस्तुतिः

दैवस्त्वां निर्मिता पूर्वं मर्चितासि मुनीश्वरैः ।
नमोनमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये ।

श्रीः

ब्राह्मण अट्ठारह वर्ण का राजा कैसे हो सकता है । चारो वेद पढ़नेवाला, चारो युग जाननेवाला, चारो वरण जानने वाला प्रातः मध्याह्न सायं संध्या गायत्री जपनेवाला तथा तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश को जाननेवाला ॥ ॐ ॥

अष्टग्रासाः मुने भक्ष्या षोडशाडस्तु वनस्थिनाम्
द्वात्रिंशत्तु गृहस्थानां यथेष्टं ब्रह्मचारिणाम्

संन्यासी को केवल आठ ग्रास (कौर) भोजन करना चाहिये तथा वानप्रस्थ (बनवासी) मुनियों को १६ कौर तथा गृहस्थियों को केवल ३२ कौर तथा च ब्रह्मचारियों को यथेच्छापूर्ण भोजन कराना चाहिये ।

चतुर वर्णों के कार्य

१—ब्राह्मण के षट्कर्म—(१) यज्ञ करना । (२) यज्ञ कराना । (३) दानदेना । (४) दान लेना । (५) वेद पढ़ना । (६) वेद पढ़ाना ।

२—क्षत्रिय के चार कर्म (१) यज्ञ कराना । (२) दान देना । (३) वेद पढ़ाना । (४) समर भूमि से पीछे न हटना

३—वैश्य के ३ कर्म (१) खेती करना । (२) व्यवसाय, व्यापारादि करना । (३) गऊ ब्राह्मण आदि की सेवा करना

४—शूद्रके २ कर्म (१) कर्म जातियोग अर्थात् जिस वर्ण में उत्पन्न है उसके अनुकूल कर्म । (२) सेवा अपने से उच्च वर्ण की करना श्रेष्ठ है ।

॥ अथ ॥

ॐ कार शब्द की महत्ता—

ॐकार है वेद का मूला,
जिसके अन्दर सब जग भूला ।

चेतावनी—

१—प्रश्न—लावे तो ऐसा लावे उत्तर जैसे कि भगीरथ गंगा लाये जिससे कि हजारों पातकी तर गये ।

२ प्रश्न दान देय तो ऐसा, उत्तरः—जैसा कि राजा बलि ने दिया कि भगवान को बन्धन में पड़कर निरन्तर दर्शन देना पड़ता है ।

३ प्रश्नः—जाय तो ऐसा जाय उत्तर—जैसा रावण अपने समेत कुटुम्ब को लेकर भगवद्धाम को गया ।

४ प्रश्मः—बैठे तो ऐसा बैठे—उत्तरः—जैसे कि ध्रुव जी बैठे जिनकी तपश्चर्या को देखकर भगवान ने अचल पद दिया तथा समस्त नक्षत्र उनकी परिक्रमा करते हैं संसार उनकी चर्चा का निरन्तर ध्यान करता है ।

लक्ष्मी के सुत चार हैं धर्म अति नृप चोर ।
जेठे के अवमान से, तीन करै भड़ फोर ॥
राज तिया अस गुरु तिया मित्र तिया हूँ जान ।
निज माता औ सास ये पाँचों मातु समान ॥

श्रीः

॥ काम और क्रोध ॥

पार्थ रजोगुण जनित यह, यही क्रोध है ले पहिचान ।
महा अशन अतिशय पापी यह, वैरी यहाँ इसे तू जान ॥

॥ कामना पाप की जड़ है ॥

पार्थ यह काम पाप की खान ।

रागात्मक रज से पैदा हो हर लेता सब ज्ञान।
यही मूल है सब पापों का इसको वैरी जानं ॥
प्रतिहत होकर यही क्रोध बन जाता अति बलवान।
कभी न भरता पेट भोग से इसकी भूख महान॥
आत्म पतन में प्रबल हेतु इन दोनों को पहिचान।

॥ परोपकार की महत्ता ॥

दान से सब प्राणी वश में हो जाते हैं । दान से वैरी नष्ट हो जाते हैं दान से पराये भाई बन्धु बन जाते हैं । दान सारे व्यसनों को मिटा देता है। उपकार न करने वाले मनुष्य से मैं तिनके को श्रेष्ठ मानता हूँ क्योंकि वह घास बन पशुओं की रक्षा करता है और रण-प्रांगण से भागे मनुष्य को छिपाकर बचा लेता है एक बार विष्णु भगवान् ने मुक्ति और परोपकार को तराजू के पलड़े पर रख कर तौला तो परोपकार का ही पलड़ा भारी रहा है।

इसलिये उन्होंने दश अवतार धारण करके परोपकार किया। परोपकार न करने वाले मनुष्य के जीवन का धिक्कार है जीते रहें वे पशु जिनका चमड़ा भी जूता बनकर उपकार करेगा।

॥ कामना ही दुःख का मूल है ॥

पृथ्वी में जितना भी अन्न है जितना भी सुवर्ण है जितना भी पशुधन है और जितनी भी सुन्दर स्त्रियाँ हैं ये सब के सब मिल जाने पर भी उस मनुष्य के मन को सन्तुष्ट नहीं कर सकते जिसका चित्त कामनाओं से घिरा है कभी विषयों के प्राप्त करने और कभी भोगने से कामना शान्त नहीं हो सकती वरं अग्नि में घृत की आहुति देने पर जैसे और भी बढ़ जाती है वैसे ही भोगों को पाकर कामना और भी बढ़ जाती है दुष्ट बुद्धि लोगों के द्वारा जिसका त्याग बहुत कठिन है वहाँ विषयों की तृष्णा ही दुखों का उद्गम स्थान है शरीर वृद्ध हो

जाता है पर तृष्णा कभी भी वृद्ध नहीं होती। वह नित्य नवीन बनी रहती है अतएव जो अपना कल्याण चाहता हो उसे शीघ्र से शीघ्र ही भोगों की कामना और वासना रूपी सब तृष्णाओं का परित्याग करदे।

पुरजे किसी मशीन के हो कहने को साठ।
बिगड़े उनमें से एकतो हों सब बारह बाट॥
हों सब बारह बाट बंद हो चलना कलका।
बड़ा हो या छोटा किसीको कहो न हलका॥
हैं यह देश मशीन लोग सब दर्जे २।
चले मेल के साथ उड़े क्यों पुर्जे २॥
संत मिलन को जाइये, तजि माया अभिमान।
ज्यों २ पग आगे परै, कोटीन जग्य समान॥
छोटे २ नरन से होत न बड़े काम।
मढ़त नगाड़ा न बनै सौ चूहे के काम॥
चक्की सती पीसै नहीं जब पीसे तब राड़।
मांगत साधू ना फिरै जब मांगे तब भाड़॥

चिन्ता जीते को सताती है-चिता-मुरदे को जलाती है।

स्त्रियाः-चरित्रं-पुरुषस्य-भाग्यं-दैवोन जानाति कुतो मनष्य--

तूही इष्ट मेरा तूही देवता है। तू ही बंधुमेरा पिता तू पिता है।
जहालत में हम तुमको देखें न देखै मगर तू हमें हर घड़ी देखता है।
पता पता देरहा है तेरासरासर। गलत है कि तू नापता है।
जवानों जवानी में सब काम करलो। समझते हो जिसको जवानी हवा है।
हरिहर समाये हो हरमालियों में। वही झूलता है झुकी डालियोंमें
पहाड़ और दरियाँ उसीके हैं जल्वे। वही गरजता है घट कालियों में
ताजुब है एक ओर गर्म और ठंडी। तमाशा है दो आग की थालियों में
थे नये किस संग दिल ने जला डाला गुलशन। है महेश्वर
वया बाग के मालियों में। स्वामी की बातें बड़े काम की हैं।
गना कहीं न इन्हें तालियों में॥

गिरजा की बानी

बनूंगी शंकरकी आरधाँगीनि ॥ नहीं तो मैं अनरधाँगिनी बनूँगी ॥ विष्णु समान यदि कोटि हूँ चाहे तो शंकर को तजि नहीं चहूंगी ॥ जो नवरे मोकह वह शंकर तो यहाँ न रह वन माही रहूँगी ॥ वर वरूँगी इन्ही वृसभको नहीं वरूतो नाही वरूगी ॥

विभूति चरणाहू तो शंकर के ॥ अहिलोचन वीच चुयेझरिको ॥ अहिंके फुकार पड़ी शशिपर अमृतबून्द चूयेझरिको ॥

२—नही बाँजू रहा मृग राजत्वचा ॥
अँगड़ाई उठी जो रहा आपीके ॥
सुर भी सुत देखके भाजिचले ।
तब गौरि हँशे मुख अँचलदे ॥

३—वेदबुधिविधिके कमंडल उठावत ही ॥
धाकशुर धुनकीधसीघट घट में ॥
कहे रत्नाकर शश शुर सुशंकसबे ॥
विवस विलोकत लिखे चित्रपट में ॥
दिगपाल दौणान दशोदिशि धारि लागे ॥
हरिलागे हेरन सुपात वरवट में ॥
त्रिशन नदीश लागे खशन गिरीश लागे ॥
ईशलागे कशन फरपीश कटि में ॥
उपजाना नहीं प्रभु या जग में ॥
जगझंझट वीच फसाना नहीं ॥
यदि कर्मके बस हो आते ही बने तो ॥
मानुष जोनि पठाना नहीं ॥
यदि कर्मके वस हो देते ही बने ॥
तो विनतीयेविनीत भुलाना नहीं ॥
करुणा निधि दीन बना नहीं ॥
किसी सूम का द्वार दिखाना नहीं ॥

॥ दादरा ॥

शिल्पकारी का भारत भंडार था कभी।
पढ़ देखो तवारीख पुरानी सभी ॥ शिल्पकारी०—

॥ शैर ॥

इसमें कला कौशल ये सारे मुल्कों से आला।
सब बहसी थे इसमें था विद्या का उजाला॥
मन्तफक फ़िलोसफी गाड़ी इसने ही निकाला।
इसका दिमाग था सर्व देशों से निराला॥
नल नील इंजीनियर्स भारत माता ने जाये।
समुद्र का पुल बांधा राम लंका को चढ़ाये॥
लंका फतहकर जब राम अयोध्या को आये।
पुष्पक विमान बैठने को लंका से लाये॥
छोड़ा बनाया भोजने कल ऐसी लगाई।
सत्ताईसकोश घंटे की रफ्तार बताई॥
आज तुमसे सुई तक बनती है न बनाई।
आती है विदेशों से जलाने के लिये दियासलाई॥
बढ़िया से बढ़िया हिन्द में कपड़ा बनाता था।
ढाके का माल हर एक मुल्कों को जाता था॥
सबसे धनी इसे लार्ड क्लाइव बताता था।
व्यौपार से हर एक आदमी इसका कमाता था॥
देहली में एक दरबार अकबर ने लगाया था।
प्रदर्शिनी में कुछ माल ढाके का आया था॥
एक रत्ती सूत डेढ़ सौ हाथ नपाया था।
चरखे से औरतों ने कातकर दिखाया था॥
ढाई सौ मील लंबा आधा सेर रूई का तार।
ऐसा कमाल करते थे भारत के दस्तकार॥

दस गज़ का थान एक मलमल का किया तैयार।
तौला तो हुआ साढ़े आठ तोले का यार॥
एक बाँस की नली के अन्दर थान रखवाया।
दरबार में अकबर के किसी ने पहुँचाया॥

उसे लंबा चौड़ा जाता है इतना बताया।
जिसमें कि अंबारी के सहित हाथी को छिपाया॥
करशिल्फ कार बैठे हैं दूसरों के सहारे।
किस भांतिहोवेंगे हिन्दुओं के गुजारे॥

हम पूँछते हैं हाल बुज़ुर्गों का तुम्हारे।
क्या वस्त्रों बिना फिरते थे नंगे उघारे॥
पुत्रीने औरंगज़ेब की एक वस्त्र बनवाया।
जब देखा बादशाह ने मुंहनाक चढ़ाया॥

गुस्से में देख शाह को पुत्री ने सुनाया।
पहिले कईतह कर पिताजी पिछे से सिलाया
मैं क्या करूँ इस भाँति से बारीक ही आया।
सब अंग दीखता है नहीं छिपता है छिपाया॥

धनवानों शिल्फकारी में धन अपना लगाओ।
ज़रूरी जरूरी चीजें अपने आप बनाओ॥
हरगिज विदेशी चीज़ों को पहिनो न पहनाओ।
हरदत्तजान भारत माता की बचाओ॥

दश उपदेश

१—संसार को स्वप्नवत् जानो।

२—दूसरा अति साहस रखो।

३—अखण्ड प्रफुल्लित रहो दुख में भी।

४ परमात्मा का स्मरण करो जितना बन सके।

५—किसी को दुख मत दो बने तो सुख दो।

६—सभी पर अति प्रेम रखो।

७—नूतन बालवत् स्वभाव रखो।

८—मर्यादानुसार चलो।

९—अखण्ड पुरुषार्थ करो गंगाप्रवाहवत्, आलसी मत बनो।

१०—जिसमें तुमको नीचा देखना पड़े ऐसा काम मत करो।

इन सबका सार परमात्मा का मानसिक स्मरण करो। पुरुषार्थ करो, परमपुरुषार्थ करो, परोपकार करो, माया से गांठ खोलो।

बोलो श्री गुरुदेव भगवान की जय ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सरला प्रेस, बनारस।